म. म. परमेश्वरझा कृत

सीमन्तिनी-आख्यायिका



सम्पादक

डा. रामदेवझा

म.म.परमेश्वरझा कृत

सीमन्तिनी-आख्यायिका

सम्पादक

डा.रामदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

आभार

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त
राइटर इन रेजिडेन्सी
(2009) कार्यक्रमक अन्तर्गत आभार सहित प्रस्तुत ।

M.M. Permeshwar Jha Krit Simantini Akhyayika. Edited by Dr. Ramdeo Jha

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
9430639249

संस्करण : 2011

मूल्य : 150/- (डेढ़ सय टाका मात्र)

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

प्राक्कथन

कृतिकार

उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरण तथा बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणक संक्रान्तिकालमे मिथिलामे बहुशः संस्कृत विद्वानक आविर्भाव भेल छलनि जनिकर ख्याति मिथिला सहित देशक अन्यहु क्षेत्रमे पसरल छलनि । ओहि अग्रगण्य मिथिला-विभूतिमे प्रमुख स्थान रखनिहार छलाह पण्डित परमेश्वरझा जे वैयाकरणकेसरी, कर्मकाण्डोद्धारक, महामहोपाध्याय इत्यादि विभिन्न सम्मानोपाधिसँ विभूषित छलाह ।

म.म. परमेश्वरझाक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राममे पौष शुक्ल प्रतिपद, शाके 1878, सन 1264 साल; 27 दिसम्बर 1856 इ.मे भेल छलनि तथा मृत्यु साढ़े सड़सठि वर्षक वयसमे आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी सोम, 1331 साल; 30 जून 1924कें भेलनि । वाराणसीमे शिक्षाग्रहण कऽ देशक पश्चिमीय प्रदेश तथा मिथिलहुमे कतोक ठाम अध्यापक एवं राजपण्डितक पद सुशोभित कऽ अन्ततः 1 जुलाइ 1899 इ.कें नवसिंहासनारूढ़ महाराज रमेश्वरसिंहक राजपण्डितक रूपमे नियुक्त भेलाह । एहि पदपर ओ मृत्यु पर्यन्त आसीन रहलाह ।

कविचन्द्रक उत्तराधिकार

राजदरभंगाक आश्रयमे अयलापर प. परमेश्वरझाकें कवीश्वर चन्दाझाक निकट सम्पर्क-सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर भेटलनि । मिथिलाक पुरावृत्तक सम्बन्धमे अनुसन्धान करबाक ओ मिथिला भाषाकें समृद्ध करबाक प्रवृत्ति ओ प्रेरणा हुनका कवीश्वरसँ प्राप्त भेलनि । कवीश्वर चन्दाझाकें सेहो एकटा उपयुक्त उत्तराधिकारी भेटि गेलथिन । प. परमेश्वरझा कवीश्वरसँ पचीस-छब्बिस वर्ष छोट छलाह तथापि कवीश्वरकें हुनका मिथिला-पुरावृत्त विषयक कार्यकें आगाँ बढ़यबाक क्षमतापर विश्वास भऽ गेल छलनि । एकर परिचय कवीश्वर चन्दाझा द्वारा लिखित एकटा दुर्लभ पत्रसँ भेटैत अछि जे अद्यापि अनभिज्ञाते रहल अछि किन्तु सम्प्रति हमरा लगमे रक्षित अछि ।

कवीश्वर चन्दाझा साहेबरामदासक गीतावलीक संकलन कऽ पचाढ़ीक तत्कालीन

महन्थ वंशीदासक अर्थसाहाय्यसँ ओकर मुद्रण करा रहल छलाह । वंशीदासक पूर्वहिसँ आग्रह छलनि जे गीतावलीक भूमिका हिन्दीमे हो । बादमे पुनः हुनक आग्रह जे ओहिमे पचाढ़ी मठक वंश-परिचय सेहो जोड़ल जाय । वंशीदासक एहि दोसर आग्रहक जनतब कवीश्वरकें तखन भेल छलनि जखन ओ कलकता प्रवासमे छलाह । कवीश्वर साहेबरामदासक जीवनी मैथिलीमे लिखलनि तथा ओकर हिन्दी रूपान्तर सेहो कयलनि । ओतहि महन्थ-परम्पराक परिचय सेहो लिखलनि ।

विकल्पक दृष्टिएँ दुनू भूमिका-लेख दरभंगा स्थित अपन एकटा विश्वस्त अनुगत जटेश्वरकें पठौलथिन । लेखक पीठपर जटेश्वरक नामे एकटा पत्र कवीश्वरक लिखल छनि जाहिमे उपर्युक्त भूमिकाक सम्बन्धमे निर्देश अछि । पत्र कलकतासँ 19 फरवरी 1902इ.कें लिखल गेल छल । भूमिकाक हिन्दी रूपकें वैदिकजीकें देखयबा लेल कहल गेल अछि तथा आदि एवं अन्तमे महन्थ वंशीदासक कथनानुसार किछु तथ्य जोड़बाक छलैक । ओहि सम्बन्धमे पत्रक नीचाँ दिस बाम भागमे लिखल गेल अछि- **'श्रीपण्डितजी परमेश्वरझा सों अनुमति लय आद्यन्तमैं लिखि देबैक'** ।

ई कथन पण्डित परमेश्वरझाक प्रति कवीश्वरक विश्वास आ आश्वस्तिक प्रमाण थिक । ई सर्वथा सम्भव अछि जे परमेश्वरझाकें मैथिली भाषाक प्रति उन्मुख होयबाक प्रेरणा कवीश्वरसँ भेटल होइनि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भमे जखन मैथिली भाषा-साहित्यक नवोन्मेषक संग नवयुगक आगम भऽ रहल छल, तखन महत्त्रयीक रूपमे सुप्रतिष्ठित छलाह-काव्यमे कवीश्वर चन्दाझा, नाटकमे कविवर जीवनझा ओ गद्यमे म.म.परमेश्वरझा ।

आधुनिक मैथिली गद्यक निर्माता

चन्दाझा जाहि गद्यक श्रीगणेश कयने छलाह तकरा परमेश्वरझा नव सामर्थ्य ओ विस्तार प्रदान कयलनि । हुनक गद्यक तीन दिशा छलनि-साहित्येतर विषयक मैथिली गद्य, नाटकक गद्य ओ रचनात्मक साहित्यक गद्य । प्रथम कोटिमे कर्मकाण्ड विषयक **कायस्थादिसदाचार पद्धति** आ **सदाचार दर्पण** ग्रन्थ कहल जाइत छनि, परन्तु ओहि सबसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि मिथिलाक पुरावृत्त विषयक ग्रन्थ **मिथिलातत्त्व विमर्श** । दोसर कोटिक गद्य-रचना थिकनि **दुर्गाविजय नाटक** जे हमरहि द्वारा अन्विष्ट ओ 1996 मे सम्पादित-प्रकाशित भऽ चुकल अछि । तेसर कोटिक रचनात्मक गद्यमे अबैत छनि- **सीमन्तिनी-आख्यायिका** ।

सीमन्तिनीक प्रकाशन अवधि

म. म. परमेश्वरझा रचित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक स्थान आधुनिक मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि । ई क्रमिक रूपमे **मिथिलामोद**मे पैघ-पैघ

अन्तरालपर प्रकाशित होइत रहल छल । एकर आरम्भक अल्पांश (मिथिला मोदमे प्रकाशित आरम्भिक तीन किस्त) मात्र **मैथिली गद्य-संग्रह** (तृतीय भाग, प्रथम संस्करण)मे प्रकाशित भऽ सकल छल । अतः बहुचर्चित कृति होइतो एकर सम्यक् आ समीचीन साहित्यिक समालोचन-मूल्यांकन नहि भऽ सकल ।

सुदीर्घकाल धरिक गहन अन्वेषणक पश्चात् विखण्डित, विच्छिन्न, हेरायल-भुतियायल **मिथिलामोद**क फाइल सबसँ ओहिमे प्रकाशित **सीमन्तिनी**क अविच्छिन्न सकल अंश उपलब्ध भऽ सकल । **सीमन्तिनी-आख्यायिका**क सम्पूर्ण पाठक उपलब्धिसँ ओहने आनन्दक अनुभूति भेल छल जेहन गँहीर इनार खुननिहारकेँ पानिक सोआ फुटैत देखि कऽ होइत छल होयतैक ।

सीमन्तिनी-आख्यायिकामे वर्णित सीमन्तिनीक जन्मसँ आरम्भ कऽ परिणय-कोबरघर धरिक कथा मिथिलामोदमे क्रमशः नओ किस्तमे प्रकाशित भेल छल । एकर पहिल किस्त मिथिलामोदक वर्ष-2 उद्गार 17-18, मार्ग-माघपूर्णिमा, सन 1314 साल, शाके 1828 (नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी, 1906-07 इ.) मे प्रकाशित भेल तथा अन्तिम नवम किस्त, वर्ष-16, उद्गार-180-83, अगहन-फागुन, सन 1330 साल, शाके 1844 (नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी-फरवरी, 1922-23 ई.)मे भेल छल । दोसर किस्तक आठ पृष्ठ (9 सँ 16 धरि) मोदक जाहि उद्गारमे छपल से उपलब्ध नहि भऽ सकल परन्तु ई छपल होयत 1907 इ.क फागुनसँ आषाढ़ अर्थात् फरवरीसँ जून धरिक 20म सँ 24मक कोनो उद्गारमे, जतऽसँ उपरिचर्चित गद्य-संग्रहमे संकलित कयल गेल । तेसर किस्तक एक वर्ष दस मासक बाद, चारिम किस्त एवं अव्यवहित पश्चात् पाँचम किस्त सेहो प्रकाशित भेल । एकर एक वर्ष नओ मासक बाद छठम किस्त प्रकशित भेल । तदुतर सात वर्ष पाँच मासक दीर्घ अन्तरालपर सातम ओ अव्यवहित पश्चात् आठम किस्त बहरायल । अन्तिम, नवम किस्त तीन वर्ष छओ मासक बाद प्रकाशित भऽ कऽ पूर्ण भऽ सकल ।

अव्याहत लेखन

सीमन्तिनी-आख्यायिकाक विभिन्न किस्त सब दीर्घ-दीर्घ अन्तरालपर छपैत रहल, से देखि भ्रम भऽ सकैत छैक जे लेखक किस्त-किस्तमे एकर लेखन कऽ पठबैत छलथिन आ मोद अग्रिम किस्त भेटलापर ओकरा छपैत छल। से यदि रहितय तँ आलोचनामे स्वभावतः मुखर-प्रखर मिथिलामोद सीमन्तिनी-आख्यायिकाक लेखकक लेट-लतीफीकेँ सहजे माफ कयनिहार नहि छल !

दीर्घ अन्तरालोपर प्रकाशित किस्त सभक पूर्वापर कथा-क्रमक मिलान कयलापर ओहिमे कोनो व्यतिक्रम नहि बूझि पड़ैत अछि । यदि तत्काल पूर्व प्रकाशित कथांशक दीर्घ अवधि बितलापर अग्रिम भाग लिखल जाइत तँ अवश्ये कथानकक विकास-क्रममे,

वर्णन-विन्यासमे व्यतिक्रम कोनो ने कोने रूपमे झलकि जैतय । ओहि रूपक स्खलन सीमन्तिनी-आख्यायिकाक समग्र प्रकाशित रूपमे कतहु परिलक्षित नहि होइत अछि ।

व्याहत प्रकाशन

सीमन्तिनी-आख्यायिका खण्डशः प्रकाशित होइतो मूल रूपमे अव्याहत आ सम्पूर्ण रूपमे लिखित रहल होयत। एकर सम्पुष्टि क्रमशः पूर्वमे प्रकाशित अंशक अन्त तथा पश्चात्कालक कोनो अंकमे प्रकाशित अग्रिम अंशक आरम्भक मिलान कयलापर होइत अछि–

किस्त		अन्त	आरम्भ
I-	(ii)	......राजकन्याकेँ अल्प—	
II-	(i)		—अवस्थामेँ विवाह होयब उचित नहि......
	(ii)	......घरहिमेँ योगायकेँ राखी—	
III-	(i)		—तेँ सगुण वरक अन्वेषण कय......
	(ii)	......नाच भय रहल छल ।—	
IV-	(i)		तदुत्तर महाराजक आज्ञानुसार.....
	(ii)	......सभ लशकर ठहरि गेल ।	
V-	(i)		तदनन्तर सभ लोक यथायोग्य.......
	(ii)	......गेलापर दुनू दलकेँ सामना—	
VI-	(i)		—भेल, दूनू तरफक सवार सभ.......
	(ii)	......सिन्दूरसँ भूषित कय स्वानीत का—	
VII-	(i)		—'कामदार' बनारसी साड़ी.......
	(ii)	......अङ्क भय जायत, यथा 1001 ।—	
VIII-	(i)		—ई सूनि ज्यौतिषी जी कथी लय.....
	(ii)	......समवायो महानभूत ॥"-	
IX-	(i)		—एवं प्रकार निरन्तर उत्सव होइत.....

उपर्युक्त सारिणीमे देखल जाइत अछि जे कतहु वर्णन-प्रसंगक मध्यमे, कतहु वाक्यक मध्यमे, तँ कतहु विशेषण-विशेष्य पदक मध्यमे आ कतहु तँ शब्दहिक मध्यमे किस्तक समाप्ति भऽ गेल अछि। सबसँ रोचक अछि छठम किस्तक अन्त जे **'का'** अक्षर पर समाप्त होइत अछि । एहि एक अक्षरसँ अनुमान करब कठिन जे लेखक आगाँ की कहऽ चाहैत छथि । ई स्पष्ट होइत अछि सातम किस्तक आरम्भिक भागक-**'कामदार'**

बनारसी साड़ी....., उक्तिसँ । छठम किस्त, उद्गार 59, अगस्त 1911मे छपल आ सातम किस्त सात वर्ष पाँच मासक दीर्घ अन्तराल (!)क बाद उद्गार-149, फरवरी 1919 मे छपल छल ।

एहि सबसँ सिद्ध होइत अछि जे **सीमन्तिनी-आख्यायिका** भनहि खण्डश: प्रकाशित होइत रहल हो, एकर सम्पूर्ण रूपक प्रकाशनमे सोलह वर्ष चारि मासक अवधि बीति गेल हो, किन्तु एकर लेखन मोदमे प्रकाशनसँ पूर्वहि भऽ चुकल छल ।

लेखनक उत्स

1903 इ.सँ पूर्वहि परमेश्वरझा संस्कृतमे **कुसुमकलिका आख्यायिका** नामक गद्य कृतिक रचना कऽ चुकल छलाह । हमर अनुमान अछि जे ओकरा पश्चाते हुनका मस्तिष्कमे 'कुसुमकलिका आख्यायिका' सदृश मैथिलीयोमे कथात्मक गद्य-काव्यक रचना कयल जाय से आयल होयतनि । अत: 1904-05 इ.क अवधिमे स्थिरचित्त ओ मनोयोगसँ रचि-रचि कऽ **सीमन्तिनी**क सर्जन कयने होयताह । जाहि रूपमे विस्तारसँ समकालिक समाजक वर्णन भेल अछि, आनुषंगिक सामग्री विभिन्न शास्त्रक प्रमाणसँ सम्पुष्ट भेल अछि, से धड़फड़ीमे अवसर अयलापर कऽ लेब सम्भव नहि । अत: निष्कर्ष ई जे **मिथिलामोद**क प्रकाशनारम्भसँ पूर्वे ओ सम्पूर्ण **सीमन्तिनी**क रचना कऽ चुकल छलाह । **मिथिलामोद** दिससँ रचनाक आग्रह भेलापर **सीमन्तिनी**क समग्र पाण्डुलिपिए पठा देलथिन जकरा मिथिलामोद अपन सुविधानुसार क्रमिक रूपमे छपैत रहल ।

मिथिलामोदक आग्रह ओ सीमन्तिनी

1922 इ.क उदगार 174-179 (ज्येष्ठ-कार्त्तिक)क संयुक्तांकमे मिथिलामोदक ओहि समयक एकटा सक्रिय सहयोगी (उपसम्पादक) अनूपमिश्रक **मैथिली व्याकरण** शीर्षकसँ एकटा निबन्ध छपल छल जाहिमे मैथिली-लेख शैलीक बहुरूपताक समस्या-निदानक प्रयोजनीयता देखबैत म.म. परमेश्वरझासँ शीघ्र पूर्व प्रतिश्रुत मैथिली-व्याकरण-रचनाक अपेक्षा कयल गेल छल । ओहि क्रममे हुनका द्वारा रचित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक मोदमे क्रमश: प्रकाशन एवं ओकर पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक योजनाक चर्चा करैत कहल गेल छल जे- **'हमरा लोकनि तँ 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' (जे कैक वर्षसँ पुस्तकाकार प्रकाशित करबा ले पृथक कैल अपूर्णे सड़ैत अछि) कैँ पूर्त्ति करबा हेतु मिथिलामोद द्वारा एवं पत्रो लिखि सूचना देलन्हि परन्तु अद्यावधि अपन मनोगत भाव कोनहुँ रूपैँ नहिएँ प्रकट कै सकलाह ।'**

लेख-समापनक क्रममे पुन: कहल गेल छल जे- **'श्रीयुत केसरीजीसँ सादर निवेदन जे आबहु मैथिली व्याकरणपर ध्यान दै प्रस्तुत करथि ओ सीमन्तिनी-आख्यायिकाक हेतु जे अनेको बेर सूचना देल गेलन्हि अछि कृपया तद्विषयक अपन कर्त्तव्य प्रकाशित करथि ।'**

सीमन्तिनी-आख्यायिका विषयक उपर्युक्त उपराग उचित नहि कहल जा सकैत अछि । कारण, तखनहु मोदक लगमे सीमन्तिनीक अन्तिम किस्त अप्रकाशिते फाइलमे पड़ल छल, जकरा लगले अग्रिम उद्गार 180–83 (अगहन–पूस–माघ–फागुन, 1922–23)क संयुक्तांकमे प्रकाशित कयल जा सकल ।

अनूपमिश्रक उपर्युक्त वक्तव्यसँ पूर्वोक्त दुइ गोट अनुमित तथ्यक सम्पुष्टि होइत अछि ।

प्रथम ई जे प. परमेश्वरझा मिथिलामोदमे दीर्घ कालमे क्रमशः प्रकाशित सीमन्तिनी-आख्यायिकाक सकल अंशकेँ एकहि अव्याहत क्रममे रचना कऽ लेने छलाह, जकरा मोदमे प्रकाशनार्थ प्रदान कयलनि ।

दोसर ई जे ओ वास्तवमे सीमन्तिनी-आख्यायिकाक कथानककेँ सीमन्तिनीक परिणय-कोबर वर्णन कऽ समाप्त कऽ देने छलाह । सीमन्तिनीक कथानकमे पौराणिक परिवेशक स्थानमे समकालिक परिवेशक अत्यन्त गाढ़ वर्णन कयल गेल अछि । ओहन अतिशय समकालिक परिवेशमे पौराणिकताक निर्वाह कऽ चन्द्राङ्गदक मृत्यु ओ कतोक वर्षक अनन्तर पुनर्जीवनक चमत्कारिक घटना कथमपि बुद्धिग्राह्य नहि होइत । हुनका जे सन्देश देबाक छलनि से परिणयेपर जा कऽ सिद्ध भऽ जाइछ । तेँ ने बेर-बेर आग्रह कयलोपर सीमन्तिनीक परिणयसँ आगाँक कथा लिखबाक प्रयोजन नहि बुझलनि, तेँ नहि लिखलनि ।

सीमन्तिनीक सम्पादित रूप

सीमन्तिनी आख्यायिकाक सम्पूर्ण रूपक प्रकाशन आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासक दृष्टिसँ तथा साहित्य-मर्मज्ञ सहृदय पाठकक निमित्त एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध होयत । अतः **मिथिलामोद**मे खण्डशः प्रकाशित विकीर्ण रूपकेँ आब व्यवस्थित रूप दऽ कऽ पाठ-सुलभ बनयबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

सीमन्तिनीक उपलब्ध पाठमे व्यवच्छेदक रूपमे आश्वास, उल्लास, परिच्छेद, अध्याय वा विश्रामादिक प्रयोग नहि अछि । यद्यपि ओकर कथानक-संरचनामे एहन स्थल सब अछि जाहि ठाम विराम सूचित कयल जा सकैछ । किन्तु सम्पादनमे कथानककेँ अध्याय वा परिच्छेदमे विभक्त करबाक चेष्टा नहि कयल गेल अछि ।

सीमन्तिनी मिथिलामोदमे नओ किस्तमे छपैत रहल छल । ओकर अभिज्ञान पाठकोकेँ होइनि, ताहि दृष्टिएँ प्रस्तुत सम्पादित रूपमे प्रत्येक किस्तकेँ रोमन अंकमे क्रमांक देल गेल अछि । पूर्वक किस्तक अन्तिम पाँती वा प्रसंग अपूर्ण अछि तँ अग्रिम किस्तक आरम्भ ठीक ओकरा नीचाँसँ कयल गेल अछि ।

प्रत्येक किस्तमे अर्थ स्पष्ट करबाक लेल, विषयकें पल्लवित करबाक लेल, कोनो विषयक आलोचनाक लेल, कोनो कथनक सम्पुष्टि लेल शास्त्रीय प्रमाण इत्यादि हेतु लेखक द्वारा पृष्ठक अधोभागमे टिप्पणी देल गेल अछि । क्वचित् मिथिलामोदहुक दिससँ सम्पादकीय टिप्पणी (**सं.टी.**) देल गेल अछि । प्रत्येक पृष्ठमे टिप्पणी देबाक मोदक पद्धतिक बदलामे, एतऽ टिप्पणी-सूचक क्रमांक लगातार क्रममे 1 सँ 43 धरि देल गेल अछि ।

मूल पाठक समाप्तिक पश्चात् परिशिष्ट देल गेल अछि । ओहिमे पहिने रोमन अंकमे किस्तक क्रमांक एवं ओ किस्त **मिथिलामोद**क जाहि अंकमे प्रकाशित भेल छल तकर समस्त विवरण दऽ देल गेल अछि । ओही ठाम ओहि किस्त वा अंकमे मूलमे देल गेल टिप्पणीकें क्रमांकानुसार एकत्रैव दऽ देल गेल अछि । 43 संख्यक मूल टिप्पणीक स्पष्टीकरण एवं सन्दर्भ सूचना एहि पंक्तिक लेखक द्वारा उपटिप्पणीमे देल गेल अछि ।

मूल पाठमे कतहु कोनो अनावश्यक हस्तक्षेप नहि कयल गेल अछि । तथापि सीमन्तिनी-आख्यायिकाक मूल पाठमे अनेक स्थलपर पाठ अशुद्ध, अपूर्ण, भ्रमाह वा क्रमभग्न देखल गेल अछि । एहन स्थलपर सम्पादकीय कर्त्तव्यक निर्वाह करैत स्पष्ट रूपक प्रेसक अशुद्धिकें शुद्ध कयल गेल अछि । किन्तु अपूर्ण, भ्रमाह वा क्रमभग्न पाठक संशोधित, संवर्धित, सम्भावित वा प्रस्तावित अंशकें आयतार्ध-बन्ध [ ]क अन्तर्गत देल गेल अछि ।

अनेक ठाम वृत्तार्ध-बन्ध ( )मे सेहो पर्यायवाची वा अंगरेजी शब्द, अर्थक स्पष्टीकरण वा व्याख्या देल गेल अछि । ओ सब मूल पाठहिक अंश थिक जे लेखक द्वारा स्वयं देल गेल छल ।

मिथिलामोदमे **सीमन्तिनी** जाहि लेख-शैलीमे मुद्रित अछि तकरा ओही रूपमे राखल गेल अछि । एतबा अवश्य जे एहि ठाम विभक्तिकें शब्दक संग संहित कऽ देल गेल अछि ।

लेख-शैली

सीमन्तिनीमे प्रयुक्त लेख-शैलीमे तथा म. म. परमेश्वरझाक स्वहस्तलिखित नाटक **दुर्गाविजय**मे प्रयुक्त लेख-शैलीमे हमरा कोनो अन्तर देखबामे नहि आयल अछि । अवश्ये **दुर्गाविजय**मे **कें, कैं, तैं, तरहैं, प्रसादैं,** इत्यादिमे अनुस्वारक प्रयोग कयल गेल अछि। **सीमन्तिनी**मे अनुस्वारक स्थानमे चन्द्रविन्दुक प्रयोग भेल अछि । मिथिलामोदक द्वारा ई परिवर्त्तन कयल गेल हो से सम्भव अछि । एकरा लेख-शैलीमे अनर्गल हस्तक्षेप नहि मानल जा सकैत अछि। अतः अपन **म. म. परमेश्वरझा** नामक विनिबनध (पृ. 98)मे डा. दुर्गानाथझाश्रीशक द्वारा लगाओल गेल ई आरोप जे- 'मोदमे प्रकाशित

सीमन्तिनी आख्यायिका म. म. परमेश्वरझाक लेखन-शैलीमे नहि म. म. मुरलीधरझाक लेखन-शैलीमे छल' से पूर्वाग्रह मात्र कहल जा सकैत अछि । **दुर्गाविजयक** लेख-शैली प्रमाणरूपमे आबि गेलापर उपर्युक्त धारणा स्वतः अमान्य-अप्रासंगिक भऽ जाइत अछि ।

सीमन्तिनीक कथास्रोत

सीमान्तिनी आख्यायिकाक कथावस्तुक आधार स्रोत स्कन्दपुराणक **ब्रह्मोत्तर खण्ड** अछि । एकर संकेत लेखक स्वयं आर्यावर्तमे आयल बरियाती लोकनिक रात्रिविश्रामक प्रकरणमे सूचना दैत कहैत छथि जे- **'एही विषयक सूचनामे ब्रह्मोत्तरखण्डक श्लोक अछि :**

सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्वाह कर्मणि ।
यत्र सर्व महीपानां समवायो महानभूत ।।'

ई ब्रह्मोत्तरखण्ड स्कन्दपुराणक भागक रूपमे प्रसिद्ध अछि ।

आर्यावर्तक अत्यन्त प्रतापी, प्रजापालक, धार्मिक प्रवृत्तिक राजा छलाह चित्रवर्मा । हुनका एकटा कन्या जन्म लेलकनि जकर नाम सीमन्तिनी राखल गेलनि । नामकरणक संगहि ज्यौतिषी लोकनि कन्याक जन्मकुण्डलीक आधारपर उत्तम भविष्य होयबाक फल कहलथिन । राजा ओ सकल राजपरिवार प्रसन्न छल । तखन एकटा दोसर पण्डित कहलथिन जे एहि कन्याकेँ चौदहम वर्षक अवस्थामे वैधव्य योग अवश्यम्भावी छनि । आनो पण्डित सब प्रतिवाद नहि कऽ मौने रहलाह । राजा ओ समग्र राजपरिवारक प्रसन्नता शोकमे बदलि गेल । यद्यपि ओ ज्यौतिषी जाइत-जाइत इहो कहने गेलथिन जे शिवकृपासँ कन्याक सौभाग्य-रक्षा सम्भव अछि ।

कन्या वर्द्धिष्णु छलीह, शुक्लपक्षक चन्द्र जकाँ बढ़ैत जा रहलि छलीह । क्रमशः राजा, रानी एवं अन्यो लोक ज्यौतिषीक भविष्य-कथन बिसरि गेल । अतः सीमन्तिनीक वैधव्य-मुक्तिक कोनो उपचार नहि कयल गेल ।

सीमन्तिनीक एकटा वृद्धा परिचारिका छलनि जे बच्चेसँ हुनका कोर-काँख लऽ कऽ खेलबैत रहलनि । ओकरा ज्यौतिषीक कथा स्मरण छलैक । किन्तु राजपरिवार दिससँ ओकर उपचार नहि देखि दुख होइत छलैक । जखन सीमन्तिनी आठम वर्षक भेलीह तखन सीमन्तिनीकेँ हुनक जन्मक अवसरपर पण्डित लोकनि द्वारा कहल गेल कथा ओ वृद्धा परिचारिका सुना देलकनि । सीमन्तिनी उदास भऽ गेलीह । परिचारिका कहलकनि जे- आइ-काल्हि एकटा ऋषि अपन दुइ पत्नीक संग आयल छथि । ओ कोनो उपाय देखा सकैत छथि, तेँ हुनक दर्शन करी ।'

सीमन्तिनी मायसँ अनुमति लेबऽ गेलीह जे केओ ऋषि पत्नीक संग आयल

छथि, तनिक दर्शन करऽ जायब। माय ई कहैत अनुमति दऽ देलथिन जे ओ ऋषि याज्ञवल्क्य छथि जे अपन पत्नी मैत्रेयीक संग राज-अतिथि छथि।

सीमन्तिनी मैत्रेयीक दर्शन कऽ अपन वैधव्ययोगक कथा कहलथिन। मैत्रेयीकेँ सूनि बड़ क्लेश भेलनि। ओ शिव-पार्वतीक नित्य आराधना ओ सोमव्रत करबाक उपदेश देलथिन। मैत्रेयीक द्वारा देल उपदेश ओ देखाओल विधि-विधानसँ सीमन्तिनी दुष्कर आराधना करऽ लगलीह।

चौदहम वर्षक वयसमे निषध देशक राजा नल-दमयन्तीक पौत्र एवं इन्द्रसेन-लावण्यवतीक पुत्र चन्द्राङ्गदक संग विवाह सम्पन्न भेलनि।

विवाहक पश्चाते एक दिन चन्द्राङ्गद सासुरक समवयस्क सम्बन्धी वर्गक संग यमुनामे जलविहारक हेतु गेलाह। जलविहारे कालमे बड़का बिहाड़ि उठल। नाव सब डूबि गेल। हाहाकार मचि गेल। यमुनामे जाल खिरौलाक बाद और कतेको लोक तँ बाँचि गेल। किन्तु चन्द्राङ्गद नहि भेटलथिन। चारू कात शोकक लहरि पसरि गेल।

सीमन्तिनी शोकित भऽ विधवावेश धारण कऽ लेलनि। यमुनामे जाहि स्थलपर चन्द्राङ्गद जलसमाधि लेलनि, ओहि ठाम तटपर तपःस्थली बनाय सीमन्तिनी यथावत् शिव-पार्वतीक पूजा-आराधना एवं कठोर सोमव्रत करैत रहलीह। निषध देशमे पुत्रशोकमे विकल इन्द्रसेनकेँ सर-सम्बन्धी लोकनि राजच्युत कऽ कारागारमे धऽ देलकनि।

ओमहर चन्द्राङ्गद जलप्रवाहमे भासैत नागलोक पहुँचि गेलाह। जलमे स्नान करैत नागकन्या रक्षा कऽ नागराज तक्षकक ओतऽ लऽ गेलनि। नागराज तक्षक हुनका सेवामे राखि लेलथिन। चन्द्राङ्गद मौन रहि कर्त्तव्यमे लागल रहलाह। तीन वर्ष बितलापर नागराजक जिज्ञासापर चन्द्राङ्गद अपन परिचय एवं दुर्घटनाक विवरण सुना देलथिन। नागराज नागसेनाक संग हुनका स्वदेश पठौलथिन। चन्द्राङ्गद यमुनामे ओही स्थलपर बहरयलाह जतऽ डूबल छलाह आ जतऽ सीमन्तिनी आराधना करैत छलीह। चन्द्राङ्गद सीमन्तिनीकेँ अपन परिचय बिनु देनहि सूचित कयलथिन जे अहाँक पति जीवित छथि ओ शीघ्रहि औताह। सीमन्तिनीकेँ आभास भेलनि जे ओ चन्द्राङ्गदे छलथिन।

चन्द्राङ्गद नागसेनाक सहयोगसँ पिताकेँ मुक्त करा राजसिंहासनपर आसीन करौलनि। पश्चात् सविधि आर्यावर्त अयलाह। सीमन्तिनीसँ मिलन भेलनि। शिव-पार्वतीक आराधनासँ सीमन्तिनीक वैधव्ययोग शमित भेलनि। ओ अपन शिव-पार्वतीक आराधना तथा सोमव्रत आजीवन करैत सती सीमान्तिनीक रूपमे प्रख्यात भेलीह।

एही पौराणिक उपाख्यानकेँ आधार बनाय प. परमेश्वरझा सीमन्तिनी-आख्यायिकाक रचना कयने छलाह। परन्तु मूल उपाख्यानक समग्र कथानककेँ ग्रहण नहि कऽ ओकर

पूर्वांशेकेँ कथावस्तु बनाओल गेल । कथारम्भमे प्रसंगतः सीमन्तिनीक वैधव्य-योग ओ तकर निवारण रूप जे बीज-कथन, से पूर्ण रूपमे पल्लवित नहि कऽ ओकरा सीमन्तिनी-परिणये धरि सीमित राखल गेल ।

पौराणिक कथापर नव्यताक आवरण

पौराणिक परिवेशक दृष्टिएँ घटना-स्थल अछि आर्यावर्त ओ निषधदेश । पौराणिक नामधेय पात्र छथि-चित्रवर्मा, सीमन्तिनी, नल-दमयन्ती (नामोल्लेख मात्र), इन्द्रसेन, चन्द्राङ्गद तथा ऋषिपत्नी मैत्रेयी । सीमन्तिनीक जन्म एवं चौदहम वर्षमे हुनक वैधव्य योगक भविष्यवाणी, मैत्रेयी द्वारा सीमन्तिनीकेँ वैधव्य-निवारणार्थ शिव-पार्वती-आराधनाक उपदेश, चन्द्राङ्गदक संग सीमन्तिनीक परिणय- एहि पौराणिकी कथा-सूत्रक ठठरी मात्र सीमन्तिनी-आख्यायिकामे ग्रहण कयल गेल अछि । एहि कथा-कंकालकेँ मांसल ओ पृथुल बनयबाक लेल, सौन्दर्य-सम्पन्न रूप देबाक लेल मूल कथानकसँ इतर अनेक पुराणानुकृत वा पुराणेतर अभिनव पात्र-पात्री, नाम-गाम, प्रदेश-परिवेश, राज-समाज, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार, विधि-व्यवहार, आमोद-प्रमोद, गीत-नाद, पाबनि-तिहार इत्यादि जतेक उपादानक संयोजन आख्यायिकामे कयल गेल अछि से सभ आख्यायिकाकार अपन समकालिके देश-समाजसँ निःसंकोच भावसँ ग्रहण कयने छथि जे स्वयं पढ़ल-गुनल, देखल-सुनल, बुझल-गमल, स्वानुभूत-सुचिन्तित तथ्य छलनि । राजधानी, राजभवन, राजकीय शिष्टाचार, राजकन्याक वरान्वेषण, राजकुमारक बरियातीक साज-बाज, महफिल इत्यादिक वर्णन-क्रममे लेखकक अर्द्धचेतन मनमे राजस्थान-मध्यप्रदेशक तत्कालीन देशी रजबाड़ा सब रहैत छनि, तँ अन्तःपुरक व्यवहार आ बोली-बानीमे राजदरभंगा एवं मिथिलाक अन्यान्य राज-परिवारक अन्दर हवेलीक चित्र साकार भऽ उठैत छनि । वर-कन्याक वैवाहिक अधिकार-निर्धारण, बरियाती-सरियातीक मध्यक प्रश्नोत्तर, विवाह-सम्बन्धी सकल विधि-व्यवहारक निर्वाह जँ मैथिल परिपाटीसँ भेल अछि, तँ सामान्य जनक मनोरंजनक साधन वैह सब प्रयुक्त भेल अछि जे मिथिलाक सामान्य जनसमाजमे परम्परासँ प्रचलनमे रहल अछि । सीमन्तिनी-आख्यायिकामे समकालिक उपादानक समावेशक क्रममे आगराक शोभा, धवलपुर, ग्वालियरक प्राचीन दुर्ग, डाक द्वारा समाचार-सूचिका-पत्रिका-प्रेषण, बम्बगोला छोड़ब, तोपखानासँ ओ पलटनक छावनीसँ तोपक फायर, महफिलमे गजल-गान सदृश तेहनो वस्तु ओ प्रसंग सभक समावेश निरधोख भऽ कऽ कयल गेल अछि जे पौराणिक वातावरणमे सर्वथा अपच लागि सकैत अछि । तथापि मिथिलामोद गजल-वर्णनपर आलोचनात्मक टिप्पणी करैत एहन-एहन प्रयोगकेँ रोचकताकेँ ध्यानमे राखि कठोरताक स्थानमे क्षमाभाव प्रदर्शित कयने छल जे- **'प्रिय पाठकगण ! सीमन्तिनीक समयमेँ गजलक प्रचार छल वा नहि, किन्तु कथाक रोचकतासँ आनो कैकटा भेटत, से क्षन्तव्य ।'**

वास्तवमे पौराणिक सन्दर्भकेँ अवडेरि देलापर, अपन नव्य, रुचिरंजक, हृदयावर्ज्जक, विच्छितिपूर्ण अभिनव वर्णनक वैविध्य-वैशद्य, ललित भाषा, चटुल संवाद एवं उक्तिवैचित्र्यसँ संबलित भऽ अति पातर सन पौराणिकी कथातन्तु पूर्ण मांसल ओ पृथुल बनि गेल सीमन्तिनी-आख्यायिका अपन वर्त्तमान रूपमे अखण्ड ओ सम्पूर्ण मानल जा सकैत अछि ।

अनुमान इहो कयल जा सकैत अछि जे जेना राजा चित्रवर्माक 'बालमैत्री-प्रयुक्त परम प्रगल्भ वाक्पटु अति स्थिर विचारक एक विद्वान् ब्राह्मण' द्वारा सीमन्तिनीक वैधव्यक भविष्यवाणीक सन्दिग्धता, निस्सारता, निरर्थकता प्रमाणित करैत सीमन्तिनीक विवाहक पक्षमे देल गेल तर्ककेँ मानि चित्रवर्मा कन्याक विवाहक आदेश दऽ देलथिन, तहिना आख्यायिकाकार ब्राह्मण द्वारा देल गेल वैधव्यक भविष्यवाणीक सन्दिग्धता-निरर्थकताक तर्ककेँ स्वीकार करैत सीमन्तिनीक परिणयेपर आख्यायिकाक इति कऽ देलनि । एहि प्रकारक अनुमान असंगतो नहि कहल जा सकैत अछि । बौद्धिकताक नवीन युगमे पातालक नागलोक-गमन, मृत्युक कतोक वर्षक बाद पुनर्जीवन सन घटना कोना विश्वसनीय मानल जाइत ।

गतिशील विचारधाराक उन्मेष

म. म. परमेश्वरझा गतिशील आधुनिक विचार धाराक पण्डित छलाह । अपन लेखनमे ओ अनेक ठाम सामाजिक दुर्गुण ओ कुप्रथा सभक आलोचन करैत देखल जाइत छथि । ओ सामाजिक विकृतिसँ निरपेक्ष रहि अपन पारम्परिके शास्त्रचिन्तनमे निमग्न रहनिहार पण्डित नहि छलाह । आइसँ एक शताब्दी पूर्वक व्यक्तिमे कोनो प्रकारक अभिनव विचार अपना समयक दृष्टिएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ओ ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैत अछि । सीमन्तिनी-आख्यायिकामे अनेक स्थलपर अथवा ओकर टिप्पणीमे एहन-एहन अभिनव विचार सभ व्यक्त भेल अछि ।

अभिनव विचारक दृष्टिएँ मिथिला सहित भारतक अन्योभागमे प्रचलित सबसँ पैघ कुप्रथा बालविवाह तथा स्त्री-शिक्षाक प्रति समाजक नकारात्मक दृष्टकोणक विपरीत अवधारणाक प्रतिपादन सीमन्तिनी-आख्यायिकामे खूब विस्तारसँ कयल गेल अछि ।

वैवाहिक कुरीतिक विरोधमे स्वर

मिथिलामे विवाहसँ सम्बद्ध कुत्सित प्रथामेसँ एकटा परम विनाशकारी कुप्रथा छल बाल-विवाहक । 'अष्टवर्षाद् भवेद् गौरी'केँ विवाहक परमायु मानि कन्या आ बालकक विवाह करा देल जाइत छल । अठारहम शताब्दीक मध्यमे **हरिवंशक** कथाक आधारपर रमापतिउपाध्याय एकटा नाटक **रुक्मिणी परिणय नाटकक** रचना कयने छलाह । **हरिवंशमे** विवाहक समयमे रुक्मिणीकेँ **श्यामा** कहल गेल छनि । श्यामाकेँ **'यौवन**

मध्यस्था' 'षोडशी श्यामा' कहल जाइछ । तेँ रुक्मिणी विवाहक समय सोलह वर्षसँ कम वयसक तँ नहिएँ रहल होयतीह । परन्तु रमापति पौराणिक स्रोतक मान्यताकेँ त्यागि दसमे वर्षमे रुक्मिणीक माता-पिताकेँ कन्याक मिथिलाक बाल-विवाहक कुप्रथाक कारणेँ विवाहक हेतु व्यग्र देखओलनि अछि । **–कूमरि हमर जलधि दुहिता सनि, वएस वरण दस ताहि ।**

बालविवाहक विकृतिक चरम रूपमे एहनो कन्या-बालकक विवाह करा देल जाय लागल जकरा मायक दूध पीयब छुटलो ने रहैत छलैक । एहन बच्चा वर-कनियाँ तँ विवाहकालमे कोरमे सुतले रहैत छल होयत, तेँ ने कहबी बनि गेल जे **सुतल छी आ वियाह होइए** । पाँच-छओ दशक पूर्व धरि गाम-देहातमे युवको वर जँ विवाह हेतु चुमाओन करा कऽ विदा होइत छल तँ दाइ-माइ सब हँसी-चौल करैत वरक मायकेँ एकटा विधि करबाक निर्देश दैत छलथिन-'माय बेटाकेँ दूध पिया कऽ विदा करथुन' आ माय विधि-पूरणार्थ युवा पुत्रहुक मुँह अपन छातीसँ सटा कऽ झटसँ विधि कऽ दैत छलथिन । ई वस्तुतः दुधपीबा पुत्रहुक विवाह करा देबाक कुप्रथाक स्मृतिशेष विधि कहल जा सकैत अछि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भमे जे समाज-सुधारक बसात बहऽ लागल छल आ बालविवाहक विरोधमे स्वर उठऽ लागल छल तकर सभक प्रभावेँ 1910 इ. मे मैथिल महासभा मैथिल कट्टरतासँ कनेक अधिक उदार भेल तँ कन्याक विवाहक वयस आठसँ बारह वर्ष पर्यन्त निर्धारित कयल गेल । 1930 इ.मे बालविवाह-निरोधक कानून सारदा-एक्ट लागू भेल तँ ओहिमे कन्याक विवाहक वयस न्यूनतम चौदह वर्ष स्थिर कयल गेल । इहो सुनल जाइछ जे जाहि वर्ष ई एक्ट लागू भेल तकर पूर्वक शुद्धक अन्तिम एक मासमे श्रोत्रिय समाजमे तीन वर्षसँ ऊपरक वयसक तीन सय कन्याक विवाह कराओल गेल छल ।

बालविवाह ओ कन्याक विवाह कालक अल्पवयस्कताक सम्बन्धमे एतेक विस्तारसँ चर्चा एहि हेतु कयल गेल अछि जे, एक शताब्दी पूर्व संस्कृतक प्रकाण्ड पण्डित, अपना समयमे मैथिल मनीषाक ध्वजवाहक पण्डित परमेश्वरझाक सुधारवादी दृष्टिकोणक महत्त्वकेँ आँकल जा सकय ।

सीमन्तिनी कथाक पौराणिक स्वरूपमे सीमन्तिनीक विवाह चौदहम वर्षमे होयब वर्णित अछि । परमेश्वरझा अपना समयक सामाजिक रूढ़िक अनुसरण करितथि तँ सीमन्तिनीक विवाह आठमे वर्षमे कराय चौदहम वर्षमे वैधव्य घटित होइत देखा सकैत छलाह । दोसर विकल्प ई छलनि जे सीमन्तिनीक वयसक उल्लेख कयनहि विना विवाह करा दऽ सकैत छलथिन । किन्तु सामाजिक रूढ़िक विपरीत सारदा एक्ट आ मैथिल

महासभाक कन्या-विवाहक वयस-सीमा निर्धारणसँ बहुत पूर्वहि (1904-05) परमेश्वरझा अपन नायिकाक न केवल चौदहम वर्षमे विवाह करबौलनि, अपितु प्रसंग बनाय सीमन्तिनीक एकटा 'परम धीरा ओ बुद्धिमती' सखी द्वारा चौदहमो वर्षमे कन्याक विवाहक विरोध करौलनि, सुश्रुतक निषेधमूलक प्रमाण सहित । स्वयं आख्यायिकाकार एकर टिप्पणीमे सुश्रुतक सम्बद्ध वचनो उद्धृत कऽ देने छथि ।

स्त्री-शिक्षाक प्रति समर्थन भाव

स्त्री-शिक्षाक सम्बन्धमे सेहो म. म. परमेश्वरझा उदार दृष्टिकोण रखैत छलाह, तेँ व्यावहारिक ज्ञान सहित सीमन्तिनीकेँ विधिवत् अक्षरारम्भसँ लऽ कऽ चौँसठियो कला एवं अन्यान्य विद्याक शिक्षा देल जाइत छनि । लेखक विस्तारसँ सीमन्तिनीकेँ देल गेल विभिन्न विषयक शिक्षाक विवरण तथा सीमन्तिनीक परिष्कृत रुचिक वर्णन कयलनि अछि । ई सब ओहि समयमे देखाओल गेल जखन स्त्री-शिक्षाक प्रति समाजक विचार सर्वथा निषेधात्मक वा नकारात्मक छल । लेखक चाहितथि तँ सीमन्तिनीक वर्द्धिष्णु शरीर एवं अप्रतिम सौन्दर्य, स्वभावादिक विस्तृत-चमत्कारक वर्णनकेँ महत्त्व दऽ शिक्षाकेँ सर्वथा गौण राखि सकैत छलाह । ओहिमे कोनो अस्वाभाविकता नहि होइत, तथापि जेँ लेखककेँ अपन समय ओ समाजकेँ नारी-शिक्षामे उदार दृष्टि रखबाक सन्देश देबाक छलनि तेँ ओतेक विस्तारसँ सीमन्तिनीकेँ विविध विषयक शिक्षा देल जयबाक वर्णन कयने छलाह ।

म. म. परमेश्वरझा वास्तवमे अपन गतिशील विचारमे अपन समयसँ बहुत आगाँ चलि रहल छलाह, से साहित्यिक्रो परिप्रेक्ष्यमे घटित भेल देखल जाइत अछि । सीमन्तिनी वाक्य-समस्या-पूरण, दोहा-कवित्त, नाटकाभिनय-अवलोकन, ध्रुवपद-मलारक आलाप, वीणा-वादनक संगहि आख्यायिका-उपन्यास पढ़बामे अभिरुचि रखैत छलीह ।

आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालमे परमेश्वरझा पहिल व्यक्ति भेलाह जे कथामूलक गद्यसाहित्यमे आख्यायिकाक संग उपन्यासहुक अवधारणासँ परिचित छलाह । तेँ सीमन्तिनीकेँ आख्यायिकाक संग उपन्यासहु पढ़बाक प्रवृत्तिक उल्लेख कयलनि अछि ।

सीमन्तिनीकारसँ समाजक अपेक्षा

एहि ठाम ध्यातव्य जे बीसम शताब्दीक प्रथमे दशकमे एहन बौद्धिक वर्गक उदय होबऽ लागल छल जे देश-दोष, सामाजिक कुरीति-कुप्रथा सभक प्रति आलोचनात्मक विचार राखऽ लागल छल । ओकर सुधारक आकांक्षी छल । ओ वर्ग सहित्यहुक माध्यमे समाज-सुधारक भावनाक प्रचारक आकांक्षी छल । एहि प्रकारक अपेक्षा परमेश्वरझाक **सीमन्तिनी**सँ सेहो छलैके । मिथिलामोद, उद्‌गार 45-46, आषाढ़-श्रावण, शाके 1832,

साल 1317-18 (1910 इ.)मे देवकृष्णराय(रामपुर)क एकटा **मधुश्रावणी** शीर्षक लेख प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे मधुश्रावणी पावनिमे भार-दोर पठायब, विभिन्न 'अँखिमुन्नी कुचालि', विध-बाध ओ व्यवहारक दोष-निरूपण सहित ओकर सभक निरर्थकता, अपकारकता, प्रतिगामिता, अन्धविश्वास इत्यादिक घोर विरोध कयल गेल छल । मधुश्रावणी पाबनिमे नवविवाहिताकेँ टेमीसँ दगबाक विधि तथा सामान्य रूपमे नारीवर्ग द्वारा खोदहा पड़बयबाक व्यवहारकेँ नारी-उत्पीड़नक दृष्टिएँ विरोध करैत पण्डित वर्गकेँ चुनौती देल गेल छल जे ओ लोकनि एकरा पक्षमे शास्त्रीय प्रमाण अथवा तार्किकता प्रस्तुत करथि अन्यथा एकर विलोपन कयल जाय । एहि सम्बन्धमे परमेश्वरझा ओ 'सीमन्तिनी'सँ विशेषरूपे सुधारात्मक अपेक्षा कयल गेल छल, यथा-

"उत्तम पाटक दूइ घीउमेँ भिजावल टेमी !!! (जाहि द्वारा सौभाग्य-समयक निश्चय बुझल जाइत अछि)क प्रमाण देशस्थ मान्य पण्डितजी लोकनि देथु अथवा एहि घृणित दुर्व्यवहारकैँ उठाय देथु । हम आशा करैत छी जे अवश्य स्वदेशव्यवहारपटु पण्डितजी एकर प्रमाण वा अस्वीकार 'मि. मोद'- सम्पादक ओतै जनाय तद्द्वारा सबहिकाँ कृतार्थ करताह । वा आब तँ मिथिलामेँ पाश्चात्यविद्यो लोकनि कतेक गोटै छथि, लगाबथु गोटेक 'साइन्स'क युक्ति, जाहिसँ व्यवहार पुष्ट हो, प्रसङ्गवश एकटा औरो जे एतेक 'खोदहा' पड़ैबाक क्रम कतैसँ आएल वा एहिसँ कोन लाभ, इहो विचारैक थिक । हमरा लोकनिकैँ बड़ आशा लागल छल जे ई सब विषय 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' द्वारा प्राप्त होइत किन्तु से 'मिथिला-तत्त्व विमर्श' चलल जे 'सीमन्तिनी'कैँ के पुछै, जेँ 'सुदर्शन' उपाख्यान दुर्दर्शन तैँ इहो सुखाइलि दीर्घोच्छ्वास लै रहलि छथि, यदि पण्डितजी कृपा करथिन्हि तँ एखनहु धरि हिन(सीमन्तिनी)क जीवनाशा अछि ।"

समाज सुधारक व्यापक दृष्टि

सामाजिक दुर्गुणक उल्लेख करैत ओकर आलोचना करबा काल म.म. परमेश्वरझाक दृष्टि केवल मिथिलहिक सामाजिक कुप्रथापर नहि छलनि । ओ भारतव्यापी अनेक सामाजिक कुप्रथा सबपर सीमन्तिनी आख्याथिकामे कतहु प्रत्यक्ष तँ कतहु प्रकारान्तरसँ चोट करैत देखल जाइत छथि । उनैसम-बीसम शताब्दीक ओहि सन्धिकालमे भारतक विभिन्न भागमे कन्या शिशु-हत्या सन अमानुषिक प्रथाक प्रचलन छल । कन्या शिशुकेँ जनमितहि नोन चटा कऽ, तमाकूक गरदी नाकमे दऽ कऽ किंवा कोनहु अन्यहु विधिसँ हत्या कऽ देल जाइत छलैक । ई निर्मम कुप्रथा राजपुतानामे विशेष रूपसँ छल । मिथिलहुक किछु जाति विशेष मध्य एकर प्रचलन छल । नहि निर्ममता सँ हत्या, तँ बेटीकेँ बिलटाइये कऽ मरवालेल छोड़ि देल जाइत छल । एकर पाछाँ कारण रहैत छल राजपूती आन-बान आ शान । सन्तान भेला उत्तर पिताकेँ ओकर विवाहक समय कोनो वरागतक द्वारपर जाय अपन मूड़ी झुकबऽ पड़ितैक । तेँ अपन शानक विपरीत मूड़ी झुकयबाक ई स्थिति अयबासँ पूर्वे कन्या शिशुक हत्या कऽ देल जाइत छलैक जे रहत

बाँस ने बाजत बँसुली । परमेश्वरझाके ँ बहुत दिन धरि राजस्थानक झालावाड़ स्टेटमे रहबाक अवसर भेटल छलनि जतऽ हुनका एहि कुप्रथाके ँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटले होयतनि । हुनक ओही अनुभवक अवक्षेपण सीमन्तिनी आख्यायिकाक आरम्भहिमे देखल जाइत अछि, जखन ओ कन्या सन्तानक आवश्यकतापर जोर दैत मनुसंहिताक वचनक सन्दर्भ प्रस्तुत कयने छथि ।

सीमन्तिनीमे दोसर जे अखिल भारतीय सामाजिक कुप्रथापर चोट कयल गेल अछि, ओ थिक नशापानक प्रवृत्ति । नशापानक चपेटमे पड़ि समाज बरबाद होइत रहैत छल। लोकक धूर-धूर कऽ सम्पत्ति बिका जाइत छलैक । केहन-केहन श्रीसम्पन्न लोकनि अपन नशापानक कारणे रंक बनैत गेलाह । परमेश्वरझाके ँ अपन आजीविका-भ्रमणक क्रममे एहू कुप्रथा दिस ध्यान गेलनि । नशाखोरीके ँ हतोत्साहित कयल जाय, नशाखोर सभक सामाजिक बहिष्कार होअय एहि बातके ँ ध्यानमे रखैत सीमन्तिनी आख्यायिकामे परमेश्वरझा अवसर निकालि समाज-सुधारक अपन प्रवृत्तिके ँ स्वर देलनि अछि । चित्रवर्माक पुरोहित जखन सीमन्तिनीक विवाहक प्रस्ताव लऽ कऽ निषध देशक राजाक ओतऽ पहुँचैत छथि तँ निषधराज एकहि बेरमे हुनक प्रस्तावके ँ एहि कारणे ँ स्वीकार कऽ लैत छथिन जे आगन्तुक घटक भङेरी नहि छथि । भंगसेवनक प्रति अपन अरुचि ओ घृणा व्यक्त करैत निषधराज, चित्रवर्माक संस्कार ओ रुचिक प्रति आश्वस्त होइत छथि ।

परमेश्वरझा अपन कथाक परिवेशक अनुरोधे ँ बरियातीक भव्य वर्णन तँ सीमन्तिनीमे करैत छथि मुदा ई अनावश्यक प्रदर्शन तत्कालीन समाजमे एकटा कुरीतिक रूप धारण कऽ लेने छल । राजा-महाराजा, सामन्त-जमिन्दार लोकनिक प्रदर्शनक प्रवृत्तिक कारणे ँ सम्पत्तिक अपव्यय तँ होइते छल, संगहि ओहि वर्गमे विवाहक अवसरपर बहुधा मारि-फसाद सन अशोभन दृश्य उपस्थित भऽ गेल करैत छल । परमेश्वरझा अपन टिप्पणीमे एहि वैवाहिक प्रदर्शनपर कठोर प्रहार करैत देखल जाइत छथि ।

एहि सबसँ प्रतीत होइत अछि जे हुनक आलोचनात्मक दृष्टि भारतीय समाजक अनेक कुप्रथापर सबपर छलनि, जकरा समाप्त होयब ओ आवश्यक मानैत छलाह ।

आख्यायिका कहबाक तात्पर्य

'सीमन्तिनी' मैथिली गद्यमे रचित कथात्मक कृति थिक । एकरा मिथिलामोदमे 'सीमन्तिनी-आख्यायिका' नामसँ प्रकाशित कयल जाय लागल । 'सीमन्तिनी' गद्यात्मक कृतिके ँ रचयिता अपने आख्यायिका कहने छलथिन अथवा ओ मोद-सम्पादक दिससँ जोड़ल गेल छल से कहब कठिन अछि ।

संस्कृत काव्यशास्त्रमे गद्यमय कथात्मक काव्य-विधाक दुद गोट भेद कहल गेल अछि- आख्यायिका ओ कथा । दण्डी यद्यपि दुनूके ँ एके वस्तु मानैत छथि । परन्तु दुनूके ँ

दुइ गद्यात्मक काव्यरूप माननिहार द्वारा आख्यायिकाक उदाहरण **हर्षचरित** तथा कथाक उदाहरण रूपमे **कादम्बरी**कें राखल जाइछ । आख्यायिकामे सत्य घटनाक वर्णन रहैछ आ कथामे कल्पित घटनाक । हर्षचरितक पात्र ओ घटना जेना इतिहासक सत्य वस्तु मानल जाइछ, तहिना पौराणिक पात्र ओ घटनाकें सत्य वा ऐतिहासिक मानि पौराणिक पात्र ओ घटना-सूत्रक आधारपर रचित **सीमन्तिनी**कें आख्यायिका कहल गेल प्रतीत होइत अछि ।

सीमन्तिनी ओ सुदर्शनोपाख्यान

एहि ठाम उल्लेखनीय जे मिथिलामोदक जाहि उद्‌गारसँ **सीमन्तिनी-आख्यायिका** छपब आरम्भ भेल छल, ओही उद्‌गारसँ हरिनारायणझा, व्याकरणतीर्थ द्वारा लिखित कथात्मक गद्यकृति **सुदर्शनोपाख्यान**क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जकर प्रथम परिच्छेद तथा अग्रिम परिच्छेदक एक अंश मात्र छपि सकल । सम्भव अछि जे उद्‌गार 20 सँ 24, 49सँ 51 वा पश्चात् कोनो उद्‌गारमे परवर्त्ती अंश पूर्ण वा अपूर्ण छपल हो जे सब उपलब्ध ने भेल अछि । सुदर्शनोपाख्यानक आधार-स्रोत थिक भविष्यपुराण ।

अयोध्याक राजा ध्रुवसन्धिक अकाल मृत्युक बाद हुनक ज्येष्ठपुत्र (मनोरमासँ उत्पन्न) सुदर्शनक स्थानमे कनिष्ठ पुत्र (लीलावतीसँ उत्पन्न) शत्रुजितकें ओकर मातामह द्वारा राजा बना देल जाइछ । मनोरमा अपन अल्प वयसक पुत्र सुदर्शनक प्राणरक्षार्थ पड़ाय भारद्वाज मुनिक आश्रममे शरण लैत छथि, कारण शत्रुजितक मातामह उज्जयिनी-नरेश युधाजित अपन दौहित्रक राजत्वक सुरक्षार्थ सुदर्शनक हत्याक प्रयत्न आरम्भ कऽ दैत अछि ।' कथा एतबहि धरि आबि सकल । प्रायः आगाँ विभिन्न प्रकारक घटनाक पश्चात् सुदर्शन द्वारा पुनः अयोध्याक राजसिहासन प्राप्त करबाक वर्णन होयबाक छल होयतैक ।

विचारणीय ई जे **सीमन्तिनी** ओ **सुदर्शन** दुहूक कथानक पौराणिके अछि, तखन एकटाकें आख्यायिका आ दोसरकें उपाख्यान कहबाक की आधार । जँ ई कही जे नायिका प्रधान कथाकें आख्यायिका आ नायक-प्रधान कथाकें उपाख्यान संज्ञा देल गेल तँ इहो सिद्धान्त मान्य नहि भऽ सकैछ, कारण पश्चात् काल नायिका प्रधान गंगाधरमिश्र रचित **सुकन्योपाख्यान** (पद्यकथा), त्रिलोचनझा रचित **शकुन्तलोपाख्यान** (कथात्मक गद्यरचना) मिथिलामोदेमे प्रकाशित होइत रहल छल । दोसर दिस मोदहिमे प्रकाशित म. म. मुरलीधरझाक **अर्जुन तपस्या** तथा मुकुन्दझा (फुलशरा)क **कुमारी तपोव्रत** वा **गिरिजोद्‌वाह** सन पौराणिकी कथात्मक गद्य-रचनाकें कोनो काव्यशास्त्रीय अभिधान देले ने गेल ।

मिथिला मोदक 17-19म उद्‌गारमे 392म पृष्ठक बाद पहिने **सुदर्शनोपाख्यान** एकसँ आठ पृष्ठ धरि छपल अछि । तकरा अव्यवहित पश्चात् पुनः एकसँ आठ पृष्ठ धरि **सीमन्तिनी-आख्यायिका** छपल अछि । दुनू थिक पौराणिकी कथानकपर आधारित गद्यरचना । मूल आधार स्रोत समान प्रकृतिक होइतो दुनूमे प्रचुर भिन्नता अछि । पात्र-सृष्टि,

घटनाक संसाधन, वर्णन, वैचारिक दृष्टिकोण इत्यादिमे **सुदर्शनोपाख्यान**क यद्यपि अल्पांशे छपल अछि तथापि ओकर आरम्भिको अंश देखलासँ सम्भावित पूर्णांशक सम्बन्धमे अनुमान कयल जा सकैछ । **सुदर्शनोपाख्यान**मे पुराणेतर अभिनव पात्रक अभाव अछि । घटना सबमे पौराणिके सूत्रक अनुसरण अछि । वर्णनक अवसर राजाक ससैन्य शिकार-यात्रा, वनक स्वरूप, बनैया जन्तु, राजा ओ सिंहक युद्ध, पुनः राजाक दुइ गोट श्वसुरक परस्पर युद्धक प्रकरणमे वर्णनक अवसर आयल अछि । एहि वर्णन सबमे पुराणक अथवा संस्कृत काव्य-नाटकक वर्णनीय वस्तु ओ शैलीक अनुसरण कयल गेल अछि । अनेक एहन स्थल सभ प्रसंगतः अवश्य आयल अछि जतऽ लेखक अपन कल्पना ओ अभिनव रूपक वर्णनक चमत्कार देखा सकैत छलाह, किन्तु एहन स्थलपर लेखक पाठककेँ स्वयं अनुमान कऽ लेबाक निर्देश दऽ दैत छथि । तेँ वर्णनमे कोनो नवीनता नहि । समसामयिकताक नामपर अनवधानमे लसकर, जहलखाना, शिकारमे गोली चलायब, बन्दूकसँ गोली चला देब, गोलीक वर्षाक उल्लेख पारम्परिक स्वरूपक वर्णनमे अनसोहाँत पेओन सन प्रतीत होइछ । अतः एकर कथा-संरचनाकेँ उपाख्यान कहब उचिते । परन्तु **सीमन्तिनी-आख्यायिका**मे से बात नहि अछि ।

विद्वत्ताक आ रोचकताक समागम

सीमन्तिनी-आख्यायिकामे कथासूत्र ओ मुख्य पात्र पौराणिक अछि, शेष सकल रमणीयार्थक उपादान रचयिताक अपन सृष्टि थिकनि । पौराणिक पात्रक अतिरिक्त अनेक प्रसंगोपयुक्त स्त्री ओ पुरुष पात्र सभ अभिनवे अछि जे कथानककेँ अतिशय स्वाभाविक ओ मनोरंजक बनबैत बहुतो ठाम कथानककेँ नव दिशा दैत अछि । अनेक अभिनव छोट-छोट घटनाक सृष्टि भेल अछि । सामाजिक परिवेश ओ व्यवहारादिमे पौराणिकतासँ सर्वथा भिन्न अपन समसामयिक परिवेश, परिस्थिति इत्यादि सार्थक ओ रोचक रूपमे सन्निविष्ट भेल अछि । ओहिमे समसामयिक सामाजिक चिन्तन, सुधारवादी विचारधारा इत्यादि सेहो सहजे देखल जा सकैत अछि । जाहि विषयक वर्णनक प्रसंग अबैत अछि तकरा पाठकक अनुमानपर नहि छोड़ि लेखक स्वयं विस्तारसँ कहि जाइत छथि । प्रत्युत अनेक ठाम टिप्पणीमे सप्रमाण विस्तारसँ औरो स्पष्ट कऽ दैत छथि ।

पहिल मार्गदर्शक प्रयोग

एहि रूपेँ **सुदर्शनोपाख्यान** ओ **सीमन्तिनी-आख्यायिका**मे बहुशः तात्त्विक भिन्नता देखल जाइत अछि । दुनू गद्यरचनाक प्रकृति-प्रवृत्ति भिन्न छैक । तेँ ओकर काव्यशास्त्रीय अभिधान समान नहि देल जा सकैत अछि । समीचीनो नहि होयत । पौराणिक पात्र, पौराणिक कथा-सूत्र तथा पौराणिक शैलीक वर्णनसँ युक्त कथात्मक गद्य-रचनाक पारम्परिक अभिधान **उपाख्यान**, तेँ **सुदर्शनोपाख्यान** अथवा अन्य **उपाख्यानान्त** शीर्षक सार्थक अछि । परन्तु म. म. परमेश्वरझा रचित **सीमन्तिनी** विषयक कथाकृतिकेँ

आख्यायिका कहब सेहो खूब उपयुक्त नहि प्रतीत होइछ । कारण, ओहिमे आख्यायिकाक समग्र लक्षण घटित नहि होइछ । पौराणिक मुख्य पात्र ओ क्षीण कथासूत्र पौराणिक अथवा ऐतिहासिक रहने औपचारिक रूपसँ सत्य कहल जा सकैत छैक, किन्तु शेष अनुपूरक पात्र-पात्री ओ सकल कथात्मक पुष्कल उपादान समकालिक सामाजिक परिवेशक आधारपर रचयिताक स्वकल्पिते छनि ।

बीसम शताब्दीक आरम्भ धरि भारतीय साहित्यमे पाश्चात्य साहित्यक प्रभावेँ उपन्यास नामक कथात्मक गद्य विधाक खूब प्रचार भऽ गेल छल । विशेषतः मैथिलीक निकटवर्त्ती भाषा बंगलामे । म. म. परमेश्वरझा उपन्यास विधासँ परिचित छलाह । संस्कृतक प्राचीन गद्यात्मक काव्यरूप कथा-आख्यायिका एवं उपन्यासक अन्तरकेँ नीक जकाँ जनैत छलाह । ई हुनक नायिका सीमन्तिनी **आख्यायिका** ओ **उपन्यास** दुनू प्रकारक कृति पढ़बामे अभिरुचिसँ सिद्ध होइत अछि ।

उपन्यासक सकल अवयव समकालिक परिस्थितिसँ गृहीत, लेखकक स्वकल्पित रहैत छल । एतेक धरि जे ऐतिहासिको पृष्ठभूमिक उपन्यासमे समकालिकताक प्रभाव नीक जकाँ रहितहि छल । अतः **सीमन्तिनी**क स्रष्टा म.म.परमेश्वरझा अपन गद्यात्मक दीर्घ कथाकृतिकेँ सहज रीतिसँ उपन्यास कहि सकैत छलाह । से नहि कहि आख्यायिका कहबाक पाछाँ प्रायः हुनक संस्कृत पृष्ठभूमि ओ रचनाक पौराणिक आधार मात्र रहल होयतनि । सीमन्तिनीक कथात्मकताकेँ कथा-स्रोतक पौराणिक होयबाक कारणे भनहि आख्यायिका कहल गेल हो परन्तु कथाक पल्लवन, वर्णन-विन्यास एवं वैचारिकतामे समकालिकता एवं आधुनिकताक कारणे ई पूर्णरूपमे उपन्यासे थिक । पौराणिको सन्दर्भक गद्यात्मक कथाकृति अर्थात् उपन्यासमे समकालिकताक समावेशक दृष्टिएँ सीमन्तिनीकेँ पहिल मार्गदर्शक प्रयोग कहल जा सकैछ ।

मैथिलीक आद्य उपन्यास

एहि अर्थमे, मैथिली साहित्य विषयक साम्प्रतिक ज्ञान-सीमामे म.म.परमेश्वरझा द्वारा रचित **सीमन्तिनी**केँ समसामयिकता, स्फीत दृष्टि एवं युगबोधसँ सम्पन्न मैथिलीक प्रथम कलात्मक औपन्यासिक कृति होयबाक श्रेय निर्विवाद रूपसँ देल जा सकैत अछि । यद्यपि हम स्वयं पूर्वक अपन विभिन्न लेख सबमे **मोहिनी-मोहन**केँ मैथिलीक प्रथम उपन्यास कहने छलिऐक, किन्तु तावत **सीमन्तिनी**क अपूर्ण ओ विखण्डिते रूप भेटि सकल छल । ओहि आधारपर कोनो निष्कर्षपर पहुँचब सम्भव नहि छल । अनुसन्धानक क्षेत्रमे कोनो निष्कर्ष तावते धरि अन्तिम कहल जाइत अछि जावत धरि ओकरा खण्डित करऽवला कोनो नव प्रमाण नहि भेटि जाइत अछि । से भेलापर अपनहु मतक खण्डन आवश्यक भऽ जाइछ । आब जखन **सीमन्तिनी-आख्यायिका**क सम्पूर्ण रूप उपलब्ध भऽ गेल अछि तँ ओकर सम्यक् मूल्यांकन एवं महत्त्वक प्रतिपादन सम्भव अछि ।

पूर्वहि सिद्ध कयल गेल अछि जे **सीमन्तिनी** भनहि खण्डशः प्रकाशित भऽ सोलह वर्षमे सम्पन्न भऽ सकल परन्तु एकर सम्पूर्ण रूपक रचना 1904 सँ 1905 इ.क मध्य सम्पन्न भेल छल । 1906 इ.क उत्तरार्द्धसँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल । **मोहिनी-मोहन उपन्यास**क प्रकाशन 1908मे भेल छल । अतः **सीमन्तिनी, मोहनी**सँ ज्येष्ठा सिद्ध होइत छथि ।

सीमन्तिनी ओ मोहिनी-मोहन

आब जखन **सीमन्तिनी**क संग **मोहिनी-मोहन**क तुलना करैत छी तँ दुनूक प्रवृत्तिमे पैघ अन्तर बुझना जाइत अछि । **मोहिनी-मोहन** आधुनिक कालक सामाजिक जीवनक घटनाकेँ अपन औपन्यासिक आधार तँ बनबैत अछि, सामाजिक कुरीतिक दिस उन्मुखता तँ देखबैत अछि, ओहि कुरीतिक बोझ तरमे दाबल युवा मनक प्रेम-बीजाङ्कुरकेँ फुटैत देखयबाक साहस तँ करैत अछि; परन्तु अविश्वसनीय जादू आ तिलस्मी चमत्कारकेँ लक्ष्यसिद्धिक साधन रूपमे प्रयोग उपन्यासकेँ श्लथ ओ दुर्बल बना दैत छैक । ओना अपना समयक एकटा साहसिक ओ रुचि-रंजकतापूर्ण औपन्यासिक प्रयोग अवश्य कहल जा सकैत अछि । दोसर दिस सीमन्तिनी-आख्यायिकामे पौराणिकी कथानकक दैवी चमत्कारक प्रसंगकेँ ग्रहणे ने कयल गेल ।

लोकवृत्त ओ औपन्यासिक सौन्दर्य

सीमन्तिनीक रचनाकार पौराणिक पात्र ओ घटनाकेँ अपन उपन्यासक कथा-वस्तुक आधार बनबितो अपन समकालिक परिवेशसँ सकल उपादान ग्रहण कयलनि अछि । **सीमन्तिनी**मे समकालिक समाजसँ गृहीत राजवृत्त ओ लोकवृत्त-दुहूक समावेश भेल अछि । एहिमे एकटा राजकुमारीक कथा कहल गेल अछि, तेँ राजवृत्तक होयब तँ स्वाभाविके जकरा लेखक अपन समकालीन स्वानुभूत राजकीय परिवेशसँ ग्रहण कयलनि अछि । परन्तु राजवृत्तक तुलनामे लोकवृत्तक पलड़ा बहुत गुरुतर ओ मूल्यवान अछि । लेखक उपन्यासक कथावस्तुक अंगरूपमे समसामयिक परिवेश, लोकजीवन, लोकव्यवहार, लोकरुचि, लोकमतकेँ ताहि तरहेँ आबद्ध कऽ देने छथि जे **सीमन्तिनी** अपना युगक सर्वाधिक विश्वसनीय ओ उद्देश्यपूर्ण, युगबोध-वाहक, ज्ञानवर्द्धक, सौन्दर्य-सौरभसँ सम्पन्न, आनन्ददायक मैथिलीक प्रथम उपन्यासे नहि, अपितु एकटा अनुपम कृति बनि गेल अछि । इहो कहल जा सकैत अछि जे ई मिथिलाक लोकवृत्त(Folklore)क एकटा आकर्षक सूत्रात्मक कोषे बनि गेल अछि ।

मैथिलीक आद्य औपन्यासिक कृति होयबाक करणे सीमन्तिनीक अपन ऐतिहासिक महत्त्व तँ छैके, ताही संग एकर महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य अछि एकर सूचना-पक्ष । ओहिमे निहित सामाजिक दर्शन । सीमन्तिनीक लेखनक प्रयोजन मैथिली-भाषा-साहित्यक

श्री-संवर्धन एवं पाठकक मनोरंजन तँ छले, किन्तु ओहि संग अन्यहु आनुषंगिक उद्देश्य सब सन्निहित छल । पाठकके केवल मनोरंजने नहि, अपितु शास्त्र ओ समाज विषयक ज्ञान सेहो अनायासे प्राप्त भऽ जाइक, तें रचनाकार अपन कृतिमे अपन गम्भीर शास्त्रीय ज्ञान ओ विस्तृत सामाजिक अनुभवकें समवेत रूपमे सन्निविष्ट कऽ देलनि अछि । आ एक शताब्दी बितलाक बाद आब समाज-शास्त्री ओ इतिहास-विशेषज्ञ लोकनिक हेतु 'सीमन्तिनी आख्यायिका' एक अनुच्छिष्ट स्रोत-सामग्रीक रूपमे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध भऽ सकैत अछि । परमेश्वरझा सुस्पष्ट सामाजिक चिन्तनक साँचामे सीमन्तिनी सन पौराणिक पात्रीकें गढ़ि मैथिली गद्य-साहित्यमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर कृत वर्णरत्नाकरक परवर्त्ती मैथिली गद्यक साढ़े पाँच सय वर्षक दीर्घ सुषुप्तिक पश्चात् एकटा नवीन अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक उन्मेष सहित दिशा-संकेत देलनि जे साहित्य मनोरंजन मात्रक साधन-सामग्री नहि, अपितु समाजक पथ-प्रदर्शन सेहो एकर धर्म थिक ।

मैथिलीए नहि, अपितु अपना समयक भारतीय साहित्यमे अपन प्रयोगधर्मिताक कारणे श्रेण्य कृतिक कोटिमे स्थान पयबाक योग्यता-सम्पन्न **सीमन्तिनीक** स्रष्टा म.म. परमेश्वरझाक गम्भीर सामाजिक चिन्तन जाहि रूपमे ओहिमे वा अन्यो कृतिमे व्यक्त भेलनि अछि से बंगालक राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर किंवा बंकिमचन्द्र चटर्जीसँ- मिथिलाक दृष्टिएँ कनेको न्यून नहि आँकल जा सकैछ । जँ परमेश्वरझा बंगालमे भेल रहितथि तँ अवश्ये बंगाली बुद्धिजीवी लोकनि हुनका उपर्युक्त महापुरुष लोकनिक श्रेणीमे स्थापित कऽ देने रहितथिन । मुदा दुर्भाग्य जे ओ मिथिलामे भेलाह जतऽ ककरो कीर्त्ति पर्यन्तकें अपकीर्त्ति बनयबामे हमरा लोकनि नहि धखाइत छी । संस्कृत विद्या ओ संस्कृत पण्डितवर्ग मात्रकें खिधांस आ कुचेष्टा सहित निन्दित-लांछित करबेमे, अवहेला देखयबेमे अपन उतकिरना बुझैत छी । यैह अछि अन्तर बंगालक प्रगतिशील बुद्धिजीवी ओ मिथिलाक तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवीमे । दीर्घ कालावधिमे खण्डशः प्रकाशित, विकीर्ण रूपमे दीर्घकाल धरि अनभिज्ञात दबल-पड़ल मैथिलीक एक अनमोल, महत्त्वपूर्ण गद्य कृति **सीमन्तिनी आख्यायिकाकें** अक्षत रूपमे प्रस्तुत करब सेहो दीर्घकालिक कठिन प्रयत्न-परिणतिए थिक । मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक पहिल महत्त्वपूर्ण साहित्यिक गद्यकृति 'सीमन्तिनी'कें समग्र रूपमे प्रकाशित करैत संकलयिता-सम्पादककें कतबा प्रसन्नता ओ सन्तोष भऽ सकैछ, से सहज अनुमेय । आशा करैत छी जे एहने अनुभूति मैथिलीक विद्वान् ओ समालोक लोकनिकें सेहो अवश्य होयतनि ।

श्रीरामदेवझा

6 अक्टूबर 2011
(विजयादशमी)

कबिलपुर
लहेरियासराय
दरभगा-846001

सीमन्तिनी आख्यायिक

I.

जय लम्बोदर करिवदन सिद्धि सदन शुभनाम ।
सुख सन्तति सम्पति सुमति पुरिय सकल मनकाम ॥

भारतवर्षक अन्तर्गत आर्यावर्त्त स्थानमेँ सनातन धर्मधारक दुर्जनशासक अनेक यज्ञकारक शरणागतपालक सर्वसुखदायक अवदातकर्मा चित्रवर्मा नाम राजा छलाह । ओहि राजाकेँ विविध गुणोपेता उत्तम कुलोद्भूता रमणीयाकृति रतिमूर्त्ति बहुत पत्नी छलथीन्हि । यद्यपि प्रति पत्नीमेँ शौर्य औदार्य तेज आदि गुणसंपन्न अनेकानेक पुत्र छलथीन्ह तथाऽपि एक कन्याक अत्यन्त अभिलाषा छलैन्ह । यथार्थमेँ कन्यारत्न परम प्रीति ओ अनुकम्पापात्र होइत अछि । मनुओं अपन धर्म संहितामेँ पौत्र दौहित्रकेँ तुल्य मानलेँ छथि । अनन्तर कतेक देवता पितरक आराधनासँ बहुत दिनेँ एक कन्या जन्म लेलथीन्हि । राजा हुनक जातकर्मादि संस्कार संपन्न कय एगारहमा दिन ग्रहशान्तिपूर्वक "सीमन्तिनी" नाम रखलथीन्ह ।

एक दिन एही आनन्दक प्रस्तावमेँ महाराज बहुत भारी सभा लगायकेँ बैसल छलाह । जाहिमेँ दक्षिण बाम भागमेँ अपन अपन यथोचित स्थानपर राजपरिवारक प्रधान प्रधान लोक बैसि सभाक शोभा बढ़ाय रहल छलाह, एक दिश नगरक महाजनवर्ग दोसर दिश राजकर्मचारी गण समयोचित वस्त्र ओ आभूषण धारण कयलेँ उपस्थित छलाह, संमुखमेँ आज्ञाक प्रतीक्षा करैत सेनापति लोकनि ठाढ़ छलाह । एहि अवसरमेँ वृद्ध ओ यथार्थवादी उत्तमोत्तम विद्वद्वर्गकेँ बजाय श्रीयुत महाराज अपन सिंहासन लग बैसैक आज्ञा दय ज्यौतिषी लोकनिकेँ पुछैत भेलथीन्ह जे दैवज्ञवर्ग ! यद्यपि अपने लोकनि परम वृद्ध तथा हमर दादाजीक सभापण्डित थिकहुँ तखन अपने लोकनिक अध्यक्ष सभामेँ कोनो प्रगल्भताक कथा करी से हमरा अनुचित थीक तथापि कौतुकी चित्त नहि मानैछ तेँ एतबा प्रश्नक भार ओ परिश्रम दै छी जे जनिक जन्म भेल छैन्ह तनिक कर्म केहन छैन्ह ।

एतबा कथा बाजि महाराजकेँ चुप भेला उत्तर एक परम वृद्ध सामुद्रिक

तथा जातकफल कहबामेँ अतिविलक्षण कथाविचक्षण शुभलक्षण गणकशिरोभूषण तत्क्षणमे बाजि उठलाह- करुणानिधान ! आइ काल्हि एहि तरहक सौजन्य ओ विनीत भाव दुर्लभ अछि, साधारणो लोकके अपनासौं वृद्धक किञ्चितो धाख ओ संकोच नहि होइ छैन्ह परन्तु श्रीमानके एतेकटा साम्राज्य भेलहुँ राज्यमदक लेशमात्रो नहि अछि ।

पृथ्वीनाथ ! एहना विषयमे वृद्धलोकसौं परामर्श करबे उचित थीक, शास्त्रीय विचारमे संकोच की । प्रभुवर हम जहाँ तक जातक कन्याक कुण्डली देखिके विचार कयल अछि सर्वथा उत्तम बूझि पड़ैत अछि अति दीर्घायु ओ भाग्यवती होइतीहि । तथा गौरीक सनि सौभाग्यवती, दमयन्तीक सनि सुस्वरूपा, सरस्वतीक सनि कलाभिज्ञा, लक्ष्मीक सनि सर्वाभिलाषापूरिका, अदितिक सनि सुप्रजा, सीताक सनि पतिव्रता, चन्द्रिकाक सनि लोचन सुखदायिनी होइतीहि, तथा अत्युत्तम राजकुलमे विवाहसम्बन्ध भेलापर बहुत दिन पर्यन्त पतिक सङ्ग भोग विलास कय आठटा पुत्र और एक कन्या उत्पन्न करतीहि ।

एतबा कहि ओहि बूढ़ ज्यौतिषीके चुप भेलापर सभासदसहित महाराज हुनक वाक्यामृतसँ परितृप्त भय आशाधिक पारितोषिक प्रदान कय हुनका प्रसन्न कयलन्हि ।

अनन्तर ओहि प्रतिष्ठित विद्वान सभक संगे एक नवीनो ज्यौतिषी घुसियायके गेल रहथि, यद्यपि विद्यामे ओहो नीके छलाह परन्तु स्वभावक किच्छु तीव्र, से बाजि उठलाह जे महाराज ! आओर सभ तँ नीके छैन्ह परन्तु एकटा योग एहन लागल छैन्ह जे चौदहम वर्ष मध्य वैधव्य अवश्य होअ ।

कुलिश सम कठोर ई कथा कानमे पड़ितहि सभाक सकल लोक व्याकुल चित्त भय केवल देखादेखी करय लगलाह परन्तु कोनो तरहक वार्तालाप केओ परस्पर करताह से सामर्थ्य नहि होइन्ह । राजा तँ ई सुनितहि कतेको कालपर्यन्त शून्यहृदय भय भित्तिलिखित चित्र जकाँ मौनी निश्चल बैसल रहलाह ।

पश्चात् अपनहि किच्छु चैतन्य कय ईश्वरेच्छाधीन निखिल प्रपञ्चस्थिति विचार कय यद्भविष्य पक्षावलम्बी भय चुप्पहिँ सभ[ा]सँ उठि एक एकान्त कोठलीमे शोकशय्योचित पलङ्गपर चुप-चाप पड़ि रहलाह । यद्यपि लोकक स्थिति ओ सभाक रुखि गमि ज्यौतिषीजीके अपनहुँ बहुत पश्चात्ताप भेलैन्ह, विशेषतः एहि विषयक क्षोभ भेलैन्ह जे अपना एको छदाम भुरसी वा सगुन नहि भेटलैन्ह तँ लज्जासँ घाड़ नीचाँ खसौले पतड़ा पागमे खोसैत चुप-चाप उठिके

विदा भेलाह । तदुत्तर आओरो सभासद लोकनि निरुत्साह भेल अपन अपन घर फीरि गेलाह ।

यद्यपि ओहो ज्यौतिषी कोनो मिथ्या कथा नहि बाजल छलाह परन्तु अनवसरमे̐ सत्यो कथा बजले̐ लोक अपमानित होइत छथि, यदि उऐह कथा कालान्तरमे̐ वा शब्दान्तरमे̐ कोनो आन युक्तिसँ प्रकाशित करितथि तँ एहन दशा नहि होइतैन्ह परन्तु आब पच्छतौले̐ हो की । बीतल अवसर फेरि हाथ नहि आबि सकैत अछि ।

पहिले̐ तँ ई विषय सभ बहुत गोप्य राखल गेल जे अन्तःपुरमे̐ ककरहु वार्त्ता नहि होय परन्तु प्रसिद्ध अछि जे 'षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः' अर्थात् जे बात छौ कानमे̐ पड़य से कहियो झापल नहि रहि सकय । अन्ततोगत्वा ई सभ गप्प कानाकानी होइत रनिवास तक पहुँचल । कथा सुनितहिमात्र हाहाकारपूर्वक महान् आक्रन्द होबय लागल ।

वास्तवमे̐ एहन विषय सुनले̐ कठोर चित्त पुरुषहुकाँ धैर्य नहि रहि सकैत अछि आओर स्त्रीगणक हृदय तँ अत्यन्त सदय ओ स्वभावतः मृदु होइत छैक तकर कथै की । ओ आक्रन्द सुनितहि जेना कोनो उत्पातक समयमे̐ आकाशसँ भूमण्डलमे̐ तारागण टूटि खसैत अछि तेहिना दशो दिशासँ रनिवासमे स्त्रीक झुण्ड खसय लागल । क्यौ तँ दुइ चारि जनी एकट्ठा भय कानाफुसकी करय लगलीहि; क्यौ सभ केवल कानय लगलीहि, क्यौ सभ बाजथि जे महारानी लोकनि बेटी जमाइके̐ विवाह ओ द्विरागमनमे̐ देबाक हेतु एहि खनसँ नाना प्रकारंक वस्तुजात ओरिआयके̐ रखैत छलीहि अछि से आब ककरा लय रखतीहि ।

एक गोटे राजसम्बन्धिकहिमे̐सौं क्यौ परम बूढ़ि छलीहि से (महफा) सवारीसँ उतरितहि बाजय लगलीहि जे एहन शुभ अवसरमे̐ कोन अलच्छा एहि तरहे̐ असगुन कथा बाजल अछि, बाटमे̐ अबैत छलहुँ तखन प्रायः क्यौ बजैत छल जे उएह नवका ज्योतिषी बाजल अछि जे ओ कहिया शास्त्र पढ़लक ओ कहिया ऐलैक, ओकर तँ बापे हमरा लोकनिक ओहि ठामसँ तिलासकराँति ओ जूड़शीतलमे̐ तिल-जौक मोटा बान्हिके̐ लय जाइत छल । ओकर घरायन सदाक पुरहितिया थीक । ओकरा घरमे̐ पण्डित ज्योतिषी कहिया भेलैक जे राजाक ओहि ठाम आबि फल मिलाओत ।

ई सभ कोलाहल मचितहि रहय कि तावत्मे̐ एक बूढ़ा देवान (जे कैएक पुस्तिसँ राज्यक सेवा कयले̐ छलाह) ड्यौढ़ीपर आबि सभसँ प्रधान खवासिनीके̐ बजायके̐ कहलथीन्ह जे हमर स्वामिनी महारानी लोकनिसौं

साष्टाङ्गपात प्रणाम कहि निवेदन कय दिहैँ जे हुनका लोकनि व्यर्थ शोक कथीलय करैत छथि । राजद्वारमे अनेक तरहक लोक अबैत अछि, अनेक तरहक कथा बजैत अछि तकर विश्वासे कोन । कदाचित् एहने संशय थिक तँ जाहि शास्त्रमे अरिष्ट योग लिखित अछि ताही शास्त्रमे शान्ति ओ स्वस्त्ययनक विधियो लिखल अछि तेँ आइये दिनसँ नाना प्रकारक शान्ति-स्वस्त्ययन आरम्भ करा दै छी, कोनो चिन्ता नहि ।

खवासिनीक मुहेँ बूढ़ा देवानक संवाद सुनि सभ महारानी लोकनि धैर्य धारण कय शोककेँ बिसरैत भेलीहि । वास्तवमे काम क्रोध लोभ मोह हर्ष विषाद अमर्ष ईर्ष्या द्वेष इत्यादि यावत्पदार्थक वेग सभ कालमे एक तरहेँ नहि रहैत अछि किन्तु कालक्रमे ह्रस्ते होइत अछि तेँ महारानियो सभ स्वस्था भेलीहि । ओम्हर सीमन्तिनी शुक्लपक्षक चन्द्रिका जकाँ प्रतिदिन तेना बाढ़य लगलीहि जेना थोड़हि दिनमे सोड़ह कलाक कोन कथा तकर चौगुन चौंसट्ठि कलाक परिशीलन कय लेलन्हि ।

तात्पर्य ई जे जखन सीमन्तिनीकेँ पाँचम वर्ष छलैन्ह तखन महाराज हुनका अक्षरारम्भ करायकेँ एक कायथक नेनाकेँ नियुक्त कय देलथिन्ह जे वर्णमालाक्रमसँ सभ अक्षर ओ मात्रा लिखायकेँ गणितविद्यासम्बन्धी गुण भाग योग वियोग त्रैराशिक इत्यादि विषयमे बहुत उत्तम बोध कराय देलकैन्ह ।

तदुत्तर सातम वर्षसँ एक परम वृद्ध विद्वान्क द्वारा नीतिक ओ स्त्रीधर्मक शिक्षा देयाओल गेलैन्हि । दशम वर्षसँ परम प्रवीणा अपन धाइक बेटी[1] जे छलैन्हि से अन्तःपुरहिमे कामशास्त्राङ्गभूत ६४ कला सिखाबै लगलैन्हि । यथा-

गीत, वाद्य, आलेख्य, विशेषकच्छेद्य अर्थात् पुरुषकेँ चन्दनादिक ओ स्त्रीकेँ सिन्दूरादिक विन्यास, तण्डुल कुसुम बलिविकार, पुष्पास्तरण, दशनवसनाङ्गराग, मणिभूमिका कर्म, शयनरचन, उदकवाद्य, उदकाघात, चित्रयोग, माल्यग्रथन विकल्प, शेखरकापीडयोजन, नेपथ्यप्रयोग, कर्णपत्रभङ्ग, गन्धयुक्ति, भूषणयोजन, ऐन्द्रजाल, कौचुमारयोग अर्थात् सुभगङ्करण जाहिसँ शरीरमे सौन्दर्य विशेष होअय, हस्तलाघव, विचित्र शाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया, पानक रसरागासव योजन, सूचीवान कर्म, सूत्रक्रीड़ा, वीणा डमरूक वाद्य, प्रहेलिका, प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी), दुर्वाचक योग, पुस्तकवाचन, नाटकाख्यायिका दर्शन, काव्यसमस्यापूरण, पट्टिका वेत्रवानविकल्प, तक्षकर्म, तक्षण, वास्तुविद्या, रूप्यरत्न परीक्षा, धातुवाद, मणिरागाकरज्ञान, वृक्षायुर्वेद योग, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधि, शुकसारिकाप्रलापन, उत्सादन संवाहन केशमर्दनादि कौशल, अक्षरमुष्टिका कथन, म्लेच्छितविकल्प, देशभाषा विज्ञान, पुष्पशकटिका, निमित्तज्ञान, यन्त्रमातृका,

धारणमातृका, संपाठ्य, मानसी, काव्यक्रिया, अभिधान कोश, छन्दोज्ञान, क्रियाकल्प, छलितक योग, वस्त्रगोपन, द्यूतविशेष, आकर्ष-क्रीडा, बालक्रीडनक, वैनयिकविद्याज्ञान अर्थात् आचार शास्त्रक ओ हस्त्यादिशिक्षाज्ञान, वैजयिकी विद्याज्ञान अर्थात् अपराजितादि दैवीविजयविद्याक तथा शस्त्रविद्यादि मानुषीविजयविद्याक बोध, व्यायाम विज्ञान अर्थात् मृगयाविषयक नैपुण्य ६४ ।[2]

एवं प्रकारे बारहम वर्षमेँ सभ कला सीखिकेँ तैयारि भेलीहि । तेरहम वर्षक प्रवेश होइतहि हुनका शरीरसँ दुर्बल ओ सुकुमार शैशव बेचाराकेँ जबर्दस्तीसँ हरायकेँ परम प्रबल मत्त गजराज समान यौवन महाराज अपन अधिकार जमाय लेलन्हि ।

ई स्वभावसिद्ध विषय थीक जे जखन क्यौ राजा महाराज कोनो स्थानपर नवीन अधिकार (दख़ल कबजा)करै छथि तखन नवे नव अपन सलीका चलबैत छथि, ककरहु उच्चसँ नीच बनबैत छथि ओ ककरहु नीचसँ उच्च, से विषय एतहु होबय लागल अर्थात् जे सीमन्तिनीमुख नेना सभक सङ्ग खेलायबाक कारणे मलिनप्राय रहैत छल सैह आब विशेष प्रसाधित भय तेना उज्ज्वल रहैत अछि जेना ओ छबि-छटा देखि शरत्समयहुक चन्द्रमा सतत त्रस्त जकाँ स्रस्त भय कहुखन ग्रस्त, कहुखन अस्त होइत छथि ।

आँखि दुनू यौवन महाराजक बुद्धिमन्त्री ओ युद्धमन्त्रीक परम प्रधान पदवी पाबि अधीन पुरुषक प्रतिवक्रता धारण कय अपन प्रताप ओ पराक्रम जमबय लगलाह ।

नाकक दुनू पूड़ा तिलक फूल समान फुलायकेँ फलकि गेलाह । अति संकुचित कुच बेचारा जे पहिले दबल ओ नुकायल रहैत छल सैह आब प्रगल्भतासँ प्रव्यक्त भय क्रमशः उच्चहुसँ उच्च पदवी पाबय लागल । कात करोटक व्यक्तिक एहन उन्नति ओ गौरव देखि अमर्षी मध्य (कटि) दिन दिन खिन्न अन्ततः शून्यप्राय भय गेलाह ।

जङ्घामेँ यद्यपि देखबालय विशालता भेबो कयलैन्ह तथापि कार्यमेँ बहुत शिथिलता ओ मन्दता भय गेलैन्ह इत्यादि कहाँ तक कहानी कहू ।

एहि वयःसन्धिक शुभ अवसरमेँ एक दिन अपनि सखी सभक सङ्ग बैसिकेँ सीमन्तिनी गप-सप कय रहलि छलीहि कि ताहिमेँ प्रसङ्गवशेँ बाजि उठलीहि जे है लोकनि ! हमरा अपना शरीरमेँ थोड़ेक दिनसँ किछु विकार बूझि पड़ैत अछि अर्थात् अधिक काल अन्यमनस्का रहैत छी । चलबा फिरबामेँ आलस्य होइत अछि । कहुखन शरीरमेँ गुदगुदी जकाँ लागि उठैत अछि । एक

ठाम अधिक काल मन नहि लगैत अछि । इच्छा होइत अछि जे कहुखनकेँ फुलबाड़ी आदिमेँ टहली ।

ई कथा सुनि और सभ गोटे चुप्पे छलीहि परन्तु एक जनी सखी जे सभसौँ बयसेँ जेठि छलीहि (जनिक विवाह द्विरागमन भेल छलैन्ह प्रायः एक आध यात्रा आओरो सासुरसँ बसि आएल छलीहि) बाजि उठलीहि–

दाइ जी ! जे अहाँ कहि अयलहुँ अछि से सत्य, हमरहु किछु भेद अवश्य बूझि पड़ैत अछि परन्तु एकर कोनो अन्देशा नहि, प्रायः एहि अवस्थामेँ अनेक कन्याकेँ एहि तरहक विकार भय जाइ छैन्ह । चरक सुश्रुत आदि आर्ष वैद्यकग्रन्थमेँ अनेक प्रकारक उन्माद रोग लिखै छथि ताहिमेँ एक प्रभेद (कामोन्मद)क पूर्व रूप बूझि पड़ैत अछि, यद्यपि निदानज्ञ चिकित्सकसँ एकर प्रतिकार असंभव । परन्तु एकर एकटा इयेह टोना छैक जे विवाह भेलेँ ई दुःख सहजहिँ छूटि जाइत छैक तेँ हम आइये जायकेँ श्रीमहारानी साहेबाकेँ कहै छिऐन्ह जे श्रीमहाराज साहेबकेँ कहि शीघ्र अहाँक विवाह कराय देथु चित्त स्वस्थ होएत ।

एतवा प्रस्ताव सुनितहि एक सखी (जनिक अवस्था तेरह वा चौदह वर्षक छलैन्ह, ओही वर्ष विवाह भेल छलैन्ह, प्रायः मधुश्रावणी धरि भेल छलैन्ह, परम अलगाहि छलीहि) दोसर सखीक कान लागि नहू–नहू कहय लगलीहि जे हा ! बड़की बहिनि केहनि अबूझि छथि जे ओहि जोतखीक कहल चौदहम वर्षक विषय सुनलो छैन्ह तैयो विवाहक चर्चा एखनहिं करैत छथि । ई दिन बितायकेँ जे होइत से होइत ।

यद्यपि ओ दोसरि सखी परम धीरा ओ बुद्धिमती छलीहि तेँ सीमन्तिनीक सन्निधिमेँ किच्छु उत्तर तँ नहि देलथीन्ह परन्तु सीमन्तिनीक कान ओतबा कथा सुनितहि अपनहिं ठाढ़ भय गेलैन्ह ।

वास्तवमेँ आत्माक ई स्वभाव छैन्ह जे अपन दुःखक विषयमेँ सतत सावधान ओ सशङ्क रहैत छथि ।

तदुत्तर सीमन्तिनी ओहि सखीकेँ पूछय लगलीहि जे है सखी ! ई छौँड़ी तोहरा कान लागि की कहैत छलहु ।

सीमन्तिनीक एतबा कथा सुनितहि ओ बेचारी अत्यन्त डराय गेलीहि तथा मनहि मन बिचारय लगलीहि जे "ई छौँड़ी केहनि अलगी अछि जे राजकन्याक सोझहि एहन कथाक प्रस्ताव उठौलक" प्रकाश रूपमे बाजय लगलीहि जे दाइजी ! ई कहैत छलि अछि जे एखन विवाहक कोन चर्चा,

कियेक तँ चौदहम वर्षमेँ विवाह भेलेँ पन्द्रहम सोडहम वर्षमेँ गर्भाधानक सम्भव । वैद्यकमे महर्षि सुश्रुत[3] तकर अत्यन्त निषेध कयलेँ छथि । विशेषत: राजकन्याकेँ अल्प-

II.

–अवस्थामेँ विवाह होयब उचित नहि, कियेक तँ ओहि अवस्थाक उत्पन्न पुत्रकेँ दृढ़ शौर्य ओ पराक्रम नहि भय सकैत छैन्ह जे राजा ओ राजपुत्रकेँ एक परमावश्यक [गुण] थीक, अतएव राजस्थानमेँ रीतियो इयेह अछि जे प्राय: सोड़हसौँ अधिक वर्ष भेलापर कन्यादान कयल जाइत अछि ।

एतबा कथा सुनि सीमन्तिनी फेरि पुछय लगलथीन्हि जे जोतखीक नाम की लैत छलि अछि । तखन ओ सखी फेर कहय लगलथीन्हि जे जोतखीक नाम ई कहैत छलि अछि जे चौदहम वर्षक विवाहमेँ जोतखीयो लोकनि विमत छथि कारण जे पञ्चदशाब्द, षोडशाब्द गर्भ ओ प्रसवमेँ ओ लोकनि परम अनिष्ट मानैत छथि, ओ बहुत भारी शान्ति स्वस्त्ययन करबैत छथि ।

यद्यपि ओ सखी एवं प्रकारेँ अनेक कथाक अपह्नुति (छल) कयलैन्ह, तथापि सीमन्तिनीक चित्तमेँ विश्वास नहि भेलैन्ह, ओ कहलथीन्हि–"सखी सभ ! तोहरा लोकनि अत्यन्त चतुरा छह तेँ अनेक छल–प्रपञ्च कय कथाक तत्त्व हमरा बुझय नहि दैत छह, परन्तु हमरा चित्तमेँ तोहरा लोकनिक कथाक एको रत्ती विश्वास नहि होइत अछि, बेस, आब एकरे पुछैत छियैक, ई स्वच्छ स्वभाव अछि, सत्य कथा कहति ।"

एतबा कथा बाजि ओहि छोटकी परिचारिका सहचारिकसौँ पूछय लगलीहि जे, गै ! ओहन शपथ तँ हमरा मुहसौँ नहि बहराइत अछि (अर्थात् स्वामीक), अपने देह थरथर कँपैत अछि, परन्तु तोहरा माइ–बापक शपथ थिकौक, सत्ये सत्ये कह, कोनो डर नहि, सत्यवक्ता लोक इहलोक–परलोक सर्वत्र निर्भय रहैत अछि आओर असत्यवादीक सर्वत्र निरादर होइत छैन्ह ।

एवं प्रकारेँ यथार्थ कथा बुझबा लय राजकन्या[केँ]दृढ़ निर्बन्ध देखि ओ छोटकी सखी डराइत- डराइत आन–आन सखीक मुँह तकैत पूर्वोक्त ज्यौतिषीक कहल चतुर्दश वर्षमेँ सम्भावि–वैधव्य–समाचार वाक्स्खलनपूर्वक कहि सुनौलकैन्ह ।

एतबा कथा सुनतहि जहिना आकस्मिक बज्राघातसौँ फड़लि–फुलाइलि तरु–शाखा तत्कालहि दग्धा ओ भग्ना भय खसैत अछि अथवा चैत्र मासक प्रचण्ड पछबा ब–(तास)सातक झोँकसौँ झुकि–झुकि कोमल नूतन लता

मुरझाय-मुरझायकें छहोछित भय छिड़ियाय जाइत अछि तहिना सीमन्तिनी ठाढ़ि छलीहि कि मूर्छित भय धड़ाक दय नीचा खसि पड़लीहि ।

एतबा दृश्य देखितहि चारू दिशसौं सभ सखी हाहाकार करैत दौड़लीहि ।

जहिना रौद ओ बसातक तीव्रता ओ झोँकसौं मुरझाइलि ओ खसलि लतामें मालिनि सभ शीतल जलसौं पटाय कोनो खम्ही वा कड़चीक अवलम्ब दय स्थिर करैत अछि, तहिना सखी सभ अपन-अपन जाँघ अवलम्ब दय उत्तमोत्तम गुलाब ओ केओलाक जलसौं सर्वाङ्ग सिक्त कय तथा कातरक [कतराक ?] सीर ओ कर्पूरसौं मिश्रित श्रीखण्ड चन्दनक अनुलेप छातीपर लगाय सीमन्तिनीकें कथंकथमपि बहुत यत्नसौं बैसोलन्हि ।

यथार्थ स्त्रीकें एहिसौं दारुण दुःख कोनो नहि होइत छैक तखन सीमन्तिनीकें एतबा क्षोभ भेलैन्ह से कोन आश्चर्य ?

ई समाचार क्षणहि भरिमें सम्पूर्ण रनिवासमें फैलि गेल । महारानी लोकनि सुनितहि मात्र अपना-अपना महलसौं दौड़िकें राजकुमारीक समीप पहुँचि गेलीहि ओ जेना समुद्रक लहरि बड़वानलसौं अन्तःसन्तप्ता ओ वायुगुणें बहिःशीतला रहैत अछि तेना ओहो लोकनि शोकाग्निसौं अन्तःकरणमें दग्धा होइतहु सीमन्तिनीक प्रत्ययार्थ बाह्यमें सौम्यमूर्त्ति धारण कय बोल-भरोस देबय लगलथीन्हि ओ कहलथीन्हि-"बच्चा ! अहाँ ककरो फुसि-फासि कथा सुनि कय एहनि अधीर कियेक होइत छी ? एहि छौँड़ीक तँ ओहि दिन जन्मो नहि भेल होयतैक, कदाचित् जन्म भेलो होइक तँ पाँच-छओ माससौं अधिक होयबाक सम्भव नहि, तखन ई की जानय गेलि ? ई तँ जन्मी अगिलगाउनि थीकि, एकरा हमरा लोकनि आइये अन्दरसौं निकाल-बाहर करैत छी, एहि घरक सदाक बूढ़ा ज्यौतिषी अहाँक सौभाग्यक बहुत वर्णन कयने छथि, तथा अहाँक कल्याणार्थ रात्रि-दिन अनेक प्रकारक शान्ति-स्वस्त्ययन होइतहि रहैत अछि, से सभ की व्यर्थ भय जायत ? एहन कथामें कदाचित्हु विश्वास नहि कर्त्तव्य थीक, विशेषतः राजकन्याकें (जनिक वीरपत्नी होयबाक सम्भव छैन्ह) उत्साह, धीरता, प्रौढ़ता आदि गुण अवश्य होयबाक चाही, हमरा लोकनि निश्चय कहैत छी कोनो अन्देशा नहि ।"

एतबा कथा कहि माय हाथ धयकें अपना खण्डमें लय गेलथीन्हि ओ स्वस्था कय अशन-शयनादि दिनकृत्य सभ करबैत भेलथीन्हि । सीमन्तिनी माइ-बापक अनुरोधें ओ संकोचें ततेक ततेक शोकादि प्रकाश नहियो करथि, परन्तु अन्तःकरणमें अत्यन्त उदासीन ओ विरक्ता होइत भेलीहि, कतहु मन

स्थिर नहि होइन्हि । ओहि दिनसौँ कहियो कोनो तरहक स्त्री-सभामेँ वा चतुरगोष्ठीमेँ नहि जाथि, राज-परिवारमेँ ककरहु ओहि ठाम उपनयन, विवाह, वटसावित्री ओ मधुश्रावणी इत्यादि निमित्तमेँ हकार पुरबाक व्यवहार नहि करथि, वाक्य-समस्या-पूरणादि एकदम छाड़ि देलैन्ह । दोहा-कवित्तसौँ चित्त हटि गलैन्ह । आख्यायिका-उपन्यास पढ़बाक लालसामेँ सालसा भय गेलीहि, कोनो नाट्यालयमेँ जाय नाटकाभिनय नहि देखथि, संगीतशालामेँ बैसि तानपूरासौँ मिलायकेँ ध्रुवपद वा मलार आदि कठिन गीतक आलाप करब छाड़ि देलैन्ह । कोठाक दोसर वा तेसर मञ्जिलपर अपन एकान्त विनोद-भवनमेँ बैसि वीणा (वीन-सितार)मेँ द्रुत, मध्यम, विलम्बित इत्यादि क्रमेँ तीव्र अथवा कोमल स्वरमेँ कोनो राग-रागिनिक गति बजयबाक अभ्यास (रेयाज़) छूटि गेलैन्ह । होरीक दिनमेँ काफी रागिनी सुनबाक अत्यन्त प्रीति छलैन्ह से विपरीत (फीका) बूझि पड़य लगलैन्ह । गनगौरिक ओ कजरीक मेलामेँ अपन समान वयसक सहेलीक संग बाग-बगीचामेँ जाय उत्सव मनायब त्यागि देलैन्ह । ज्यैष्ठी अरण्य गोष्ठीमेँ वियनि हाथमेँ लेने वनक विनोद बिसरि जकाँ गेलैन्ह, मेष संक्रान्तिक दिन आक-बङलाहीक फूल चढ़ाय, तेकर प्रात जूड़शीतल दिन बासि भात ओ बड़ी नैवेद्य दय सखी-बहिनपाक संग चैतावरि गीत गबैत कोनो सरोवरक किनारमेँ घाँटो भसयबाक भावना भंग भय गेलैन्ह तथा कर्तिकी पूर्णिमाक रात्रिमेँ नव धानक चूड़ा, दही ओ मिष्ठान्न आदि नैवेद्य दय भाइ-बहिनिक स्वाभाविक प्रीति-सूचक गीत गबैत गाम-गोयड़ाक कोनो जोतल खेतमेँ सामाचकबाक प्रक्षेप तथा चुगिलाक दाढ़ीमेँ आगि लगैबाक हास्य-विलास व्यर्थ मानय लगलीहि । आओर कहाँ तक कहू, ने तँ सुगा-मैना पढ़यबामेँ, ने बटेर-बुलबुलक लड़ाइ देखबामेँ, ने अपना हाथसौँ चित्र लिखबामेँ, ने सखी सभक संग तास-पचीसी खेलयबामेँ-कथूमेँ मनो-विनोद नहि होइन्ह, केवल अनवस्थित-चित्ता उन्मत्ता जकाँ इतस्ततः समय बितओने जाथि ।

एहि अवान्तरमेँ एक दिन मिथिला-निवासिनी ब्रह्मज्ञानिनी याज्ञवल्क्यमुनि-पत्नी मैत्रेयी नाम्नी स्वेच्छाचारेँ घुमैत-फिरैत सीमन्तिनीक भेँट करैक हेतु राजधानी पहुँचि गेलीहि । यथार्थतः ई कथा सत्य थीक जे गतस्पृहो महानुभावगण कहुखन केवल लोकोपकारार्थे परिभ्रमण करैत छथि । अन्यथा मैत्रेयीक सनि निस्पृहाक आगमन राजधानीमेँ कोनो काल सम्भव नहि ।

सीमन्तिनी तँ देखितहि हुनका पायरपर साष्टाङ्गपात प्रणाम कय पड़ि रहलीहि । तदुत्तर महाशया मैत्रेयी शुभाशीर्वचन-पुरस्सर कृपापूर्वक सीमन्तिनीकेँ उठाय बैसौलैन्ह ओ परस्पर कुशलमंगल-प्रश्न कय प्रेमालाप करैत क्षणप्रायः कतिपय प्रहर व्यतीत कयलन्हि ।

यद्यपि तपस्विनी माता मैत्रेयी अपनहुँ सभ जनितहि छलीहि तथापि कथा प्रसंगें पूछि देलथीन्हि जे राजकुमारि ! अहाँक अवस्था बहुत खिन्न देखैत छी, ई समय खेलयबा-धुपयबाक ओ आनन्दमें मग्न रहबाक थीक, एहि अवसरमें मनोहानि करब उचित नहि ।

सीमन्तिनी तँ संकोचवशें एहि कथाक उत्तर किच्छु नहि देलथीन्हि, परन्तु हुनक सखी सभ आद्योपांत कथा कहि सुनौलथीन्ह । तदुत्तर सीमन्तिनी कहलथीन्हि-"हे मातः ! हमरिसनि अभागलि तँ एहि संसारमें प्रायः दोसर कोनो कन्या नहि होइतीहि, परन्तु आइ श्रीमतीक चरणारविन्दक दर्शनसौं अपन भाग्य परिवर्तित भेल मानैत छी । तें माय ! तेहन कोनो भाग्य-वर्धन विधिक उपदेश करू जाहिसौं हमर अप्रतिकार्य ओ अनिवार्य आधि निवृत्त होअ ।"

एतबा कथा बजलाक बाद आओर किच्छु बाजतीहि से सामर्थ्य नहि रहलैन्ह । गद्गद्स्वरें कण्ठ बन्द भय गेलैन्ह । आँखिसौं अश्रुपात होमय लगलैन्ह, केवल हुनक पादपद्म पकड़लहि भूमिपर पड़ि गेलीहि ।

महोदया मैत्रेयी तँ स्वभावतः करुणार्द्रहृदया छलीहिये परन्तु सीमन्तिनीक ओहि क्षण दीन ओ हीन अवस्था देखि अनवस्थितचित्ता ओ करुणासागर निमग्ना होइत भेलीहि ।

तदनन्तर क्षणिक ध्यान कय, हुनका अपनहि उठाय, माथपर हाथ धय अनेक आशीर्वाद देलथीन्हि जे-"ओना तँ सभ दिन शिव-पार्वतीक पूजा करू, परन्तु सोमवारक प्रदोषमें विशेष रूपें षोडशोपचारादिसौं पूजा करू । केहनो किच्छु भय पड़य, तथापि एकर त्याग जनु करी । बेटी ! निश्चय जानू कि एहि व्रतक प्रभावें सभ सङ्कट पार उतरि परम प्रमोदमें प्राप्ता होयब ।"

एवं प्रकारें अनेक उपदेश ओ आश्वासनक कथा कहि मुनिपत्नी मैत्रेयीकें अपन आश्रमक प्रति प्रस्थान कयला उत्तर राजपुत्री उपदेशानुसार स्नानोत्तर शुद्ध वस्त्र धारण कय हर-गौरी-पूजन ओ ब्राह्मण-भोजनादि कर्म आरम्भ कयलन्हि, ओ पूजाक समय करुणारसपूर्ण महेशवानी गीत सभ तेना गाबथि जे ओ सुनि साधारणों पाषाण पसिझि सकैत अछि आओर आशुतोष शिवमूर्त्तिक प्रसन्नतामें की असम्भव ?

सीमन्तिनी एहि तरहें शुभकार्य्य सभमें लागलि, कलामात्रात्मको कालकें काल समान मानैत कथंकथमपि शरीर मात्रक निर्वाह करैत जाथि ।

राजा-रानी तँ सीमन्तिनीक दुःख देखि द्विगुणित शोक ओ चिन्तासौं व्याकुल भय किङ्कर्त्तव्यमें विमूढ़ सतत अन्तःसन्तप्त होइत रहथि, प्रतिकार किच्छु नहि फुरैन्ह । परन्तु समय तँ ककरो अनुरोधें बैसल नहि रहि सकैत

अछि, एतबामेँ सीमन्तिनीकेँ तेरह गताब्द भय चौदहम वर्षक प्रवेश भेलैन्ह । वर्ष-प्रवेश दिन सभ ग्रहक शान्ति कराओल गेलैन्ह । विशेषतः सप्तम भाव स्वामी ग्रहक विधिदान ओ जपादिक भेलैन्ह ।

यद्यपि संकल्प-वाक्यमेँ ओहि काल ज्यौतिषी लोकनि अनेक वादानुवाद अपनामे आरम्भ कयलन्हि, परन्तु महाराज कहलथीन्ह जे ई सभ हमरा एखन किच्छु नहि नीक लगैत अछि, सभ गोटे एकवाक्यता कय बूढ़ा ज्यौतिषीक विचारानुसार सङ्कल्प कराउ । पश्चात् तेहिना सङ्कल्प कराओल गेल ओ आनो तरहक पूजा-पाठक भार पुरश्चरणीया लोकनिकेँ देल गेलैन्ह ।

सीमन्तिनीक शरीर तँ अत्यन्त वर्द्धिष्णु छलैन्ह । चौदहम वर्ष आरम्भहिमेँ सोड़हम-सतरहम वर्षक धोषा लोकके होइक । विवाहक अवस्थाक अव्यवस्था भेल जाइत छल । परन्तु राजा-रानीकेँ एहि विषयमेँ निचर्च देखि ककरहु सामर्थ्य नहि होइक जे हुनका विवाहक प्रसंग कोनो कथा बाजत । कतेको समय एहि तरहेँ गुपचुपमेँ बितल ।

तदुत्तर महाराजक बाल-मैत्री-प्रयुक्त, परम प्रगल्भ, वाक्पटु, अति स्थिर विचारक एक विद्वान् ब्राह्मण एक दिन गपसपमेँ अनेक देशक ओ लोकक कथा उत्थान कय, ओही प्रसंगमेँ नहु नहु बाजि उठलाह जे चिरजीविनी श्रीमती दाइजीकेँ आब शुभ विवाहक अवसर प्राप्त बूझि पड़ैत अछि तेँ कुलाचारानुसार राजधानी सभमेँ वरान्वेषणार्थ नौआ-ब्राह्मण पठाओल जाइत, से उचित । महाराज ई कथा सुनि ओहि विद्वान् ब्राह्मणक दिश असूया-सहित कुटिल दृष्टियेँ निरीक्षण कय पुछलथीन्हे जे-"की बजलहुँ ?"

से सुनि ओ विद्वान् पूर्वोक्त कथाक स्पष्टाक्षरमेँ फेरि अनुवाद कय गेलाह । महाराज किञ्चित् कालपर्यन्त गुम भय फेरि कहय लगलथीन्ह-"चौदहम वर्षमेँ विवाहोत्तर सम्भावित विषमय विषम विषय, एक ज्यौतिषी कहल, प्रायः अहूँकेँ ज्ञात अछि । तखन एखन ओहि वर्षक आरम्भहिमेँ एहन दुःखमय प्रस्ताव कोना कयलाँ गेल । एक तँ हुनक विषयक चिन्तासौँ हमर चित्त सहजहि सतत विचलित रहैत अछि, ताहि परसौँ ई दोसर कथा तीव्र विस्फोटकके फोड़ि ओहिपर लोनक बुकनी छीटिकेँ पट्टी बान्हबाक सन अहाँक क्रम बुझि पड़ैत अछि । ओहि अवस्थाक कन्याक मुख देखबाक अपेक्षासँ यावज्जीव कुमारिये देखिऐन्ह वरुक नीक । मनुओँ तँ लिखैत छथि जे-

काममामरणात् तिष्ठेद्गृहे कन्यर्तुमत्यपि ।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ।।

एतबा कथा बाजि महाराजकेँ चुप भेला उत्तर ओ विद्वान् ब्राह्मण फेरि

सान्त्वनापूर्वक कहय लगलथीन्ह– "करुणानिधान ! श्रीमान्क कथा अत्यन्त युक्त ओ सारगर्भित अछि, एहि विषयमेँ उत्तर–प्रत्युत्तर करब हमरा सन लोकक सामर्थ्यसौँ बहिर्भूत अछि । तथापि विवक्षित कथा विना बजलेँ रहलहुँ नहि जाइत छैक, तेँ फेरि किच्छु विज्ञप्ति करबाक इच्छा होइत अछि । पृथ्वीनाथ ! एक तँ राजधानीमेँ अनेक प्रकारक वञ्चक लोक सभ अबैत अछि, तकरा कथामेँ विश्वासे कोन ? जे केयो अवञ्चको छथि तनिको कथा स्वप्न, शाकुन, जातक इत्यादि विषयमेँ बहुत व्यभिचरित भय जाइत छैन्ह, एकर शतशः दृष्टान्त हम अपन आँखिक देखल दय सकै छी । कारण जे टीपनिमेँ लग्न ओ ग्रह शुद्ध होयब बहुत कष्टसाध्य छैक । ताहूपर केयो ज्यौतिषी सूक्ष्म रीतिसौँ ग्रहादिक स्पष्टो नहि करय लगै छथि, पतड़ामेँ तीनि–चारि दिन पूर्व वा परक जे ग्रह बनल रहै छैन्ह ताहीमेँ ऋण वा धन चालन दय अपन इच्छानुसार ग्रह लिखि दैत छथि ताहिसँ की फल मिलबाक आशा भय सकैत अछि ? कथमपि नहि ।"

"दोसर विषय ई जे कन्याक विवाह करओलापर यदि कोनो दुर्घटना भइयो जायत वा तत्प्रयुक्त कोनो खेद हुनका होयबो करतैन्ह तँ ओ ईश्वराधीन कहाओत । अपनेक कोनो दोष नहि । परन्तु अवस्था प्राप्त भेलापर विवाह नहि करओलेँ जे हुनका मनोहानि तकर कारण अपनहिटा होइत छी ।"

"धर्मशास्त्र सभमेँ रजस्वला कन्याकेँ घर राखब अत्यन्त दोषाधायक लिखैत छथि–

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।
सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ।। इत्यादि ।

'काममामरणात् तिष्ठेत' इत्यादि पूर्वोक्त मनु–वचनक ई तात्पर्य थिकैन्ह जे निर्गुण वरकेँ कन्या देब अत्यन्त अप्रशस्त थीक, तेँ ई नहि बुझैक चाही जे रजस्वला कन्याकेँ यावज्जीव अपना घरहिमेँ योगायकेँ राखी–

III. –तेँ सगुण वरक अन्वेषण कय शीघ्र कन्यादान करी, से उचित ।" एतबा कथा बाजि ओ विद्वान् चुप भय गेलाह ।

महाकवि भारविक सत्य कहल अछि जे–

'लङ्घ्यते न खलु काल नियोगः'

अर्थात् दैवाज्ञा नहि टरि सकैत अछि । अतएव महाराजहुकेँ इच्छा भय गेलैन्ह जे कन्यादान शीघ्र करी । ओहि ठाम चीकक ओहि कातसँ महारानिओ लोकनि सभ कथा सुनितहि छलीहि । खवासिनी सभक द्वारा हुनकहु लोकनिसँ

अनुमति लय स्थिर भेल जे शुभ दिनमे नौआ तथा पुरोहित जाथि, नीक वर अन्वेषण कय फलदान कयलहि आबथि। तदुत्तर दोसर नीक दिन ताकि तिलक दय औथिन्हि।

एही कथाक प्रसङ्गे ओ पूर्वोक्त विद्वान् बाजि उठलाह जे वरक अन्वेषण दुइ-तीनि ठाम धरि तँ अवश्य होबयक चाही, परन्तु हमरा जहाँ तक श्रुत वा अनुभूत अछि ताहि सभमे विदर्भ[4]-देशाधिपति महाराज भीमक कन्या दमयन्तीमे निषध[5] -देशाधिप सुप्रसिद्ध नामधेय महाराज नलके महाराजा इन्द्रसेन नामक पुत्र छथिन्ह। तनिक बालक युवराज चन्द्राङ्गद कुल, शील, स्वरूप, वयस, विद्या, वित्त इत्यादि सभ पदार्थमे यथार्थतः सीमन्तिनीक अनुरूप वर छथि। तें ओहि ठाम कार्य जाहि तरहें हो से कर्त्तव्य। एहिसँ इहो लोकोक्ति चरितार्थ होयत जे- 'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन'

एतबा कथा बाजि ओहि सज्जन विद्वान ब्राह्मणकें चुप भेला उत्तर सभ सभासद् हुनक वाक्यक एकवाक्यतया अनुमोदन कयलन्हि।

तदुत्तर श्रीमान् महाराज एक बूढ़ नौआ (जकरा कुलक्रमागत येह कार्य समर्पित छलैक जे राजकन्या लोकनिक विवाहमे वरान्वेषण करय) तथा एक अत्यन्त गम्भीराशय सत्यप्रतिज्ञ परम विज्ञ प्रधान पुरोहितकें बजाय एहि कार्यमे नियुक्त कयलन्हि ओ कहलथीन्हि जे-"अहाँ लोकनि निषध देश जाय अति सुकुमार राजकुमार चन्द्राङ्गदक कथा चिरजीविनी सीमन्तिनीक प्रसङ्गें स्थिर कय फलदान कयलहि आओब। यद्यपि हुनक गुणवर्णन बहुत लोकक मुहें सुनैत छी, तथापि अपनहु नीकें बूझि विचारि लेब। कन्यादानक प्रसङ्गमे अगुतायकें कार्य कर्त्तव्य उचित नहि। अपन एक क्षणक अगुताइमे कन्याकें आजन्मक खेद रहि जाइत छैक।"

"यद्यपि अहाँ लौकिक ओ शास्त्रीय दुनू विषयमे अपनहि परम प्रवीण छी तथापि कन्याक वात्सल्यसँ फेरि किच्छु कहलहि जाइत अछि। पूर्वक विद्वान लोक वरगुण विषयमे स्थिर कयलें छथि जे-

'कुलं च शीलं च वयश्च वित्तं विद्या च रूपं च सनाथता च।
एतान् गुणान् सप्त परीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम्॥'

अर्थात् एहि श्लोकमे उक्त सातटा वरगुण आवश्यक थिक। एहिसँ बेशी गुण, यदि कन्याक भाग्याधीन होइक तँ उत्तम, नहि होइक तँ से विचारणीयो नहि थिक।"

"वरक विषयमे अनेक लोकक अनेक तरहक विचार रहैत छैन्ह, यथा-

'कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् ।
बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ।।'

अर्थात् कन्याकें सुन्दर पतिक अभिलाषा रहै छैक, कन्याक मायकें धनवान्, बापकें गुणवान् जमाइक इच्छा होइत छैन्ह ओ भाइ-बन्धुकें पाँजि-पाट नीकक अपेक्षा रहैत छैन्ह । और आसपासक लोककें केवल मिष्टान्नक, अर्थात् चतुर्थी, वटसावित्री, मधुश्रावणी इत्यादिमें नीक भार-दोर अबैक जे दही-माछ, केरा-कटहर, खाजा-मुङवा इत्यादि वस्तुक बैन (बायन)-बखरा भरि पोख होय एतबै धरि अभीप्सित रहै छैन्ह। कन्या-वरक दोषगुणसँ कोनो प्रयोजन नहि । परन्तु आहाँ सभ दिश दृष्टि राखि कथानिबन्धन करब । हम आब बहुत की कहू- 'अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः' ।"

एतबा कथा बाजि राजाकें चुप भेला उत्तर रानियों लोकनि अपन अपन अभिप्रायानुसार कथा कहलथीन्ह से सभ सुनि महाराजसँ विदा भय पुरोहितजी अपन घर गेलाह ।

प्रातःकाल शुभ सम्मुख लग्नमें राजकीय वस्तु-रक्षार्थ पूरा एक गारद (Guard)सिपाही, एक हवालदार, एक चोपदार, नौआ, भनसिया, खिदमतगार, एहि सभकें सङ्ग लय एक उत्तम घोड़ापर सवार भय शुभ प्रस्थान करैत भेलाह।

कतेको कालमें यमुना उतरि, आगराक शोभा देखैत धवलपुर लग चामिल (चर्मण्वती नदी) पार उतरैत, ग्वालियरक प्राचीन दुर्ग (किला) देखैक हेतु ओहि दिन ओतहि अटकि गेलाह ।

यद्यपि सड़कसँ उतरिकें वाम भागमें किच्छु दूर जायक पड़लैन्ह तथापि चित्तमें उत्कण्ठा भेलैन्ह जे फेर कहिया एहन संयोग होयत जे एहि दिश आयब तें फेरो होयत तैयो जयबे करी, इत्यादि ।

तदुत्तर सभ अद्भुत स्थानक शोभा देखैत-सुनैत दुइ-तीन दिनमें निषध देशक राजधानीमें पुरोहितजी पहुँचि गेलाह ।

ओतय राजकैं अर्जबेगीक द्वारा महाराज इन्द्रसेनक ओहि ठाम इत्तलाय करओलन्हि जे-"आर्यावर्त्तक महाराज चित्रवर्माक पुरोहित कोनो शुद्धाक कथा लय आयल छथि ।"

तदुत्तर नैषध महाराज निवेदककें आज्ञा देलथीन्ह जे कतहु नीक स्थानमें डेरा दहुन्हि । हम स्थिर भय पश्चात् भेट करबैन्ह ।

महाराजक आज्ञानुसार ओ अर्जबेगी राजकीय उत्तम रथपर चढ़ाय अपना

दिशक राजपुरोहितक सङ्ग अतिसत्कारपूर्वक एक बगीचाक मध्य स्थित एक रम्यतम कोठीमे ँ डेरा देलथीन्ह ।

यद्यपि ओहो पुरोहितजी एक राजधानिहैक आश्रित छलाह । तथापि हुनका एहि स्थानक शोभा देखि किञ्चित्कालपर्यन्त मुग्ध ओ चकित होबय पड़लैन्ह । कोनो कोठलीमे ँ तुरभरा छीटक गदेलापर जाजिम अच्छाओल, ताहि परसँ सोना-चानीक अड़ानीसँ कटल कारचोबीक गद्दी, मसनद लागल, कतहु बानाती, कतहु कारशानी मखमली फर्श कयल । उपर मञ्जिलपर चढ़बाक सिढ़ी सभपर जरदोजी मखमल अच्छाओल, कतहु हाथी दाँतक पलङ्ग, मेज, मोढ़ा, कुर्सी आदि, कतहु चानीहैक सभ सामान, कतहु सोनाक, कतहु रत्नजटित असवाब सभ जे देखलासँ आँखिके ँ चकचौंधी लागि जाय । एक भागमे ँ स्नानशाला, जाहिमे ँ सङ्गमर्मर (श्वेतोपल)सँ चारू घाट बान्हल, मध्यमे ँ स्नानकुण्ड, ओहि समीपमे ँ एक जलयन्त्र (फुहारा), ताहि समीपहिमे ँ पूजास्थान ओ अग्निहोत्रागार, ओहिसँ सटले पाठशाला ओ भोजनालय इत्यादि । सभ आवश्यक स्थान उचित रूपसँ सन्निवेशित । यथार्थमे ँ ओ देखैक योग्य रमणीय स्थान छल जे देखैक हेतु देश-देशान्तरक लोक समय-समयपर आबथि ।

ओहिसँ बाहर अद्भुतालय (Museam), चिड़ियाखाना, अस्तबल (Stable), रथशाला (गाड़ीखाना) इत्यादि अति मनोहर स्थान सभ ।

ओहि कोठीक हाता पक्का लोहक् जङ्गलासँ घेड़ल, ताहि मध्यमे ँ नानादेशीय पुष्पसँ शोभित वाटिका (फुलबाड़ी), जाहि ठाम कतहु ओहि वसन्त ऋतुक प्रादुर्भाव समयमे ँ मालि सभ मुरझायल फूल सभक मूलके ँ दिनान्तमै ँ पटाय रहल अछि । कोनो भागमे ँ मालिनि सभ महारानी लोकनि लय माला बनयबाक हेतु बेली, चमेली, जूही, नेबारि प्रभृति सुगन्धित पुष्प सभ लोढ़ि रहलि अछि । कतहु गान्धिक (गन्धी अत्तार) सभ अतर बनयबाक हेतु गुलाब, केतकी[6], चम्पा, भालसरी आदि फूलक सङ्ग्रह कय रहल छथि । कतहु नव-पल्लव-तलमे ँ दबलि आम्रमञ्जरीमधुपानमत्ता कोकिला सभ कुहू-कुहू शब्द कय कामी पथिक लोकके ँ कूहि रहल अछि । कतहु चञ्चल चञ्चरीक (भमर) सभ पुष्पोद्गमानन्तर रसवती नूतनलता रूपिणी प्रेयसीक सङ्ग उपभोग-सुखानुभव करैत गुञ्जित रूप भणितसँ कामी लोकनिके ँ मुग्धमानस कय रहल छथि । कतहु कृत्रिम सरोवरमे ँ नाना रङ्गक कमल, कुमुद, कह्लार आदिक फुलायल फूलपर हंस, कारण्डव प्रभृति जलचर पक्षिगण कल्लोल कय रहल छथि, इत्यादि । कहाँ तक वर्णन करू ! ओ शोभा देखलहि बनय । लेखनीक सामर्थ्य नहि जे विशेषतः प्रकाशित करय । कतेको काल मनोविनोद

कय पुरोहितजी स्नान-पूजन-भोजनादि आह्निक कृत्य कय पलङ्गपर किच्छु काल विश्राम कयलन्हि ।

सायं समयमेँ सन्ध्योपासनान्तर इन्द्रसेन महाराजसँ भेट करैक हेतु चोबदार सवारी लयकेँ पुरोहितजीक समीप उपस्थित भय गेलाह । ओ प्रणाम कय विज्ञप्ति कयलन्हि जे-"महाराज इन्द्रसेन अपनेक स्मरण करैत छलाह अछि, यदि विदेशागमन प्रयुक्त श्रम (थाकनि) नहि सम्प्रति बूझि पड़ैत हो वा रात्रिकेँ दरबार जयबामेँ कोनो क्लेश नहि होय तँ अपनेक अभूतपूर्व दर्शनसँ ओ परम प्रसन्न होयताह ।"

पुरोहितजी एतबा कथा सुनितहि पाग, दोपट्टा ओ चपकन पहिरि सवारीपर चढ़ि दरबार गेलाह ओ श्रीमहाराजकेँ जनौ ओ नारिकेर दय आशीर्वाद कयलन्हि ।

तदनन्तर आर्यावर्त्तक पुरोहितजी महाराजसँ निर्दिष्ट आसनपर बैसि महाराजक सङ्ग कुशल-प्रश्नादि वार्त्तालाप परस्पर कय उभय राजधानी-सम्बन्धी आनो प्रासङ्गिक कथा सभक शेषमेँ ओ पुरोहितजी अभिमत वैवाहिक कथाक प्रस्ताव कयलन्हि-

"करुणानिधान ! आर्यावर्त्तक महाराज चित्रवर्माक पुरोहित हम हुनक प्रेषित एतन्निमित्तक श्री५मान्क सन्निधि आयल छी जे उक्त महाराजक एक कन्या कुमारि छथीन्हि । ताहिमेँ यद्यपि अनेक राजकुमारक अधिकार छैन्ह, तथापि अपनेक तथा अपनेक पुत्र कुमार चन्द्राङ्गदक गुण-वर्णन नाना दिग्देशागत चारणगणक मुखसँ सूनि आन सभक अनुपस्थिति कय [महाराज पठौलैन्ह अछि जे कुमार चन्द्राङ्गदहिक प्रति अपनैँक ओतै कथोपस्थिति कय कृतकार्य होइ, [तेँ] करुणानिधान श्रीमान् ताहि तरहक कृपा-प्रकाश कयल जाय जाहिसँ इतर दरबारक जयबाक व्यापार नहि करय पड़य । उभय पक्षक कुल अत्यन्त विशुद्ध ओ समृद्ध, तेँ एहनहि ठाममेँ विवाह-सम्बन्ध[7] होयब उचित ।

'ययोरेव समं वित्तं ययोरोव समं कुलम् ।
तयोर्विवाहो मैत्री च नोत्तमाधमयोः क्वचित् ।।'

आओर हमरा लोकनि अधिकारहुक निर्णय नीक जकाँ कय लेल अछि । अपनेक बालककेँ ओ कन्या पितृपक्षक छठ्मी नहि, कठमामक सन्तति नहि, मातामह-पितामहक सन्तति नहि, मातृसनाम्नी[8] नहि, समगोत्र नहि, समप्रवर[9] नहि । यदि क्षत्रियकेँ पुरोहितक गोत्रप्रवरसँ व्यवहार करी, तैओ अनधिकार नहि । तेँ जे श्रीमान्क आज्ञा हो से हमरा लोकनि सम्पादन करी ।

तिलक हेतु द्रव्य, वस्त्र ओ अलङ्करणादि सङ्गहि लायल छी । हमर सर्वथा ई प्रार्थना जे- 'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन' / ई महाकविक वाक्यकेँ चरितार्थ कयल जाय ओ सोनमेँ सुगन्धिक सम्पर्क देखाओल जाय ।"

एतबा कथा बाजि पुरोहितजीकेँ चुप भेला उत्तर कुमार चन्द्राङ्गद चुप-चाप बापक गद्दी लगसँ लाजेँ उठि कै दोसर ठाम जाय बैसलाह ओ महाराज इन्द्रसेन ईषद्धसित होइत गम्भीर वाक्येँ उत्तर देबय लगलथिन्ह- "विज्ञ पुरोहितजी महाराज ! यद्यपि अनेक राजधानीसँ अनेक व्यक्ति एहि तरहक कथा लबैत छलाह अछि ओ अपनहु एही तारतम्यमेँ छलहुँ अछि जे कतय कार्य करी । परन्तु आइ अपनेक शुभागमनसँ परम प्रसन्न भेलहुँ ।

एक तँ महाराज चित्रवर्मा ओ राजकुमारी सीमन्तिनीक गुण-श्रवणसँ चित्त ओही दिश प्रवण छले । दोसर अपनेक आगमन-गौरव ओ आज्ञावचन सर्वथा अनुल्लङ्घनीय, तेँ अनुमान होइछ जे परम कारुणिक जगदीश्वरकेँ आब ई सम्बन्ध अभिमत छैन्ह"-

(आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखी भूतः), -स्वगत ई श्लोकार्ध पढ़ैत, प्रकाशरूपसँ फेरि कहय लगलथिन्ह-"पुरोहितजी ! आन ठामसँ जे पुरोहित अबैत छलाह तनिक ओहि ठाम जखन केओ कायथ (मोतसद्दी) डेरा-खर्चक फिरिस्ति लेबाक हेतु जाइत छल तखन एक पसेरी उज्जैनी पीरा भाङ, दुइ सेर मरीच, सौँफ, जायपत्री, अणाची प्रभृति मसाला, एक अढ़ैया मिसरी आओर चारि घैल दुधक फरमाइश सभसँ पहिलहि होइ छल । से जखन अल्पधन पण्डित-पुरोहितकेँ छओ-सात घैल भाङेँ निर्वाह, तखन समृद्ध यजमान महाराजक ओहि ठाम तँ छओ-सात माट भाङ प्रतिदिन अवश्य खपैत होयत, तखन एहन निशाखोर सभक सम्बन्धसँ दूरहि रही सैह बरुक नीक, ई विचारि चुप छलहुँ । परन्तु अपनेक वाक्पटुता, गाम्भीर्य, सौजन्य प्रभृति गुणसँ मोहित भय सर्वथा अपनेक वाक्य स्वीकार कयल । आब विचारान्तर की ?"

एतबा कथा बाजि महाराज चुप भेलाह ।

तदुत्तर सभासद लोकनि जय-जयकार कयलन्हि, ओ भाट सभ विरुदावली पढ़य लगलाह ।

किछु कालक उत्तर महाराज सभा विसर्जन कयलन्हि, ओ सभ लोक अपन-अपन स्थानपर गेलाह ।

आर्यावर्त्तक पुरोहितजी प्रातःकाल उठिकेँ सकल समाचार-सूचिका एक पत्रिका डाक द्वारा महाराज चित्रवर्माकेँ पठाय, तिलक देबाक स्वीकार-पत्र

मङायकेँ चन्द्र-तारानुकूल दिन शुभ लग्नमेँ महाराजकुमार चन्द्राङ्गदकेँ देशाचारानुसार तिलक चढ़ौलन्हि । ओहि समय एक सुविशाल शामियाना तर दूनू तरफक महफिल लागल रहय ओ उत्तमोत्तम वेश्या-कत्थकक नाच भय रहल छल ।

IV. तदुत्तर महाराजक आज्ञानुसार दुनू दिशक ज्यौतिषी लोकनि थोड़ेक काल मामूली 'त्वं चाहं च'[10] कय एकटा विवाहक दिन स्थिर कय लेलन्हि । तिलकक बाद आतशवाज सभ जैह एक-दुइटा बम्बगोला छोड़लक कि लगले किला परक तोपखानासँ ओ पलटनक छावनीसँ तोपक फायर होबय लागल । एक दिनक बाद राजधानीक रीत्यानुसार महाराज इन्द्रसेन तिलक देनिहार सभकेँ यथोचित बिदाइ देलन्हि । विशेषतः पुरोहितजीकेँ सर्वश्रेष्ठ बिदाइ दय बहुतो तरहक उछती-विनतीक कथा ओ महाराज चित्रवर्माक संवाद कहि स्वदेशक प्रति प्रस्थापित कयलन्हि । पुरोहितजी प्रातःकालहि डेरा परसँ विदा भय फिरती सार्थ जेहन अगुतायल रहैछ तेहिना अति शीघ्र आर्यावर्त्तक राजधानी पहुँचि गेलाह ।

तदनन्तर पहिलै सोझे महाराजक दरबारमेँ उपस्थित भय आशीर्वाद कयलन्हि । महाराज चित्रवर्मा पुरोहितजीकेँ देखि अत्यन्त हृष्ट भय सभ समाचार पूछय लगलाह । पुरोहितजी राजधानीसँ विदा होयबा कालसँ लयकेँ फेरि पहुँचबाक काल पर्यन्तक यावतो समाचार श्रीमान्‌क श्रुतिगोचर करौलन्हि । ओम्हर पुरेहितजीक अयबाक समाचार रनिवाससँ लय संपूर्ण नगरमेँ गर्द पड़ि गेल । एही अवसरमेँ महलातसँ कतेको नौड़ी सभ छूटलि । पुरोहितजी महाराजक दरबारसँ जेह उठलाह कि लगले नौड़ी सभ गोड़ लागिकेँ कहलकैन्ह जे ड्यौढ़ी परक तलबी अछि । पुरोहितजी ओहि सभक संग ड्यौढ़ीपर पहुँचि गेलाह ।

तावत् महारानी सभ गोटेँ अपना-अपना महलसँ आबि-आबि एक ठाम भय एक कोठामेँ चीक लागि बैसैत गेलीहि । पुरोहितजी ड्यौढ़ी परक प्रधान ब्राह्मणीकेँ बजाय कहलथीन्ह जे सभ महारानीकेँ हमर आशीर्वाद कहिऔन्ह ओ कुशल पुछिऔन्ह । ब्राह्मणी द्वारा आशीर्वाद पहुँचलापर सभ महारानी ओही ब्राह्मणीकेँ कहलथीन्ह जे हमरहु लोकनिक प्रणाम कहथुन्ह ओ कुशल पुछथुन्ह और जतय गेल छलाह ततयसँ की कय आयल छथि से आद्योपान्त कहथु । हमरा लोकनिक शपथ थिकैन्ह, एकोटा कथा छोड़थि जनु ओ कोनो विषयक छल जनु करथि ।

ओहि समय पुरोहितजीक उत्तर सुनैक हेतु अन्तःपुरक सभ लोक उत्कण्ठित भय रहल छल ।

प्रायेणैवंविधे कार्ये पुरन्ध्रीणां प्रगल्भता ।'

ओहि समय ओहि ठामसँ अनठायकेँ उठि सीमन्तिनी एक दुइ सखीकेँ सङ्ग लय दोसर कोठलीमेँ झट जाय बैसलीहि । यद्यपि सखी सभ कहय लगलथीन्हि जे-'दाइजी ! दोसर बाटेँ चलू । इरोतमेँ ठाढ़ि भय सुनब जे कोन-कोन कथा होइ छैक । परन्तु उत्कण्ठा, लज्जा, भयसँ सघर्मा ओ सकम्पा सीमन्तिनी डाँटि लेलथीन्हि ओ अपने हरगौरीक ध्यानमेँ निमग्ना भेलीहि ।

तदुत्तर पुरोहितजी जयबाक समयसँ फिरि अयबाक समय पर्यन्तक सभ कहानी सविस्तर सुनाय गेलाह । यद्यपि सभ गोटे एक बेरि सभ कथा सुनियो गेलि छलीहि तथापि उत्कण्ठासँ फेरि-फेरि पुच्छबाबै लगलथीन्ह जे एतयसँ ओ जगह कतेक दूरक बाट, राजधानीक केहन सिलसिला, चालि-व्यवहार कोन तरहक ओ ओहि देशक लोक केहन, इत्यादि ।

एहि अवसरमेँ राजपरिवारक एक प्रतिष्ठिता स्त्री बाजि उठलीहि जे-"हमरा लोकनिकेँ एहि सभसँ प्रयोजन कोन । साफकेँ पुच्छबैत जैऔन्हि जे वरक स्वरूप, स्वभाव, वयस, बुद्धि ओ विद्या केहन ?"

से सुनि पुरोहितजी बाजि उठलाह जे-" ताहि सभक वर्णन की करू । एहि सृष्टिमेँ सम्प्रति विधाता हुनका अनुपम बनौने छथि । सीमन्तिनीहीक सनि भाग्यवती कन्याकेँ ओहन वर भेटि सकैत छथि, अनका नहि । निश्चय जानू जे गौरीक अतिशय भक्तिक ई फल थिकैन्ह ।"

तदुत्तर महारानी लोकनिक आज्ञानुसार बिदाइक सभ वस्तु देखाबय लगलाह । ओहि समय एक प्रगल्भा खवासिनी बाजि उठलि जे-"और सभ वस्तु उत्तम परन्तु एक किमखापक थानटा पुरान छैन्ह ।"

प्रायः सभ आङनमेँ (चाहै पैघ घर हो वा छोट) भार ओ बिदाइकेँ दुसनिहारि एकटाकेँ राड़िनि रहितहि अछि । परन्तु प्रधान महारानी डाँटि लेलथीन्हि जे-"ई सभ केओ बाजै । अधिक वस्तुमेँ नीक अधलाह सभ तरहक रहितहि छैक ।"

एहि सभक बाद पुरोहितजी अपन आँगन जाय विदेशागमनोत्तर पुत्रकलत्रादि-सम्मिलन-जन्य-सुखानुभव करैत भेलाह ।

यद्यपि विवाहक दिनक निश्चय पुरोहित कयलहि आयल छलाह, तथापि डाक द्वारा पत्राचार कय निर्णय कय दुनू राजधानी अर्थात् आर्यावर्त्त ओ निषधमेँ विवाहोत्सवक खूब तैयारी होबय लागल । दुनू महाराजक दिशसँ अपन-अपन इष्ट मित्र राजा-महाराज लोकनिकेँ नौतक चिठ्ठी-पाता जारी भय गेल । ओहो राजा-महाराजा लोकनि अपन-अपन[11] योग्यतानुसार खूब तैयारी कय

जनिका जाहि दिशक नौत–हकार छलैन्ह से ताहि दिशकेँ विदा भेलाह ओ नियत समयपर पहुँचि गेलाह ।

एहि अवान्तरमेँ नैषध महाराजक स्थपति (Engineer)[12] अपना सङ्ग राज, बरही, अरकसिया प्रभृति कारीगर सभकेँ लेने आर्यावर्त्तक राजधानी पहुँचि गेलाह ओ महाराजक डेराक हेतु निर्दिष्ट स्थानमेँ सपरिवार ओ समित्र महाराजक डेरा ओ नाचघर आदिक सलतनत कय अयलाह ।

तदुत्तर विवाहक शुभ दिनसँ पाँच दिन पूर्वहि नैषध इन्द्रसेन महाराज वरियातीक[13] तैयारी कयलन्हि । प्रातःकालहि सभ लोक स्नान पूजादि आह्निक कृत्य कय शीघ्र भोजनादिसँ सलतनत भय पहरक भीतरहिमेँ ड्यौढ़ीपर हाजिर भय गेलाह ।

तदुत्तर शुभ मुहुर्त्तमेँ कुमार चन्द्राङ्गद वरोचित वस्त्र आभूषण आदि धारण कय गोसाउनिक घरसँ चुमाओन करओलेँ यात्रा कय विदा भेलाह । जनानी ड्यौढ़ीक प्रधान दरबाजापर 'गणेश गणेश' कहनिहार ज्यौतिषी–पण्डित लोकनिकेँ सगुनक अशर्फी बटैत, दशौन्हीसँ विरुदावली सुनैत, नृत्यवाद्यपुरस्सर पिताक सुख–सदन 'इन्द्र भवन' नामक प्रासादमेँ पहुँचि गेलाह ।

तदनन्तर, लगले इन्द्रसेन महाराज आज्ञा देल जे डङ्कापर चोट पड़य ।

तत्क्षणहि डङ्काबाला जोड़ा बड़ा डङ्कापर खटाखट लकड़ीक चोट देबय लागल । डङ्काक 'कुडुकधुम कुडुकधुम' आवाज सुनितहि तुरहीबाला महिल बिगुल (Bugle)बजौलक ।

तदुत्तर सभ लोक वरियातीक योग्य अपन–अपन पोशाक (जे एही उत्सवमेँ राजसँ भेटल छलैन्ह) पहिरि–पहिरि वृत्त भय रहलाह । दोसर डङ्का ओ बिगुल भेलापर महाराजक आज्ञासँ लिखित नामावलीक अनुसार सभ लोक यथाक्रम सवारी सभपर चढ़ि गेलाह । तेसर बेरि डङ्का ओ बिगुल होइतहि वरात[14] विदा भेल ।

सभसँ आगाँ विशाल हाथीपर डङ्का ओ निशान छल । ताहिसँ पाछाँ एक मन्दगामी दन्तार हाथीपर हाथी–दाँतक हौदामेँ बैसि काशीक रोशनचौकीबाला मधुर धुनिक धारा बहाय रहल छल । ताहिसँ पाछाँ सिंगा (करनाल), तुरही, ढाक–तासा, डफरा, वाँसुरी, सहनाइ, ढोल आदि स्वदेशी बाजा सभ; तत्पश्चात् बैंड (Band) आदि विदेशी बाजा सभ, तकर पश्चात् तख्तपर नर्तकी (वेश्या) सभ, ताहि पाछाँ नवीन वर्दी पहिरने खासवरदार अर्थात् आसा, सोटा, वल्लम, बर्छाबाला सभ, ताहिसँ पश्चात् संगीनदार बन्दूक काँधपर ओ कमरमेँ किरीच

रखने जंगी पलटनक कम्पनी ओ ताहिसँ पाछाँ भालेदार घोड़सवारक रिसाला ओ कोत[वा?]लक घोड़ा सभ, ताहि पाछाँ घोड़ापर डङ्का ओ दोसर-दोसर घोड़ापर नकीब चोबदार सभ 'जय' घोषणा करैत ओ वन्दीगण विरुदावली पढ़ैत, दुनू बगलमेँ कनेक दबल झंडीबाला ओ सूर्यमुखी-पंखाबाला सभ, मध्यमेँ बनारसी कारचोबी छतरीदार रत्नजटित स्वर्णमय लालकीपर सवार महाराज कुमार चन्द्राङ्गद, ओ दुनू पार्श्वमेँ मोरछल चौर ढारैत केसरिया पोशाक पहिरलेँ परिचारक सभ, ताहि पाछाँ महोच्च हाथीक अम्बारी[15]पर महाराज इन्द्रसेन ओ मित्र-महाराज सभ तथा सोना-चानीक हौदापर पुरोहितगण पण्डितमण्डली तथा कर्मचारिवर्ग, बूढ़ प्रतिष्ठित सरदार लोकनि झंपान ओ खड़खड़िया (पालकी) आदि सवारीपर, सेठि-साहूकार लोकनि रथपर, ताहिसँ पाछाँ शुतुर(ऊट) सवार सभ ओ मामूली लोक सभ, सभसँ पाछाँ शुतुरी डङ्का ओ बड़दक गाड़ी सभपर तोपखाना आदि ।[16]

वरियात विदा होइतहि किलापरसँ सलामीक तोप खलास होबय लागल ।

किलासँ बहरैतहि शहरमेँ तमाशगीरक तेहन भीड़ भेल जे केओ कोठापर, केओ घरपर, केओ गमैया लोक सभ गाछपर चढ़ि-चढ़ि तमाशा देखलक । शहरमेँ सड़कक दुनू बगलमेँ सेठानी सभ अपन-अपन कोठाक बैठकमेँ बैसि माङ्गलिक गीत सभ गाबय लगलीहि ओ लावा तथा पुष्पमाला उपरसँ फेकय लगलीहि ।

एहि तरहेँ आध घंटामे शहर-पनाह (किला)सँ बाहर भय सभ लशकर परट (Parade)क मैदानमेँ किञ्चित् कालक हेतु स्थिर भेल ।

एकर दुइ कारण । एक तँ ई जे वरियातमेँ जे केओ आगाँ-पाछाँ छुटल-फूटल होयत से सभ एकट्ठा भय जायत । दोसर ई जे दूर-दूरसँ लोक सभ तमाशा देखय आयल छलाह, तनिका लोकनिकेँ शहरक भीतरक शिकस्त सड़कपर तमाशा देखैक उत्तम अवकाश नहि भेल छलैन्ह आओर एहि मैदानमेँ खुशफैलसँ तमाशा देखि सकथि ।

थोड़ेक कालक बाद फेरि बिगुल भेलापर वरियात विदा भेल ।

बाटमेँ ठाम-ठाम नीक जलाशय, विशिष्ट देवालय वा रमणीय बाग-बगीचा लग विश्राम करैत आध पहरक लगभग दिन अछैतहि नियत डेराक स्थानमेँ, जहाँ तम्बू, कनात, शामियाना, फर्शक बन्दोवस्त पहिलहिँसँ भेल छल, सभ लशकर ठहरि गेल ।

V. तदनन्तर सभ लोक यथायोग्य निर्द्दिष्ट स्थानमेँ डेरा करैत गेलाह । कहार, बेगार, महाउथ प्रभृति पोखरिक कातक गाछी सभमेँ डेरा करय लागल । जकर सङ्गी सभ मुखान्धकारक समय भुतिआय गेलैक से सभ गर्द करय लागल जे-" रौ फल्लाँ गामक फल्लमा ! हमरा सबहिक डेरा एहि दिश अछि । अबैत जो" इत्यादि ।

एवं प्रकारेँ एक-आध घण्टामे सभ सलतनत भेल ।

एही अवान्तरमेँ बनिया ओ हलुआइ सभ दोबगली अपन-अपन राउटी खाड़ा कय सभ तरहक भक्ष्य-भोज्य वस्तुक दोकान तैयार कय लेलक । दोसर भागमेँ वेश्या सभ छोट-छोट तम्बूक कतारमेँ डेरा कय नाना प्रकारक शृङ्गारोद्दीपक वेष धारण कय तत्कालहि गाना-बजाना आदि आरम्भ कय देलक । एहि नवीन कृत्रिम बाजारमेँ सन्ध्याकालक प्रकाश (रोशनी) भेलासँ सुखरात्रिक दीपमालिकाक छटा प्रतिभासित होबय लागल ।

किञ्चित् कालोत्तर भोजनादि कृत्यसँ निवृत्त भेलापर पलङ्गपर लेटल महाराज इन्द्रसेनक समीप जाय गवैया सभ तानपुरा लयकेँ ओ पखौजिया सभ पखौज (मृदङ्ग) लयकेँ अपन-अपन गुणक परिचय देबय लगलाह । सितारिया सभ गति, जोड़, विलम्ब पदक प्रभेद सुनयबामेँ अपन-अपन हाथक सफाइ देखाय सभासद लोककेँ प्रमुदित करय लगलाह । कतेको विलासी लोक अपन-अपन डेरासँ चुपचाप उठि वेश्यावीथीमेँ प्रवेश कय ओहि सभक मोजरा देखि-सुनि बाटक थाकनिकेँ दूर कयलन्हि ।

गाछी-पोखरि दिश कहार-बेगार प्रभृति नीचवर्ग दोसरे तरहेँ विनोद करय लागल अर्थात् सीतास्वयंवर, प्रभावतीहरण, रम्भाऽभिसार, एहि विषय सभक गमैया भासक गीतसँ आरम्भ कय विरहा-चाँचरि पर्यन्त गाबय लागल ।[17] चमार नटुआ सभ मयूरक पाँखिबाला ढोल लय घूमि-घूमि नाचय लागल ओ सभ लोक अपन-अपन सुर ओ धुनिमेँ मस्त देखि पड़ैत छल ।

बारह बजे राति तक एहि तरहेँ उत्सव मनाय सभ वरियाती आराम कयलन्हि ।

सबेरि ६ बजे प्रातः स्नान ओ आह्निक कृत्य कय भोजनादिसँ निवृत्त भय वरियात-खानाक डङ्का ओ बिगुल भेल । तदनन्तर पूर्ववत् तैयारीक साथ वरियात रवाना भय मध्य-मध्यमेँ विश्राम करैत किच्छु दिन अछैतहि दोसर पड़ावपर अटकि गेल ।

एवं प्रकार बाटमे अड्डा-अड्डापर मोकाम करैत विवाहक दिन आर्यावर्त्तक राजधानी समीपमे पहुँचि गेलाह । एक कोश बाकी रहलापर लशकर विश्राम कयलक ओ उचित रूपसँ फेरि वरियातीक विन्यास होबय लागल । महाराज इन्द्रसेन एक सवार (अश्ववार)क द्वारा आर्यावर्त्ताधिपति महाराज चित्रवर्माकेँ अपना लोकनिक पहुँचबाक खबरि पठाय देलथीन्ह ।

तदनन्तर आर्यावर्त्तहुमे वरियात पड़िछैक हेतु सरियातक तैयारी होबय लागल । किञ्चित् कालमे डङ्का बिगुल भेलापर सभ पड़िछनिहार दस्तूर मोताबिक रवाना भेलाह । थोड़ेक दूर गेलापर दुनू दलकेँ सामना–

VI. –भेल । दूनू तरफक सवार सभ मामूली घोड़दौड़ि कराय स्थिर होइत भेलाह । एहिमे सालोतरी[18] सभक पसिन्द कयल शुभलक्षण-लक्षित नाना देशक उत्तम जातीय घोड़ा सभ छल, यथा-अरबी, कन्धारी, काबुली, सिन्धी आदि ।

आओर हाथियो सभ अनेक जातिक छल । कतेको सप्तस्रावी[19] (जकरा सात ठामसँ मद चुऐक) छल जे दोसर हाथीकेँ देखि हमला करयपर मोस्तैद भय जाय । ताहि सभकेँ महाउथ (महामात्र) सभ बहुत यत्नेँ भीड़सँ बहार कय कातहि कात लय चलल । कतेको हाथीक दूनू बगल चरकट्टा सभ बरछा लेने ठाढ़ भेल रहय जे ककरहु दिश हाथी सभ आघात नहि करय ।

कतेको गम्भीरवेदी[20] हाथी सभ महाउथक आँकुश ओ पायरक इशाराक कोनो परवाहि नहि कय कतेक-कतेक काल ठाढ़े रहि जाय ।

एहि संमिलनक तमाशा देखैक हेतु दूर दूरक लोक सभ एकट्ठा भेल छल । कतेको उत्पाती लोक सभ जीव उपेछि-उपेछि हाथी सभक तर दय बहकिकेँ एहि कातसँ ओहि कात चल जाय ।

संमिलन-कालमे आर्यावर्त्तक किला तथा तोपखाना सभसँ सलामीक तोप खलाश होबय लागल । एहि अवसरमे तोपक गड़गड़ाहटि शब्द सुनि कतेको हाथी चिक्कार मारि भड़किकेँ पड़ाय लागल, परन्तु महाउथ सभ बहुत प्रयत्नेँ अङ्कुश द्वारा स्थिर कयलक । कतेको घोड़ा सभ भड़कल । ताहि परसँ कतेको अल्हड़-नवशिक्षित सवार[21] लोकनि ओंघरायकेँ खसलाह ओ जेहिना अखाढ़ापर कुश्तीमे हारल पहलवान सभ चुपचाप उठि अपना गच्छक लोकमे घुसिआइत अछि, तेहिना आर्यावर्त्तक उकठाह छौंड़ा सभक हँसीसँ लज्जित भय वरियाती दिशक खसल सवार सब सहीसक हाथमे लगाम थम्हायकेँ अपने पायजामा-चपकनक धूरा झाड़ैत वरियातीक दलमे घुसिऐलाह । जोड़ल ऊँटक

कतार तँ गड्मड्ड भय पड़ायल । ताहि परसँ सवार सभ लड्फड्ड भय खसय लगलाह ओ असवाब सभ हड़हड़ायकेँ खसि पड़ल । कतेको गाड़ीक भड़काह बड़द डरायकेँ पड़ाय लागल परन्तु बहलमान सभ बहुत प्रयत्नेँ नाथ थाम्हि स्थिर कयलक । कतेको अड़िया (बछौरिया) बड़द सभ नाथहुकेँ तोड़ि-फाड़ि जुआसँ काँध झाड़ि आँखि मूनि लोकहिक भीड़ दिश दौड़ल जाहिसँ लोकमेँ हल्ला[22] मचि गेल ।

ई कौतुक देखि आर्यावर्त्तक कतेको उकठाह छौँड़ा सभ लग जायकेँ फटाका छोड़य लागल ओ वरियाती सभक दिश हँसि-हँसि थपड़ी पाड़य लागल । कतेको कालमेँ सभ सलतनत भेलापर उभय पक्षक लोक मिश्रित भय राजभवन दिशि विदा भेलाह ओ थोड़ेक कालमेँ वरियाती सभ दरवाजा लागि जनवासा[23] जाय यथोचित स्थानमेँ डेरा करैत गेलाह ।

थोड़ेक कालक बाद आर्यावर्त्तक महाराजक कारबारी लोकनि छोटसँ पैघ धरि सभ डेरा घूमि-घूमि वरियातीकेँ यथायोग्य भोजनादि सामग्री (रसद)[24] ओ उत्तमोत्तम ठण्ढा जल प्रबन्ध कय देलथीन्ह ।

सभ वरियातीकेँ स्वस्थ भेलापर नाचघरमेँ महफिल आरम्भ भेल । क्रमशः बजवैया, गवैया, कत्थक, वेश्या, भाँड़क मोजरा ओ नाँच होबय लागल । जे महाराज लोकनि आलस्यवश ओहि महफिलमेँ नहि जाय सकलाह से सभ अपनहि-अपन डेरामेँ महफिल कय चित्त-विनोद करय लगलाह ।

किञ्चित् कालोत्तर वैवाहिक शुभ मुहूर्त्त प्राप्त भेलापर सारमेँसँ एक गोटेँ बहुत तैयारी साथ जनवासा आबि कुमार चन्द्राङ्गदकेँ लालकीपर चढ़बाय अन्तःपुर लय चललाह ।

द्वारपूजाक बेरि दूनू दिशक पुरोहितक प्रतिनिधि(गुमास्ता)केँ शास्त्रार्थ आरम्भ भेल जे 'द्वारपूजा' शब्दमेँ षष्ठी समास की सप्तमी समास । एहिपर थोड़ेक काल घोँघाउजि कय पश्चात् गुरु-परमगुरु-पर्यन्तक कुचेष्टवाहियेँ सत्कार कय वादी सभ निवृत्त भेलाह ।

तदुत्तर कुमार चन्द्राङ्गद मण्डपपर पहुँचलाह ।

तदनन्तर स्त्रीवर्गक रीत्यानुसार सभ विधि-व्यवहार भेलापर आर्यावर्त्तेश्वर महाराज चित्रवर्मा सविधि वरक अर्हणा कय कन्यादान कयलन्हि तथा सुवर्ण ओ भूमि दक्षिणासहित बहुमूल्य रत्न, अलङ्करण, वस्त्र, हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, दासी, दास, इत्यादि यौतुक(दहेज)मेँ तत्कालहि देलनि ।

तदनन्तर कुमार चन्द्राङ्गद वेदी लग जाय योजक[25] नामक अग्निक उपसमाधान कय यथाविधि राजकुमारी सीमन्तिनीक पाणिग्रहण कय आज्य-होम ओ लाजा-होम सम्पादित भेलापर सीमन्तिनीकेँ सीमन्तमेँ सिन्दूरसँ भूषित कय स्वानीत का-

VII. -'कामदार' बनारसी साड़ी (वाराणसी शाटी)सँ शिरोऽवगुण्ठन (घोघट) देलथिन्ह। तदुत्तर दूर्वाक्षत ग्रहण कय कुलदेवता (गोसाउनि)क प्रणाम करैत कोबर जाइत भेलाह।

कोबरघरक शोभा तँ एक सीमन्तिनीहिक रहने विलक्षणैँ छल, परन्तु कुमार चन्द्राङ्गदक सङ्ग भेने द्विगुणित वा त्रिगुणित भय गेल। एहि नवदम्पतीक चतुर्थी पर्यन्त अधःशय्याक विलक्षण विन्यास कयल गेल छल। समीपहिमेँ गुरुदासपुरक[26] कारीगर कुम्हारक बनाओल ओतहिक माटिक हाथीपीठिपर स्वर्ण-पात्रमेँ सौवर्णी गौरीमूर्ति, ताहि समीपमेँ पूर्णघट(पुड़हर) तथा अखण्ड दीपयुक्त सौभाग्य-पातिली (अहिबातक पातिल) स्थापित छल। ताहि ठाम चारू दिशिमेँ पूजोपकरण वस्तु, फूल, बेलपात, अक्षत, चानन, सिन्दूर, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी इत्यादि ओरिऔल राखल छल।

कोठाक देबालमेँ वंशवृद्धिसूचक वंशस्तम्भ (बाँसक बीट) तथा नलिनीदल (पुड़ैनि)क विचित्र चित्र लिखल छल ! एहि स्थलक शोभा देखैक निमित्त आगत सूर्य ओ चन्द्रमा, राजपत्नी सबहिक भूषण-मणि-गणक तेजसँ सन्तप्त भय प्रतिमूर्तिक छलैँ भीतिमेँ सटल जाइत छलाह। आओरो देवता सब तमाशा देखैक हेतु तसवीरक व्याजसँ आबि लौहकील (काँटी)मेँ लटकि-लटकि नेत्र-युगल सफल करैत छलाह।

ऊपरमेँ लटकल झाड़-फानुस सब आकाशमेँ उदित ग्रह-नक्षत्रक 'धोखा' दय रहल छल। तथा तत्रस्थित मदनवर्तिका सदृश मदनवर्तिका (मोमबत्ती)मेँ 'बत्ती' छुअबितहि युवजनक मानसमेँ कामानल प्रज्वलित भय उठल।

ठाम-ठाम पर्दा सब लागल छल। तत्पश्चात् सहशायिनी (शयनसखी) सबहिक 'फर्श'पर ओछाओन भेल रहय। दोसर दिशमेँ सीमन्तिनीक दासीवर्गक ओछाओन छल। पर्दाक मध्यमेँ नव वर-वधू-युगलक अधःशय्याक विन्यास अनिर्वचनीय छल।

हमरा सबहि कहाँ धरि वर्णन करब। हँ, एतबा धरि अवश्य कहि सकब जे-

'स्थानस्यास्य विशेषवर्णन विधावेकः स शक्तो ध्रुवं,
यस्याषु भवेद् भुजङ्गपतिवद्विज्ञा रसज्ञावली ।'

ओहि कौतुकागार मध्य प्रतिदिन प्रथम प्रहरमेँ नाना उपचारसँ गौरीपूजा राजपुत्री सीमन्तिनी पतिसम्मिलिता भय करथि और मनहि मन ई वर माङथि जे-"हे गणेशजननि गौरि ! जहिना सदा-शिवक सन्निधिमेँ निवास-सुखानुभव अहाँ स्वयं कय रहलि छी तहिना एहू भक्ता दासीकेँ हिनक सन्निधिमेँ निवाससुखक अनुभव कराउ । अहाँ अन्तर्यामिनी जगज्जननी थिकहुँ । सबहिक हृदयगत भाव जनितहिँ छी । तखन पुनः पुनः प्रार्थना प्रलापमात्र होयत ।"

पुजान्तमेँ उपाँशु शब्देँ स्तुति कयलन्हि-

"कर्पूरधवल धवसह निवाससुखमनुभवन्ति ! शर्वाणि ! ।
करवाणि चरणवन्दनमभिमत लाभाय भक्ता ते ।।"

ओहि समयमेँ हुनक माय, सतमाय, पितिआइनि ओ जेठि बहिनि प्रभृति स्त्री-समुदाय सीमन्तिनीक सार्वदिक सौभाग्यार्थ गौरीक सन्निधिमेँ माङ्गलिक गान करय लगलीहि-

"चित्रस्थिता राजित देवतास्ताः प्रीत्याऽमोदन्त मुहुस्तमर्थम् ।।"

अर्थात् चित्रमेँ स्थित देवता सब वायुजनित (कम्प) व्याजेँ ताहि गीतार्थक अनुमोदन वारंवार करय लगलाह ।[27]

गीत ।

देइ ! पूजहु गौरी सहित कन्त ।
मिलिहहि सब अभिमत फल तुरन्त ।।
भोगहु युग दम्पति सुख अनन्त ।
जीवहु शत शारद ऋतु वसन्त ।।
मनबहिँ शुभ आशिष सकल सन्त ।
शुभ सिन्दुर तुअ शिर चिर लसन्त ।।
कहिओ बिछुरन नहि विधि लिखन्त ।
माङहु वर सब मिलि कवि भनन्त ।।

इत्यादि नाना प्रकारक गीत-गानक सङ्ग स्त्रीवर्गक परस्पर वार्त्तालाप तथा हास्य-विनोद भय रहल छल कि एहि मध्यहिमेँ एक अधवयसू नौड़ी

(सैरिन्ध्री) बाजि उठलि जे-" मालिकिनि सब ! जमायक माय, पितिआइनि केहनि छथिन्हि जे एखन पर्यन्त सगुनहुक गौरी-पूजाक भार नहि आयल अछि।"

से सुनि बड़ी महारानी अत्यन्त क्रोध कय खिसिआय लगलथिन्हि जे-"तोहरा सबहिकेँ यत्र-कुत्र स्थानमेँ जेना बाजैक अभ्यास छौक, तहिना हमरहु सबहिक घरमेँ आरम्भ कयलेँहेँ। राजधानीक ई व्यवस्था नहि छैक जे कोनो प्रकारक ओछ कथा बाजल जाय। भार अबितहिँ होयतन्हि। दूर देशक विषय छैक तेँ भरिआ सब एखन धरि नहि पहुचलाह अछि।" इत्यादि कोबराघरक नाना प्रकारक वार्तालापक अनन्तर यथासमय चोरपनिआँ तथा महुअक(मधुपर्क)क व्यवहार सम्पन्न भेलापर नवविवाहित कुमार चन्द्राङ्गद अपन मित्र वर्गक ओ श्याल(सार) वर्गक सङ्ग विश्राम-स्थानमेँ (जतय 'गद्दी मसनद' (मंसलन्द) पहिनहिसँ लागल रहन्हि) विश्राम (आराम) करय गेलाह।

तदुत्तर सन्ध्या समय भेलापर राजधानीक रीत्यानुसार एक बहुत भारी मोफिल (महफिल) लागल, जाहिमेँ आर्यावर्त्तेश्वर महाराज चित्रवर्मा तथा निषधेश्वर महाराज इन्द्रसेन एहि दूनू समधिकेँ परस्पर सम्मिलन भेल। तथा उभय पक्षसँ निमन्त्रित राजा-महाराज सब सभामेँ उपस्थित भय राजकीय रीत्यानुसार परस्पर सम्मिलित भय अपन-अपन आसन(गद्दी)पर बैसैत गेलाह। ओहि समय वन्दीगण महाराज लोकनिक स्तुतिरूप विरुदावली पढ़य लागल।

महाराज सबहिक उपवेशनोत्तर सब सरियाती-वरियाती यथा समुचित (Trase) [Trace ?] स्थानपर बैसैत गेलाह। किछु कालमेँ, सभा स्थिर भेलापर सब लोकके विचार भेलन्हि जे पहिने पण्डितक शास्त्रार्थ हो, तखन नाच-तमाशा इत्यादि।

ई कथा सुनितहि सरियाती दिशसँ एक नवीन ज्यौतिषी (जे काशीसँ पढ़ि कय आयले मात्र छलाह तथा गामक कातमेँ चौपाढ़िक घर बान्हि विद्यार्थी पढ़ाय रहल छलाह, जाहिमेँ पचीस वा तीस तँ सिद्धान्तिए छलाह, फलग्रन्थीक कथा कोन) बाजि उठलाह जे-"तावत् एक सामान्ये प्रश्न हम पुछैत छी तकर उत्तर करैत जाउ, तखन कोनो विशेष विषयक उपपत्ति पूछब।"

[प्रश्न] "एक सय एकक अङ्क कोन रूपेँ लिखैक चाही ?"

परन्तु वरिआतीमेँ संयोगवश क्यौ तादृश ज्यौतिषी हुनक 'जोड़ा' नहि आयल रहथि तेँ अगुतायकेँ एक ओहने नवीन वैयाकरण महाशय कहय लगलथिन्हि जे-"आहि ! ई प्रश्न कोन कठिन अछि जे अहाँ एतेक अस्तव्यस्त

होइत छी ? एहि हेतु बूढ़ा ज्यौतिषीजी लोकनि कथी लय बजताह ? हमहि उत्तर कहि दैत छी । एक सय लिखि ताहिपर एकक अङ्क लिखनहि 'एक सय एक'क अङ्क भय जायत, यथा १००१ ।"[28]

VIII. ई सुनि ज्यौतिषीजी कथी लय मानथिन्हि । चलल कुचेष्टवाहि ।

तावत् अन्यूनानतिरिक्त हुनकहि दुनू गोटाक सदृश एक नैयायिक (जे भुर्सी वा बिदाइ लेबाक हेतु आयल छलाह) सभामेँ उपस्थित भय गेलाह । ई देखि दूनू गोटै वादी-प्रतिवादी, उदासीन व्यक्ति जानि हुनकहि मध्यस्थ मानलन्हि । नैयायिकजी (जे अपन हस्ताक्षरमेँ 'नैयाइक' शब्दक व्यवहार करैत छलाह) कहलथिन्हि जे-"बाबू ! अहाँ लोकनि जोतखी, बैआकरण थिकहुँ तेँ युक्तिविरुद्धो बाजी तँ कोनो क्षति नहि । परन्तु हम तार्किक भय असंगत कथा कोना बाजब । तेँ हम अपन सिद्धान्त कहि दैत छी, एक सय लिखि, ताहि पर एक छेबा दय तदुत्तर एकक अङ्क लिखने एक सय एक होयत, यथा-१००/१ ।"

एहि त्रिवेणी (त्रितीर्थ)क सङ्गम भेलापर तँ और घोँघाउजि होबय लागल तथा 'दुर्जी ! दुर्जी !' शब्दक धारावृष्टि तेना होबय लागल जेना चैत्र-वैशाखमेँ दिनेक पाषाण-वृष्टि होइत अछि । यद्यपि वृद्ध विद्वान् सबहि हिनका लोकनिक वृथा वाक्कलहक निवृत्ति करैक बहुत यत्नो करथि तथापि ओ दुर्धर्ष पण्डित लोकनि कथी लय ककरो कथा सुनताह वा मानताह । तखन महाराज स्वयं कहलथिन्हि जे आब अपने लोकनि शास्त्रार्थ समाप्त करू । किछु प्राचीनहु लोकनिक मुखसँ शास्त्रार्थ श्रवणक इच्छा सबहि गोटाकेँ छन्हि । तदुत्तर व्याकरण, न्याय, सांख्य, मीमांसा, वेदान्त तथा ज्यौतिषमेँ प्राचीन विद्वान्क मुखसँ उत्तमोत्तम विचार सुनि राजा-महाराज तथा बबुआन सब अति प्रसन्न होइत भेलाह ।

तदुत्तर किच्छु संगीत विद्याक विनोद आरम्भ भेल । अर्थात् सबसँ पहिने वाद्यकार (बजबैया) सबहि वीणा(सितार), सरोद, इसराज, जलतरङ्ग इत्यादि वाद्य बजौलन्हि जाहिसँ तीव्र ओ कोमल स्वरमेँ गीत, जोड़, विलम्बपद आदि बजयबामेँ हस्तलाघव (हाथक सफाइ) देखाय सब सदस्यकेँ प्रसन्न कयलन्हि ओ अपनहु सब प्रशंसाभाजन भेलाह । तदुत्तर मार्दङ्गिक (मृदङ्गी-पखौजिया) ओ गायक (गबैया)क अवसर भेलन्हि । ओहो सबहि परम कठिन राग सबमेँ शिक्षा-नैपुण्य देखाय प्रशंसापात्र भेलाह । विशेषतः ताहि दूनूमेँ अन्यतरकेँ जतय बेताल होयबाक संभव होइन्हि, तकरा बचयबामेँ पर-परस्पर प्रशंसा ओ नम्रताक सूचक अभिवादन (यथा आइ-काल्हि 'आदाब' तस्लीमात्)क वर्षा होबय लागल जकर कारण कतिपय सङ्गीतज्ञ सदस्यकेँ छाड़ि अनका आश्चर्य बूझि पड़न्हि ।

तदुत्तर कत्थक लोकनिक अवसर भेलन्हि । ताहिमेँ अर्धवयस्क गुणी नटावा सब अपनहि सामला जामा पहिरि घुघरू बान्हि ठाढ़ भेलाह । जखन ओ लोकनि सम बान्हय लगलाह, तखन सब लोककेँ बूझि पड़न्हि जे आकाश-पाताल सम भय गेल । तदुत्तर गोटेक 'स. रि. ग. म' गाबि ठुमरी, गजल[29] आदि गायब आरम्भ कयलन्हि जाहिमेँ प्रत्येक पदक पचासो आवृत्तिमेँ अभिनवे-अभिनवे भाव सब बताबय लगलाह, जाहिसँ गुणज्ञ बूढ़ा सरदार सब तँ परम प्रसन्न होथि (स्ववर्गे परमा प्रीतिः) परन्तु नवयुवक लोकनि अकछाय गेलाह । केवल हुनका लोकनिक सङ्ग-सङ्ग गौनिहार जे बेटा वा भातिज रहन्हि से सभ जखन गोटेक तान लगाबय तखनटा नीक लगन्हि । किछु कालक उत्तर 'नाजिर'क हाथसँ पानक बीड़ा पाबि ओ सबहि बैसैत गेलाह ।

तखन वेश्या सबहिक पारी भेल । जाहि खन हुनका सबहिक सामाजिक (सफर्दा) बला[30] पर चोट देलक ओ सारङ्गी[31]मेँ कोमल स्वर 'छेड़लक' ओ गुरुजी (ओस्ताद साहेब) कांस्यताल (मजीरा) खटखटाबय लगलाह, तहिखनसँ पूर्वक अकछायल नबका 'इसखी' बाबू सब सगबगाय लगलाह । अनन्तर गन्धर्विणी नर्तकी सबहिक नृत्यारम्भ भेल । हुनका सबहिक स्वाभाविक हावभावाभिव्यञ्जक अभिनय तथा सस्मित गानसँ समस्त सभा क्षुब्ध ओ मुग्ध भै गेल । केवल महाराज चित्रवर्मा ओ महाराज इन्द्रसेन, ई दूनू समधि गम्भीर भावसँ बैसल रहथि । यद्यपि ओहि समय कतेको नवयुवकक मन उमड़ि उठन्हि जे 'वाह वाह'क वर्षा करी, तथापि ओहन नियमबद्ध राजगोष्ठी (जाप्ताक दरबार)मेँ ढिठाइ (बेअदबी) करैक साहस नहि भेलन्हि । तेँ चुप रहैत गेलाह ।

ओहि अवसरमेँ पार्श्ववर्त्ती वेश्याक गुरु (ओस्ताद) लोकनि तबालची सबकेँ ठेका बजयबामेँ जाहि ठाम स्खलित होबय लगन्हि, ताहि ठाम सावधान कय देथिन्हि तथा वेश्यहु सबहिकेँ जाहि ठाम 'बेताल'वा 'बेसुर' होयबाक संभव होइन्हि ताहि ठाम सम्हारने जाथिन्हि ।

तदुत्तर राजधानीक रीत्यानुसार उभय पक्षक वेश्या द्वारा उभय पक्षक समधिकेँ परस्पर बहुत साङ्केतिक[32] शब्दमेँ डहकनक गीत गाओल गेल । और किछु भाणक[33] नकल भेल ।[34]

तदनन्तर अर्धरात्र समयमेँ गुलाब, अतर, पान ओ मसालाक व्यवहार भेलापर सभा विसर्जित भेल । सब महाराज अपन-अपन शिविरमेँ विश्राम करय गेलाह ।

एही विषयक सूचनामे ँ ब्रहमोत्तरखण्डक श्लोक अछि–

"सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्वाह कर्मणि ।
यत्र सर्व महीपानां समवायो महानभूत ।।"

IX. एवं प्रकार निरन्तर उत्सव होइत चारिम दिन चतुर्थी कर्म सविधि सम्पन्न कयल गेल । ओहि दिन निषध राज्यक दिशसँ बहुत भार–दोर महाराज चित्रवर्माक ओहि ठाम आयल जकर वैन (वायन) सबहि सरदारक महलातमे ँ तथा पण्डित–ज्यौतिषी लोकनिक डेरा–डेरामे ँ देल गेल । ओहि दिन वरके ँ तथा समधि (सम्बन्धि) लोकनिके ँ सौजन्यक व्यवहार होयबालय छलन्हि ते ँ आध पहर दिनहिसँ उथल–पाथल होबय लागल । भानसघरमे ँ भक्ष्य, भोज्य, चर्व्य, चूष्य, लेह्य, पेय–ई छबो[35] प्रकारक वस्तु सब बनय लागल ओ सन्ध्या धरि सम्पन्न भय गेल । आङन–आङनसँ गाइनि (गायनी) लोकनि बजावलि गेलिहि । भोजनालयक असोरापर चीकक बाहर स्वच्छ आस्तरण(फर्श)पर महारानी सबहि बैसलिहि । ओहिसँ दोसर दिश सतरञ्जीपर ढोलक, मजीरा लय गाइनि लोकनि । भोजनस्थानमे ँ सार सबहिक संग आसनपर कुमार चन्द्राङ्गद भोजनार्थ बैसाओल गेलाह । सचार सब लगले छल, परन्तु वर तावत् हाथ वारनहि छलाह की गाइनि सब गीत उठौलन्हि ।

उछती[36]

सुनल बहुत गुनमान रे । (आरे) देखलहु भेल परमान रे ।।
तुअ सम जग नहि आन रे । हमरहु सैह अभिमान रे ।।
एम्हरहु राखथु ध्यान रे । अपनहि बड़ सज्ञान रे ।।
चान बसथि असमान रे । जल बिच कुमुदिनि थान रे ।।
तइयो दुहुक एक प्रान रे । प्रीति–रीति के जान रे ।।
कतेक कहब कवि भान रे । (आरे) सुपुरुष गुनक निधान रे ।। १ ।।

दोसर ।

तोहे प्रभु अति मतिमान रे । (आरे) हम अतिशय अज्ञान रे ।।
होयत बहुत अपमान रे । करिअ न हृदय मलान रे ।।
तुअ गुन कि करु बखान रे । अवगुन धरिअ न कान रे ।।
(आरे) बहुत सुयश कवि भान रे । हमहु चाहिअ सुख दान रे ।। २ ।।

जो(यो)ग[37]

कामरु देश हम गेलहुँ ।
(माइ) अपुरुब जोग सिखि ऐलहुँ ।।
(माइ) धिया लय जमैया लोभौलहुँ ।
(माइ) सकल मनोरथ पौलहुँ ।।
नाम हमर थीक भोगिनि ।
(माइ) हम छिअ अतिशय योगिनि ।।
हर-गौरी देल मोहि वर ।
(माइ) गुन बल मोहिअ सुरनर ।।

एवं प्रकार गीत समाप्त भेलापर भोजनहुक समाप्ति भेल । दोसर भोजनालयमेँ समधि लोकनि भोजन करैत रहथि । हुनकहु दुइ-चारि उछ्ती तथा सभ्यतापूर्वक साङ्केतिक डहकन गाइनि लोकनि सुनौलन्हि । तदुत्तर ओहो लोकनि भोजन समाप्त कयलन्हि ।

तत्पश्चात् निषध देशक भरिया सबहि खाए बैसलाह । तनिका लोकनिकेँ आर्यावर्त्तक राड़िनि (खवासिनी) सबहि अपनासँ लय सातो पुरुष-पुरुषाइनिकेँ स्पष्टे बीजाक्षर[38] सब सुनाबय लगलन्हि जकर हँसी सबहिकेँ लगैक । एहि रीतियेँ सबहि लोकक भोजनक विधि समाप्त भेल ।

तदुत्तर सुश्रसोढ़ [सुस्थ सोढ़ ?] नवोढ़ सुकुल महाराज कुमार चन्द्राङ्गद सुखशयनार्थ कोबर घर गेलाह । ओहि दिन भूमिशय्या निवृत्त भेल । एक उत्तमोत्तम चानीक पलङ्गपर नाना प्रकारक बहुमूल्य आस्तरण (अछौना) कयल गेल छल । नीचामेँ सम्पूर्ण 'फर्श' लागल छल । ताहिपर जरदोजी मखमलक गद्दी, मसनद, तकेया, गङ्ग-यमुनी अड़नीसँ सटल लगावल छल ।

[39]ओहि रमणीय कोठलीमेँ कतहु-कतहु सुगा, मैना, कोकिला, सारस आदि प्रियवाक् पक्षी सबहिक पिजरा लटकाओल छल । देवता, राजा, महाराजा तथा अति सुन्दरी रमणी सबहिक विचित्र-विचित्र चित्र (तसवीर) लोहक कीलमेँ रेसमी लाल, पीयर डोरीसँ बान्हल ओ टाङल छल । बीच-बीचमेँ नागदन्त अर्थात् हाथी दाँतक खुटी सबपर भालसरी, बेली, चमेली, जूही, नेवारि प्रभृति सुगन्धिपुष्पक माला राखल छल । ताखपर नाना प्रकारक पुष्पतैल (फुलेल) कुतुप (कुप्पी) सबहिमेँ, अतर शीशी सबमेँ, गुलाब बोतल सबमेँ धयल छल ।

आत्मरक्षार्थ एक कात देवालमेँ ढाल, तरुआरि, बर्छा, भाला, छुरा,

कटार प्रभृति हथियार सब विन्यासपूर्वक ओठङाओल छल । पलङ्गक समीपहि एक उत्तमोत्तम 'मेज' पर नाना पानपात्रमेँ सुवासित जल, शर्करोदक (शर्वत) तथा मादक ओ अमादक अर्क विन्याससँ राखल छल । चानीक पानदश्तमेँ सोनाक पनबट्टा भरि पानक खिल्ली सब भरल छल । दोसर थारमेँ सुपारी, लवङ्ग, अणाची, सोँफ, जायफर, जावित्री, दालचीनी, शीतलचीनी, केसरि, कस्तूरी, ताम्बूलक उपकरण (मशाला सब) धयल छल । एक बाटीमेँ सितामिश्रित छानल गोदुग्ध पात्रान्तरसँ झाँपल राखल छल । अपर भागमेँ अतरदान, गुलाबपाश तथा पीत वर्ण अकण्टक एक केवलाक फूल धयल छल । पलङ्गक नीचाँ पिकदान इत्यादि ।

एहि तरहक वर्णनातीत रम्य स्थानमेँ ओहि शुभ अवसरपर कुमार चन्द्राङ्गद पर्यङ्कपर पदार्पण-प्रसाद कय उपविष्ट भेलाह । ओहि ठाम झाड़, फानुस, लैम्प, लालटेन (Lanterns)प्रभृतिक तेहन प्रकाश छल जेहन दिनहुमेँ असम्भव ।

किञ्चित् कालान्तर दुइ-चारि आत्मीय समानवयस्का सखीसँ आनीता अतिलज्जिता परमधन्या राजकन्या सीमन्तिनी देवी (देई-दाई) देहरि लग आबि ठाढ़ि भय गेलिहि । पश्चात् राजस्थानसम्प्रदायानुसार कुमार चन्द्राङ्गद पलङ्गसँ उठि दश-पाँच डेग बढ़ि कय सीमन्तिनीक हाथ धय[40] स्वागतपूर्वक आनि हठ ओ आदरसँ शय्यापर बैसौलन्हि । ओहि समय राजकुमारकेँ रोमाञ्च[41] भय गेलन्हि ओ राजकुमारी सीमन्तिनीकेँ तेना प्रस्वेद (पसेना) भेलन्हि जेना विरहजन्य सन्ताप-निवृत्ति-पूर्वक हृदय शीतल भय गेलैन्हि ।[42] किञ्चित् काल स्तब्ध रहि कुमार चन्द्राङ्गद मन्द स्वरेँ सम्भाषण आरम्भ कय सीमन्तिनीकेँ विश्वास आ हास्य[43] उत्पन्न करबैत कृतकृत्य भेलाह ।



परिशिष्ट

सीमन्तिनी-आख्यायिका किस्तक प्रकाशन-विवरण एवं लेखकीय टिप्पणी

*[म.म.परमेश्वरझा द्वारा रचित **सीमन्तिनी-आख्यायिका** मिथिलामोदक विभिन्न उद्गारमे क्रमिक रूपमे छपैत रहल छल । लेखक मूलकथाक संग ठाम-ठाम आनुषंगिक सूचना-सन्दर्भ एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी प्रचुर संख्यामे देने छथि । अन्तिम प्रकरणमे मिथिलामोदक सम्पादकीय टिप्पणी सेहो देल गेल अछि । एहि ठाम रोमन अंकमे किस्तक क्रमांक दऽ 'सीमन्तिनी-आख्यायिका'क कतबा अंश मिथिलामोदक कोन उद्गारमे मुद्रित भेल छल तकर पूर्ण सूचना देल जा रहल अछि । एकरा संगहि मूल कृतिमे प्रदत्त समस्त टिप्पणीकेँ क्रमसंख्या-संकेत दऽ एकत्रैव एतऽ देल जा रहल अछि : **–सम्पादक**]*

I. मिथिलामोद, वर्ष-२, उद्गार-१७-१९, मार्ग-माघ-पूर्णिमा, सन १३१४ साल, शाके १८२८ (नव-दिस-जन. १९०६-७); मोदक पृष्ठ संख्या ३९२+८क पश्चात् पृष्ठ १-८ । शीर्षक 'सीमन्तिनी आख्यायिका' । आरम्भक विषय विवरणमे रचयिताक नाम प. परमेश्वरझा ।

1. साधारणाधिकरणमेँ वात्स्यायन ।

   आचार्यास्तु कन्यानां प्रवृत्तपुरुष संप्रयोगा सहसंप्रवृद्धा धात्रेयिका'-इत्यादि कामसूत्र ।

2. ई ६४ कला वात्स्यायनोक्त थीक । कमशास्त्रान्तरोक्त गौरव भयसँ नहि लिखल । जिज्ञासु जन कामसूत्रभाष्य देखथु ।

3. शरीरस्थाने सुश्रुतः

   ऊनषोडश वर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम् ।
   यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
   जातो वा न चिरं जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।
   तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥

II. 'सीमन्तिनी-आख्यायिका'क दोसर खेप मिथिलामोदक २०म सँ २४म धरिक कोनो उद्गारमे अग्रिम पृष्ठ ८ सँ १६ धरि प्रकाशित भेल होयत, जे अंक सभ सम्प्रति अनुपलब्ध अछि । दोसर खेपक ई अंश उपलब्ध ओ गृहीत कयल गेल अछि 'मैथिली गद्य-संग्रह, तृतीय भाग, सम्पादक-जयदेवमिश्र ओ सुरेन्द्रझा; मैथिली साहित्य-परिषद् (दरभंगा) द्वारा सङ्कलित, प्रकाशक-पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय और पटना, (पृष्ठ संख्या-२६-३७)सँ। संग्रहक सम्पादक लेखकीय टिप्पणीक परित्याग कऽ देने छथि तेँ दोसर खेपक मुद्रित अंशमे जे लेखकीय टिप्पणी रहल होयत से सर्वथा अनुपलब्ध अछि ।

III. **मिथिलामोद वर्ष-3, उद्गार-२५-२७, श्रावण-भाद्र-आश्विन, सन १३१५ साल, शाके १८२९ (जुलाइ-अगस्त-सितम्बर, १९०७);**
मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या ५६क पश्चात् पृष्ठसंख्या-१७-२४ ।

4. विदर्भ देशक राजधानी कृष्णा नदीक तटमेँ दक्षिणमेँ निजाम हैदराबादक राज्यान्तर्गत सम्प्रति "विदर" नामसँ प्रसिद्ध अछि ।

5. निषध देश विन्ध्य पर्वतक पृष्ठ भाग मध्य भारत (Central India)मेँ ग्वालियर राज्यक दक्षिण भाग मध्य सिन्धु नदीक तीरसँ वरार (वराट) पर्यन्त विस्तृत अछि । एहि प्रदेशमेँ नरवर नामक किला नल महाराजक बनाओल थिक । ई वृद्ध लोकक मुहँसँ सुनल अछि । ओ नलपुर नामक राजधानी छल । ओही प्रान्तमेँ सिप्री ओ गूना छावनी ग्वालियर स्टेटक अन्तर्गत अछि ।

6. असल केतकी वसन्त ऋतुअहिमेँ फुलाइत अछि, स्वर्ण वर्ण ओ सुगन्धिमे अनुपमा होइत अछि । एहि केतकीक वन मिथिलामेँ कमतौल सटेशनक समीप 'राढ़ी' गाम मध्य अछि । हम स्वयं ओहि गाम जायकेँ देखलेँ छी । वर्षा ऋतुमे जे केयोला फुलाइत अछि, से ओहिसँ बहुत न्यून सुगन्धिमेँ तथा वर्णमेँ ।

7. सम्बन्ध पदोपादानसँ संभावित पुनर्विवाह सूचित ।

8. आवश्यक स्थलमेँ ब्राह्मण द्वारा नाम-परिवर्त्तन करायकेँ विवाह कर्त्तव्य ।

9. प्रवर-साम्य संख्या ओ नाम, उभयसँ ग्राह्य थिक । यथा, वत्स सावर्णिमेँ और्वादि मुनि-साम्य छैन्ह ओ काश्यप शाण्डिल्यमेँ संख्या-साम्य अछि, परन्तु प्रवर-प्रवर्त्तक मुनि-नाममेँ साम्य नहि । तेँ समप्रवर प्रयुक्त निषेध नहि ।

IV. मिथिलामोद, वर्ष-3, उद्गार-३५ भाद्रपद, सन १३१७ साल, शाके १८३१ (सितम्बर, १९०९); मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या २२४-३० । गत २५-२७ उद्गारसँ आगाँ-

10. 'त्वं च अहंच' अर्थात् तोह एहन हम एहन, एतदर्थक वृथा वाक्कलह मिथिलाभाषामे ँ 'त्वंचाहंच' कहबैत अछि । ई शब्द संस्कृतानुकरण थीक ।

11. आइ-काल्हि राजा-महाराजके ँ तँ होबहि बूझ, परन्तु मामूली जमीन्दार सभके ँ कोनो जात-बरात भय जाउन्हि तँ अपन विभवसँ कतिगुण अधिक खर्च करैत छथि । जे वस्तु अपना नहि रहल, से ऋणो-पैँच कय लेबे करी वा शय-दुइ शय टाका देवान मोतशदीके ँ देलहु मङनी भेटय तँ अवश्य ली । हिनका लोकनि अपन जीवनमे ँ इयेह कर्त्तव्य ओ पौरुष मानैत छथि । धर्मार्थ, देशोपकारार्थ ओ शिक्षार्थ एको कैञ्चा खर्च वृथा बुझैत छथि । एक जमीन्दारक गाममे ँ एक बेरि नोत पुरय गेल रही । डेरा लग एक कीर्त्तनिया नटुआक विपटा ठाढ़ छल । दैवात्, ओही समयमे ँ एक जमीन्दारक ओहि ठामसँ विवाहक वरियाती जाइत छल । ताहिमे ँ एक गरिबहा जमीन्दार ककरो हाथी मङनी कय गद्दीपर झूलक स्थानापन्न शतरञ्जी अछओले ँ, ओहिपर सवार भेल चल जाइत छलाह । तखन विपटवा पुछलक जे-"पण्डितजी ! एहि बाबू साहेबके ँ ई अपन हाथी थिकैन्ह, की ककरो पोसिआ लेलन्हि अछि ?"

ओकर कथा आबहु स्मरण भेलासँ हँसी लगैत अछि । नीतिमे ँ लिखैत छथि जे-

> "अयमेव परो धर्म इयमेव परा मतिः ।
> इदमेव परं सत्यं यदायान्नाधिको व्ययः ।।"

12. कारीगर सभैक मेट ।

13. 'वारयात्रिक' एहि संस्कृत शब्दक अपभ्रंश 'वरियाती' शब्द थीक । एकर व्युत्पत्ति-वरस्य यात्रा वरयात्रा, सा प्रयोजनमेषां वारयात्रिकाः, सांयात्रिक शवट्ठञ् ।

14. 'वरायत्त' एहि संस्कृतक प्राकृत 'वरात' शब्द थीक । वरक आयत्त अर्थात् अधीन । एहिना 'श्यालायत्त'क अपभ्रंश 'सरियात' ।

15. 'अम्बारि'क संस्कृत 'वरूथ' शब्द थीक । रुद्राध्याय 'नमो विल्मिने च' ३५, एहि मन्त्रक भाष्य देखू ।

16. यद्यपि जलूस (Procession)निकलबाक रीति राजधानी सभमेँ भिन्न-भिन्न अछि परन्तु एहि ठाम अवान्तर भेदक अविवक्षा कय स्वतन्त्र रीतिसँ लिखल अछि। एहि दिनमेँ लाट कर्जन साहेबक सवारीक विन्यास डिल्ली-दरबार (Coronation)मेँ नीक भेल छल। तथा संवत् १९६४क माघमेँ श्री५मान् महाराज हथुआक विवाह मधुवन जिला चम्पारणमेँ भेल छलैन्ह, ताहूमेँ वरियातीक विन्यास नीक छल। लेफ्टिनैंट गवर्नर बंगाल ओ श्री५मान महाराज बहादुर दरभंगा ओहिमेँ शामिल छलाह।

[ई टिप्पणी लेखकक नहि प्रत्युत् मिथिलामोदक (स.टी.) थिक]

V. मिथिलामोद, वर्ष-3, उद्गार-३६, आश्विन, सन् १३१७ साल, शाके १८३१ (अक्टूबर, १९०९), मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-२५१-६० । गतोद्गारसँ आगाँ-

17. जेना आइ-काल्हि कहार-वेगार सभ अल्हा, लोरिक, दयालसिंह, सूठीकुमरि, नैका प्रभृतिक गीत गबैत अछि।

VI. मिथिलामोद, वर्ष-५, उद्गार-५९, भाद्र, सन् १३१९ साल, शाके १८३३ (अगस्त, १९११), मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१९-२२ । सीमन्तिनी आख्यायिका (प. श्रीपरमेश्वरझा वै. के. कृत) पूर्वप्रकाशित ३६म उद्गारान्तर-

18. शालिहोत्रमुनि प्रणीत अश्वविद्या-ज्ञाता।

19. सप्तधा स्रावक स्थान पालकाप्य ग्रन्थमेँ-'करात् कटाभ्यां मेढ्राच्च नेत्राभ्यांच मदस्रुतिः'

कर अर्थात् नासिका-रन्ध्र-द्वय, तेँ सात संख्याक पूर्ति भेल। प्रायः छतिमनक फूलक गन्ध लगने हाथीकेँ मदस्रव होइ छैक। आओरो हाथिक विषय जनिका जानबाक होइन्हि से उक्त ग्रन्थ अर्थात् पालकाप्यमुनि प्रणीत हस्त्यायुर्वेद देखथि।

20. गम्भीरवेदी गजक लक्षण **राजपुत्रीयमेँ**-

'त्वग् भेदाच्छोणित स्रावान्मांसस्य च्यवनादपि।
आत्मानं यो न जानाति तस्य गम्भीरवेदिता ॥'

तथा **मृगचर्मीयमेँ**-

चिरकालेन यो वेत्ति शिक्षां परिचितामपि।
गम्भीरवेदी विज्ञेयः स गजो गजवेदिभिः ॥'

21. 'अश्ववार' एहि संस्कृत शब्दक अपभ्रंश 'असवार' वा 'सवार' शब्द थीक। हाथी वा ऊँटक चढ़निहारमेँ सवार शब्दक पयोग गौण थीक, यथा 'सजमनिक भटबड़'; एहि ठाम भटबड़ शब्द।

22. एहि हल्लाक यथार्थ अनुभव ओहि व्यक्तिकेँ छैन्ह जनिका चारि-पाँच वर्षक भीतरमे ँ 'सौराठ सभा' जयबाक सौभाग्य भेल होयतैन्ह। अर्थात् थोड़ेक दिनसँ उक्त सभामे ँ ई चालि भेल अछि जे गाछीक पच्छिम-उत्तर कोन दिश केओ लंठ एक बेरि थपड़ी पाड़ि देलक वा दौड़िये चलल; बस संपूर्ण गाछीमे ँ हुल्लड़ भय पड़ायन लगैत अछि। कतेक लोकक पाग, दोपट्टा, छड़ी, छत्ता, जुत्ता हेड़ाइत अछि तकर ठेकान नहि। मगहिया वर लोकनि ओही दिश कात दबिकेँ बैसै जाइत छथि, तनिक तँ किछु रुपैयो-पैसा गोलमाल होयबाक संभव। वास्तवमे ँ एहि फसादक जड़ि एही अन्यदेशी सभक रुपैया गनबकेँ बूझैक चाही। पहिलेँ एना कहियो नहि होइत छल। जाही दिनसँ एहि लोक सभक विशेष प्रवेश, ताही दिनसँ सभ दृश्य देखलाँ जाइछ।

एहि वर्ष तँ आओरो विलक्षण तमाशा, अर्थात् सन् १३१८ साल गत आषाढ़ सभामे ँ एक दिन कतहु दुइटा छंठा घोड़ाकेँ लड़ाइ भेलैक। ताहिलय जे पड़ायन लागल, तकर कतेक वर्णन लिखू। ककरो कान-कपार फूटल, कतेक इशखी लोकनि दछिनवारी पोखरिक भीँड़पर पीपरक सीरपर बैसल रहथि से ओढनाय-ओढनायकेँ चितङ भटका खसलाह। कतेको कालमे ँ हुल्लड़ निवृत भेल। उत्तर बुझी तँ किछु नहिँ। बुढ़ियाक फूसि। हा ईश्वर ! कहिया धरि हमरा मैथिलकेँ स्थिरता ओ धीरता देब। हमरा लिखबामे ँ लज्जा होइत अछि जे कतेको लालबुझक्कड़ लोकनि तँ एहि दुर्व्यवसाय सभकेँ मैथिलक उन्नति ओ कीर्तिपताका मानैत छथि। धन्य विवेक !

[*ई टिप्पणी लेखकक नहि, मिथिलामोदक (सं.टी.) थिक। कारण पूर्ववर्त्ती किस्त (V) भाद्र १३१७सालमे छपल। ओकर अन्तिम वाक्य अपूर्ण अछि। ओकर क्रिया 'भेल।' सँ एहि किस्त (VI)क आरम्भ होइछ।* **–सम्पादक**]

23. संस्कृत 'जन्यवास' शब्दक अपभ्रंश जनवासा थीक, 'जन्यानां वासो जनवासः'। जन्य जे वरियाती, तनिक डेरा। 'जन्याः स्निग्धाः वरस्य ये', ई अमरमे ँ लिखैत छथि। गोसाञिजी 'भाषा रामायण' बालकाण्डमे ँ एहि शब्दक प्रयोग कयलेँ छथि-

चले जहाँ दशरथ जनवासे ।
मनहु सरोवर तके पियासे ।।

24. पाठक वर्गकेँ सावधान रहैक चाही जे यदि ककरहु आइ-काल्हिक राजा, महाराज वा पैघ जमीन्दारक वरियातीमेँ जयबाक अवसर होइन्हि तँ एक-दुइ साँझक योग्य सीधा-संमर अपन संग लेने जाथि । कारण जे हिनका लोकनिमेँ जे पाँच सय वरियात लय जाइत छथि से पाँच हजारक फिरिस्त दैत छथीन्ह । थोड़ लोकक नाम लिखयबामेँ अप्रतिष्ठा मानैत छथि । परन्तु कन्याप्रदकेँ ओतेक रसद देबाक विचार नहि, तेँ खटपट होइ छैन्ह । ताहिमेँ यदि दैवात् मिलान भय गेल तखन तँ पौ-बारह । संगमे गाड़ी छकड़ा रहय तँ लादिकेँ किच्छु घरहु लाबी । और यदि से नहि तखन ककरहु भूखेँ पेटमेँ बगहाओ लगैन्ह वा छटपटायकेँ मरियो जाथि, तँ घूरिकेँ केओ तकैन्ह नहि । अधिक ठाम इयेह संभव ।

25. गृह्यसंग्रहमेँ अग्निक नाम सभ छैन्ह-'विवाहे योजकः स्मृतः' । अर्थात् स्त्री-पुरुषक योग करौनिहार ।

VII. मिथिलामोद, वर्ष-१३, उद्गार-१४९, फाल्गुन, सन् १३२६ साल, शाके १८४०, (फरवरी १९१९) मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१३-१६ । म.म.श्री परमेश्वरझा वै. के. क प्रेषित सीमन्तिनी आख्यायिका, पूर्वप्रकाशित ५१ उद्गारानन्तर-

26. गुरुदासपुर, पञ्जाबमेँ एक स्थान अछि जतयक माटिक वस्तु बहुत उत्तम होइत छैक ।

27. जे आन व्यक्तिकेँ श्रवणगोचर नहि हो ।

28. हम ई लेख पाठक वर्गक हास्यार्थ वा विनोदार्थ नहि लिखल अछि । किन्तु यथार्थमेँ एखनहु धरि कतेक प्राचीन पण्डितजी लोकनिक हस्तलिखित महाभारत, हरिवंशादि पोथी देखू तँ १०१क स्थानमेँ १००१ अङ्क लिखल भेटत । पाठक वर्गसँ निवेदन जे नेना सबकेँ अक्षरारम्भोत्तर सिधाइ कखहराक सङ्ग-सङ्ग एकाइ-दोनाइयो पढ़ाबथि ओ लिखाबथि । कतेको लोक बुझैत छथि जे हम अपन बालककेँ व्याकरण वा न्याय पढ़ायब तखन अङ्क-विद्याक प्रयोजने की ? परन्तु जानैक थिक जे कोनो व्यावहारिक विषय पड़ने एहने कोलाहलक संभव । यदि ककरहुसँ पैँच लेथि और 'इन्दुलतलब' चिट्ठीमेँ १००१ पर हस्ताक्षर करथि तथा महाजनोँ महाशय नीक धर्मात्मा 'जमीन्दार' रहथि तँ एकहि बेरिक पैँच एक-सय एकक स्थानमेँ एक-हजार-एक कयने सर्वस्वान्तहिक संभव ।

VIII. मिथिलामोद, वर्ष-१३, उद्गार-१५०-५१, चैत-वैशाख, सन् १३२६ साल, शाके १८४०, (मार्च-अप्रैल, १९१९), मिथिलामोदक पृष्ठसंख्या-५-८ । सीमन्तिनी आख्यायिका गतोद्गारसँ आगाँ-

29. मिथिलामोदक टिप्पणीः-'सं. टि.-प्रिय पाठक गण ! सीमन्तिनीक समयमे ँ गजलक प्रचार छल वा नहि, किन्तु कथाक रोचकतासँ आनो कैकटा एहन भेटत से क्षन्तव्य ।'

30. संस्कृतमे ँ तबलाक नाम पुष्कर थिक, यथा-रघुवंश, अग्निवर्णशृङ्गार २१ सर्गमे ँ श्लोक-

 'स स्वयं प्रहत पुष्करः कृती लोलमाल्यवलयोऽहरन्मनः ।
 नर्त्तकीरभिनयातिलङ्घिनीः पार्श्ववर्त्तिषु गुरुष्वलज्जयत् ।। १ ।।'

31. सारङ्गी संस्कृत नाम थिक । परन्तु केओ-केओ स्वराङ्गी कहैत छथि ।

32. पाठक वर्गकमे ँसँ यदि ककरहु एहि 'चालिक' 'मोफिल'मे ँ बैसैक अवसर भेल होयतन्हि तँ जनैत होयताह जे आइ-काल्हि 'बड़ा आदमी' लोकनिक दरबारमे ँ कोन 'तरह'क अपभ्रंश ओ 'अश्लील' गारि गाओल जाइत अछि । गारि तँ ओकर नाममात्र थिकैक अर्थ सङ्गिताम, ताहूमे ँ बीजाक्षरे । यथा-

 'समधी..........ई तुमने
 मिठाई खाई हमने' इत्यादि ।

 चमत्कार तँ ई जे यदि अन्यतर समधिक दिशि वेश्या नहि रहैन्हि ओ कत्थकक द्वारा गारि गबाबथु तँ तरुवारि चलि जयबाक संभव । कारण जे दोसर समधि कहैत छथिन्हि जे- "हमको मर्द से बेइज्जत करबाया" ओ वेह शब्द सब यदि रण्डीक मुहसँ बहराय तँ 'मुबारक' । ई कुरीति सर्वथा त्याज्य ।

33. भाणक प्रचार पूर्वहु कालमे ँ छल । परन्तु साम्प्रतिक लखनौ प्रान्तक रीतिसँ बहुत भिन्न रीति छल जकर प्रमाणभूत दशरूपान्तर्गत भाणक ग्रन्थ संस्कृतमे ँ अनेक अछि । ओकर अनुकरण आइ-काल्हिक 'नक्काल'सब करैत छथि ।

34. मिथिलामोदक टिप्पणीः- 'सं. टि.- ई विषय सब जेहन दँतनिपोड़ीमे ँ भेटत ओहन वीभत्स अन्य कोनहुमे ँ प्रायः नहि ।'

IX. मिथिलामोद, वर्ष-१६ उद्गार-१८०-८३, अगहन-फागुन, सन् १३३० साल, शाके १८४४, (नवम्बर-फरवरी, १९२२-२३); मिथिलामोदक पृष्ठ संख्या-१२-१६ । सीमन्तिनी आख्यायिका (१५०-१५१ उद्गारानन्तर), ले.

म.म. पं.श्रीपरमेश्वरझा ।

35. वैद्यक भावप्रकाशमेँ –

आहारं षड्विधं चूष्यं पेयं लेह्यं तथैव च ।
भोज्यं भक्ष्यं तथा चर्व्यं गुरु वि.... अथोत्तरम् ॥

चूष्य–कुसिआर, दाडिम आदि । पेय–शर्वत आदि । लेह्य–चटनी । भोज्य–भात, दालि आदि । भक्ष्य–लड्डु, मुङ्गबा आदि । चर्व्य–चूड़ा बूट आदि ।

36. ई शब्द 'औचिती' वा 'उचिती 'शब्दक अपभ्रंश थिक अर्थात् विनती करबाक समयमेँ उचित वाक्य । भोजनक समयमेँ विना गीतक 'उछती' पुरुषहु सबहिकेँ परस्पर होइत छन्हि ।

37. 'जोग' जकरा लोक योग–टोन कहैत छथि । मिथिलाक स्त्रीवर्गमेँ जमाइक वशीकरणार्थ ई गीत गाओल जाइत अछि ।

38. पाठक वर्गमेँ यदि क्यो विवाहादि अवसरमेँ मारवाड़ देशक स्त्री वर्गक 'सीठन' गान सुनने होयताह तनिका एहि डहकनक अनुभव होयतन्हि ।

39. सुरतगृहवर्णन कलाविलासमेँ –

रम्य पक्षिरवानन्दं नवचित्र कुलाकुलम् ।
स्रक्ताम्बूलार्द्धशयनं गृहं सुरत सुन्दरम् ॥

40. राजस्थानमेँ अद्यापि अछि जे समान राजा–महाराजक कन्यासँ मिलन समयमे राजा–महाराज सबहि किञ्चित् आगाँ बढ़ि कय स्वागत करैत छथि, जाहि स्वागत वा (Reception)के 'पेशवार' कहैत छथि ।

41. कामसूत्रमे वात्स्यायन–"कन्या तु प्रथम समागमे स्विन्नाङ्गुलिः खिन्नमुखी भवति, पुरुषस्तु रोमाञ्चितो भवतीति" ।

ई सात्त्विक भाव थिक ।

"स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः ।
वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विका स्मृताः ॥"

42 मिथिलादेश व्यवहारानुसारि- कौतुकागार (कोबरघर)क समाचार-वर्णन महाकवि कालिदास कुमारसम्भव काव्यक सप्तम सर्गान्तमे कैने छथि-

"अथ विबुधगणांस्तामिन्दु मौलिर्विसृज्य क्षितिधरपतिकन्यामाददानः करेण ।

कनककलशयुक्तं भक्ति शोभासनाथं
क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात् ॥ १ ॥

नवपरिणयलज्जाभूषणां तत्र गौरीं
वदनमपहरन्तीं तत्कृतोत्क्षेपमीशः ।
अपि शयनसखीभ्यो दत्तवाचं कथंचित्
प्रमथमुखविकारैर्हासयामास गूढम् ॥ २ ॥

43. कामशास्त्रमेँ-

अथ परिणय रात्रौ प्रक्रमेनैव किञ्चित्
तिसृषु हि रजनीषु स्तब्धता तां दुनोति ।
त्रिदिनमिह न भिन्द्याद् ब्रह्मचर्यं न चास्या
हृदयमननुरुध्य स्वेच्छया नर्म कुर्यात् ॥ १ ॥ (i)

कन्यासम्प्रयुक्तकाधिकरणमेँ कामसूत्रकर्त्ता वात्स्यायन लिखैत छथि-

सवर्णायामनन्य पूर्वायां शास्त्रतोऽधिगतायां धर्मोऽर्थः

पुत्राः सम्बन्धः पक्षवृद्धिरनुपस्कृता रतिश्च ॥ १ ॥ (ii)

तस्मिन्नेतां निशि विजने मृदुभिरुपक्रमेत ॥ २ ॥ (iii)

कुसुम-सधर्माणो हि योषितः
सुकुमारोपक्रमाः तास्त्वनधिगत-विश्वासैः
प्रसभमुपक्रम्यमाणाः सम्प्रयोगद्वेषिण्यो भवन्ति ।
तस्मात्साम्नैवोपचरेत् ॥ ३ ॥ (iv)

कामभाष्यमेँ लिखैत छथि जे हठात् रहस्य कार्यमेँ प्रवृत्त भेलासँ प्रथमसङ्गता स्त्रीकैँ विद्वेषजकाँ उत्पन्न भै जाइत छैक, बहुत दिन पर्यन्त, ककरहु-ककरहु आजन्म ओहि पुरुषसँ रहि जाइत छैक जाहि विद्वेषकेँ मिथिलामेँ स्त्रीवर्ग (प्रभाछय (प्रभाक्षय) अथवा झरकबाहि) कहैत छथि । कामशास्त्रमेँ गोनर्द लिखैत छथि-

हासेन मधुना नर्म वचसा लज्जितां प्रियाम् ।
विलुप्तलज्जां कुर्वीत निपुणैश्च सखीजनैः ॥ इत्यादि ।

टिप्पणी संख्या 43मे प्रदत्त उद्धरणक स्रोत ओ अर्थः-

(i) 'रतिरहस्य' ग्रन्थमे कोकाचार्यक मतक रूपमे ई श्लोक उद्धृत-

'नायकके चाही जे विवाहक पहिल रातिमे कन्याकेँ किछु नहि कहथि। नियमानुसार तीन राति ब्रह्मचर्य तँ रखबे करथि, मुदा हुनक स्तब्धता (चुप रहब) ओहि कन्याकेँ कष्ट पहुँचबैत छैक आ ओ हुनका गमार वा नपुंसक बुझि सकैछ तेँ दोसर रातिसँ ओकरासँ हास-परिहास करथि।'

(ii) कामसूत्रक 'कन्या सम्प्रयुक्तकाधिकरण' नामक तृतीय अधिकरणक पहिल अध्यायक ई पहिल सूत्र थिक–

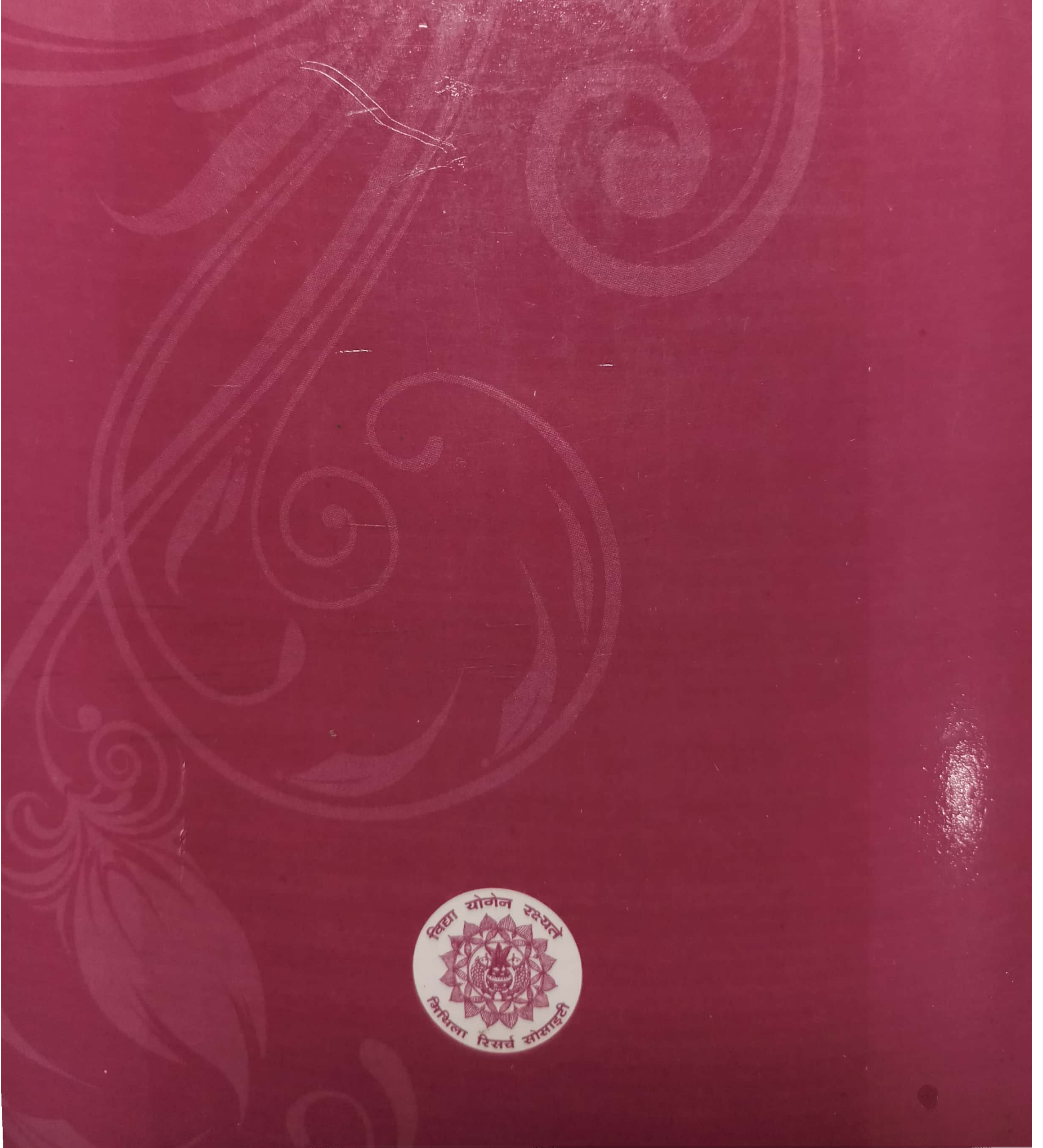
'एहन सवर्ण स्त्री जे पूर्वमे अनकासँ उपभुक्त नहि हो, तकरा शास्त्रानुसार ग्रहण कयलासँ धर्म, अर्थ, पुत्र, सम्बन्ध कुलक वृद्धि एवं निर्दुष्ट सुख होइत छैक।

(iii) कामसूत्रक तृतीय अधिकरणक दोसर अध्यायक पहिल सूत्र थिक (पूर्व सूत्र निर्दिष्ट विवाहक बाद संयमक समय बितलापर) मंगल 'स्नानादि सम्पन्न भऽ गेलापर ओहि कन्याकेँ वर रातिमे एकान्तमे कोमल वाणी एवं वस्तु सबसँ सत्कार करय।'

(iv) कामसूत्रक तृतीय अधिकरण, द्वितीय अध्यायक छठम सूत्र थिक– 'नारी तँ फूल सन स्वभाववाली होइत छथि, कोमल व्यवहारवाली ओ लोकनि बिनु विश्वास करौनहि हठात् अपनहुँ वर द्वारा समागम कयलापर समागमहिक विद्वेषिणी भऽ जाइत छथि तेँ सान्त्वनापूर्वके हुनक समागम करबाक चाही।'

एही सूत्रक भाष्यमे एहि टिप्पणीक श्लोक लिखल गेल अछि। आख्यायिकाकार सेहो 43 संख्यक टिप्पणीक अन्तमे ओकरहि व्याख्या कयलनि अछि।

●


विद्या योगेन रक्ष्यते
मिथिला रिसर्च सोसाइटी